

Shri Raghunath Temple MSS. Library,
JAMMU

No. 2038

Title धर्मसिद्धे रामायणे निर्वाण प्रकरण
हिन्दी भाषायां

Author *

Extent 26 Age *

Subject महाभारत रामायण

महा
वासिष्ठे, रामायणे निर्वाणप्रकरणं
हिन्दीभाषाटीका सहितम्

२०३४

२०३५

F. 27
complete

232

निर्वाण
भाषा

श्रीगणेशायनमः श्रीमङ्गरूपदाम्भोजदन्धमानन्दमन्दिरम् वन्दे सन्देहसंदोहधुंसे
दन्धभ्रमापदम् १ यन्निर्वाणप्रकरणं तद्भाषामात्रुषीमया गोपालरामकविनाक्रि
यते पुरमण्डले २ श्रीमङ्गलाबसिंहस्य भूपालस्य महासुदे देवभाषाऽनभिज्ञानां सुशु
द्धरणहिताय च ३ श्रीवाल्मीकिरुवाच उपशमप्रकरणद्वयेन नृमिदं पृष्टं त्वं
निर्वाणप्रकरणं तातं निर्वाणदायिवत् १ वाल्मीकिमुनिकहते भूप हे भरद्वाज उ
पशमप्रकरणके उपरंते अबतुमं निर्वाणप्रकरण एव स एव जो ज्ञात्वा ऊवा निर्वाण
पदकों अवश्य देता है १ कथयत्येवमुद्दामवचने मुनिनायके अवरोकरसे मोन
स्थिते राजकुमारके २ हे भरद्वाज श्रीवसिष्ठमुनीश्वर उपशमप्रकरणके अंतके वच
न कहते होय राजकुमार श्रीरामजी अवणके रसविले मोन कर स्थित होत संते भेषी प
ट्ट शंखोंका शब्द होता भया एह सौलमे श्लोक विले कहेगा इसके साथ इस श्लोक का
संबंध है तैसे आगे कहने जो चौदा श्लोक तीनोंका संबंध भी इसीके साथ जानना २
मुनिवागर्थनिहित मनस्यऽस्ततः क्रिये राजलोके गतस्य न्दे चित्रार्पित इव स्थिते ३ ।
वसिष्ठमुनीके वचनोंके अर्थ विले स्थापित किया है मुन जिसने त्यागि आ है तप अरु श
रीरक्रिया जिसने तप करि मन करके बाह्य पदार्थोंका देखिनी ऐसा राजलोक होत संते मा
नो निश्चल चित्रत्वि एव स्थित है ३ वसिष्ठवचनार्थविचार्यतिसादरम् तसदङ्गुलि
भङ्गेन मुनिसार्थस्फुरद्गुवि ४ मुनिगण जो है सो श्रीवसिष्ठवचनोंके अर्थकों आदरस

केवल
भाषोंके बाजे-

तपण

हित विचार करे होत संते अंतर के यथार्थ निश्चयकों तर्जनी अंगुली के चेष्टा विलास कर तथा
 धुवों के स्फुरण कर बाहर प्रकट करे होत संते ४ विस्मयालोक नालास जो कल नयना
 लिलि पुरा निर्वर्गे गम्भीर तरु मञ्जरि तंगते ५ पतिव्रता स्त्री गण जो है सो परम आश्चर्य रूप
 अंतरात्मा के दर्शना नंद कर प्रपुल्लित नेत्र रूप भ्रमों कर युक्त होत संते जैसे प्रघरस के आका
 दन के आनंद कर निश्चल निःशब्द भ्रमों कर युक्त वृक्ष की पुष्प मंजरी होवे जैसे शोभाकों प्रा
 पत होते संते स्त्री गण ५ ऐवा सरचतर्भा गदेशे दिन करे स्थिते किंचि ज्ञानोदयात्सोम्ये किं
 चिच्छुभसुपेयुषि ६ दिन का प्रहर मात्र शेष रहता है जिस ठौर जिस ठौर आकाश विहें मा
 नो कथा अवल निमित्त सूर्य स्थित होत संते इस कारण ते किंचित ज्ञान के उदय में सो स्पष्ट वा
 दृष्टि प्रिय ऊवा किंचित संताप शांती को प्रापत होत ६ अवलोक्ये वसंशाने विज्ञान स्पन्दमालि
 ते मोने मरुति मन्दार मधुरा मोददायिनि ७ पवन भीमानो मोन कर अवल निमित्त भली प्र
 कारणां होत संते के सा है पवन पुष्पां का जो है चंड आ जिस के दिलने कर मानो माला धा
 री है मंदार पुष्पां की मधुर सुगंध दाई हो ८ पुष्प दामस्तु सप्तास महा भ्रमर पङ्क्ति ९
 ज्ञात ज्ञेय तयानूनं सम्पद्या नवती धिव ९ पुष्प मालों विहें महा भ्रमर पंगति आं स
 पत होत संते मानों आत्म तत्त्व के अनुभव कर निश्चय कर दृढ ध्यान वती आं होइ आं ९
 मुक्ता जाल कला पो नर्गता स्व नर भूमि १० कचत्प पगत स्पन्द तोये श्रोतु मिवा स्थिते १० ब
 द्धत मोती लगे होए हैं जिनों विहें ऐसे जो जाला कार भूषण रूप चाँई के चारों ओर आ
 कादन वस्त्र हैं तिन हों के मध्य विहें जो चाँई का स्थान जिस विहें अवल निमित्त जल स्थि
 त ऊआ मानो वडी इच्छा कर निश्चल मुक्ता दिकों कि आं प्रभां करके चमकते होत संते ११

संते

वाउठिये =

निस्पंद कहिये

शोभा = ३

निर्वाण
भाषा

२

✓ तेज-

गृहान्तरेप्रविष्टेषु गवाक्षेद्वयमंशुषु विश्रामार्थमिवादीर्घं नमः पान्थेषु शीतलम् १० सूर्य
किरणं चिरकालं दूरं आकाशमार्गवित्त्वं जाइकरं यके होए ऊरोखें के मार्गकर विश्राम ।
निमित्त मानो शीतलप्रवणशाला मध्य प्रवेश किए होत संते १० मुक्ताजालप्रभाजाल
भस्मनोद्धूलितात्मनि शंसतीवशमंशाम्पदिनदेहेदिवातपे ११ शांतलगाजोहैदिन तिस होवने
का देह रूप जोहै धुप तिसने सभा विखें मोतीजालकों के जोहै प्रभाजाल रूप भस्म सोधा
रीहै आप विखें तिसकर मानो शांतिका सूचन करतीहै ११ करे लीलासरोजेषु शिखरेषु
चभ्रभृताम् श्रुतासरसमामोदादवृत्तिश्चिवमनःस्तिव १२ राजांके हाथों विखें तथा सिरों ।
विखें स्थित जोहै न लीलाकमल सो मधुररसवाला श्रीवसिष्ठा उपदेश सुलकर आनंदके
प्रकटता तें मानो बाहर विकास वृत्तीतें रहित होए जैसे राजांके मन बाहर वृत्तीतें रहित हो
एतेंसे १२ बालकेषुः जलोकेषु लीलापतिषु सादरम् भोजनार्थं वधूलोकं सुषुप्तं न्यत्सुः नार
तम् १३ बालक तथा अज्ञानी लोक तथा पंजरों विखें स्थित शुक आदिक लीला पती प
ह सिताबी भोजनार्थ स्त्रीजनकों आदर करके बारंबार प्रेरण करते होए १३ भ्रमद्रुमरपटो
त्यवातधूतरजस्पलम् कौमुदेपरिविष्टाने चामरेषु तिपल्लवसु १४ किंचित् फल्ले जो नाये ।
तिनकी रज भ्रमते भ्रमोंके परो के पवनते उडंकर चामरों विखे तथा नेत्रोंके रोमों विखें
विश्राम करतीहोई १४ रश्मिषुः गगनोन्मुक्त छायाजालभयादिव गवाक्षादिष्वेव प्रवि
ष्टेषु गृहान्तरम् १५ परवर्तों की शफातें कुटेजो छाया समूह रूप अंधकार तिसके भयोंतें भा
जकर ऊरोखादि मार्ग करके छपने निमित्त सूर्यकिरणं वरके मध्य प्रवेश करते होत सं
ते १५ आसीदिनचतर्भागसत्तावेदनतत्परः भेरीपट्टदशह्वानां दिशुत्वा सरकोधनिः १६

दिनका चतुर्थ प्रहर शेष है पद जनाउते विखें तात्पर्य जिसका ऐसा शब्द मेरी पट्ट शंखों का
 हुआ दिशों के मुखों को पूरण करण वाला शब्द हुआ १६ तेन तत्तारमव्याप्तु वचोन्नथानमाय
 यो भौनं जलदनादनं मायुर इव निस्वनः १७ तिस शब्द कर वसिष्ठ मुनी का अति ऊँचा भी वच
 न छप गया है जैसे मेघ शब्द कर मोर का शब्द छप जावे १८ आलव्यालव्यापतालिः पञ्जरस्था
 एगावली भूकम्पेतरसां ताली पल्लवेव वनावली १९ पंजरां दिखें पतिंगों की पंगति पंखों के
 संचलित होई तिनों की पंखों की पंगत बद्धत चलित होई जैसे भूकंप कर वन पंगति कंपित होवे वन
 कंप कर ताली वृक्ष के पत्र बद्धत कंपित होवें २० आययुर्भयवित्रस्ता बालाधात्री ऊँचा नरम् सार
 वं प्रावृषी वाह्याः प्रान्नतेष्टु कोटम् २१ शब्द के भयकर कंपित होए बालक कदमों के होए दाइयों २२
 के लुनों के मध्य विखें प्रापत होते भए जैसे वर्षा करत विखें मेल शब्द करत होए ऊँचे दों अंगों के म
 ध्य विखें प्रापत होवें २३ उन्नस्युरवतं सेभ्यो भूभृतां भ्रमरस्रजः इषत्करालवाहाभ्यः सरिद्रो मुखकणा
 इव २४ राजों के सिरों विखें जो कमल भूषण हैं तिनों के भ्रमर माला उठि अंग होइ अंग जैसे स्व
 ल्य लोभवाला है प्रवाद तिनका तिनहीं नदीयों ते जलकण उठें २५ एवं प्रलभिते तस्मिन् नर
 हे दाशरथे तदा प्राप्ते वासरवृद्धते शान्ते शब्द स्वने शानेः २६ संहस्तस्त्वतं वस्तु वचोमधुरवृत्तिम
 त उवाच मुनि शार्दूलः सभा मध्यो रत्न हृदम् २७ इस प्रकार दशरथ का सभा में दिर लोभकों प्राप
 त होत संते चतुर्थ प्रहर रूप जो है वृद्ध दशा तिसकों दिन प्राप्ता होत संते शंखादिकों का शब्द ।
 शानेः शानेः शान्त होत संते २८ मुनि शार्दूल श्री वसिष्ठ कहना योग्य जो है अर्थ तिसकों समेटता ऊँ
 वा सभा मध्य विखें मधुर वचन खुलका उद्धार करण वाला जो है श्री राम तिसकों कहला ।
 भया २९ राक्षस नद्यवाजालं मयैतत्प्रविसारितम् तेन चित्रखगं बद्धा कोटी कृत्वात्मतां नय २३

चिन्ता
भाषा
३

देपापरहित राम मेंने वाली रूप जाल पसारिआ है इस जालकर चित्त रूप पत्नीकों हृदयवितें रो
ककर आत्मस्वरूपकों प्रापतकरो २३ कश्चिहृदी तो भवता मदिरामर्थ ईदृशः त्यक्ता दुर्बोधमतीतो
हैं सेने वाम्भसः पद्यः २४ मेरिआ वाली ईआं आल्य अर्थ हेराम भ्रम त्याग कर तेने गृहण
किआ है क्या जैसे हंस जल त्याग कर दुग्ध गृहण करता है तेसे २५ विचार्यै तदशेषेण स्थितियै वंश
नः पुनः अने नैव पथा साधोगंत व्यंभवता धुना २५ हेराम मेरे वचनोंकों अपनी बुद्धि कर वारंवार ।
भली प्रकार विचार करके वासनालय मनोनाश प्राणायाम ज्ञानाभ्यास इस मार्ग करके तेने चल
ए २५ अनये वधियाराम विहरै नैव बधसे अन्वयान्धः पतस्याशु विन्ध्य खाते यथा गजः २६ हेरा
म इस विचार बुद्धि कर वर्तही ऊका तूं मैं बंधनों न प्रापूत होयेंगे और प्रकार वर्ते गंतुं मैं अंध मि
डों गे जन्म मरण खाई वितें जैसे विंध्या पर्वत की खाई वितें हाथी गिडता है २६ सुगृहीतं धियारा
म मद्बचन करो विचेत तत्पतस्य वटे तत्तु दीपो वा न्यो निशास्त्रिव २७ हेराम बुद्धि कर भली प्र
कार निश्चय कर मेरा वचन न करे गे जब तब तूं मैं संसार गर्त वितें गिडोंगे जैसे अंधा गर्त वि
तें गिडता है अथवा रात्र वितें दीपक विना पुरुष गर्त वितें जैसे गिडता है तेसे २७ असंगे
नयथा प्राप्नो व्यवहारोऽस्य सिद्धये इत्येवं शास्त्र सिद्धान्त मादायोदारवाभव २८ मेंने जो अर्थ कहिआ
है तिसके सिद्धि निमित्त जो प्रारब्ध कर प्रापूत होवे व्यवहार सो असंग कर करण पर सर्व शास्त्रों
का सिद्धान्त मन वितें धारके एही आत्म ज्ञान वान हो जे २८ हेसभ्या हेम हाराज राम लक्ष्मण भूमिपाः
सर्व एव भवन्मोक्ष तावदापारमाह्निकम् २९ ऊर्वन्त्वयं हि दिवसः प्रायः परित्यक्ता कृतिः शेषे विचारयिष्या
मो विचारै प्रातरागताः ३० हेसभा के लोको हेम हाराज दशरथ हेराम हे लक्ष्मण हे राजेंद्र प्रवतम
सब दिन का कार्य स्नान पूजादिक करो २९ एह दिन ब्रह्म वितीत हुआ है तम प्रभान आगेगे शेष
हम विचारै करेंगे ३० श्रीवाल्मीकि रुवाच इत्युक्ता मुनि तातेन सा सर्वे वनदासभा प्रोक्तस्योपद्रवदना

सविकासेवपद्मिनी ३१ वाल्मीकिरुवाच हेभरदाज श्रीवसिष्ठ मुनिने ऐसी आज्ञा जब किंदी
 तब सो सारीही सभा कमलसुखी शीघ्र उठीहे जैसे प्रफुल्लित कमलो वाली सरसी उठे ॥
 राजानः स्वत राजानः कृत राघववन्दनाः परिपुते वसिष्ठे ते जग्मु रात्मनिवेशनम् ३२ राजों ने राजा
 दशरथकी स्तुतिकरीहे श्रीरामकों वंदना करीहे सबनों श्रीवसिष्ठकों प्रणाम करस्तुतिकरी स
 व अपने स्थानोंको गए ॥ ३२ विश्वामित्रेण सहितो वसिष्ठो गन्तुमाश्रमम् उत्तस्थावा सनाच्छ्रीमा
 न्नमस्कृतनभश्चरः ३३ शोभावान् वसिष्ठमुनी ब्रह्मादिक देवोंकों नमस्कारकर विश्वामित्रके सहि
 त अपने आश्रमको जाउने निमित्त आसनते उठेभए ३३ दशरथप्रभृतयो राजानो मुनयस्तथा ।
 यथानुरूपं वक्ता रमणमुनिं चिरम् ३४ दशरथादिक राजे तथा मुनी यथायोग्य उपदेशकत्री जो
 हे वसिष्ठमुनी तिसके पीछे गमन करते भए आश्रमपर्यंत ३४ आपछ्छके चिह्नगने ययुः के
 चिह्नान्तरम् केचिद्राजगृहं सन्नो भूङ्गाः पद्मोप्यिताश्च ३५ वसिष्ठमुनीकों सछ्छकर कोई आ
 काशकों गए कोईवनमध्य गए कोई राजमंदिर गए जैसेभूमर कमलोंते उठकर अपने अपने स्था
 नों विलें जावें ३५ वसिष्ठपादयोस्त्यक्ता पुष्पाञ्जलिमनाविलम् दारैरनुगतो राजा प्रविवेश गृहात्तर
 म् ३६ श्रीवसिष्ठजीके चरणों विलें निर्मलपुष्पांजलि समर्पणकर पिछिं चलति श्री स्त्रियों सहि
 त राजादशरथ अपने गृहमध्य प्रवेश करताभया ३६ रामलक्ष्मणशत्रुघ्नाः प्राप्तास्तथाश्रमंगुरोः
 अभ्यर्च्य चरतो भक्त्या ताजगुर्नरपमदिरम् ३७ अपने आश्रमकों प्रापत हुवा जो वसिष्ठमुनि नि
 सकेचरणोंकों भक्तिकर सजकर राम लक्ष्मण शत्रुघ्न राजमंदिरकों आउतेभए ३७ सदनातिसमा
 साद्य श्रोतारः सर्वएव ते सस्वरा नर्तुरभ्येष्टुर्देवान्निप्रान्पितंस्तथा ३८ सबहीश्रोता वरोंकों आ
 इकर स्तानकरतेभए देवपितरोंकों सजतेभए ब्राह्मण अतिथीकों सन्मुख आइकर सजते
 भए ३८ यथाक्रमं स्तुभ्यमानैर्विप्राद्यैश्चपरिहृदैः समं बुभुजिरेभोजं वर्णधर्मक्रमोदितम् ३९
 ब्राह्मणोंदिकों साथ तथा ऊंडव साथ चाकरों साथ वर्णधर्मक्रमकर शास्त्रने कहिआ जो भोज

निर्वाण
भाषा
४

नयोग्य अन्नदिक सोभोजनकरते भए ३१ अस्संगते दिनकरे समंदिवसकर्मभिः अभ्यागते रात्रि
करे समंरजनिकर्मभिः ४० दिनके करणेवाला सूर्य दिनके कर्मके सहित अस्त ऊर्ध्वा रात्रके कर
णेवाला चंद्रमा रात्रके कर्मके सहित आधा जब ४० स्थित्वा तत्पेक्षकौशेयशयनेष्वसनेषु च ।
भूचरामुनिराजाने राजपुत्रमहर्षयः ४१ तब पटवस्त्र युक्त शय्यां बिलें आसनां बिलें भूमि ।
बिलें विचरणेवाले राजे राजपुत्र तथा मुनी महर्षी ऊर्ध्वशय्यां बिलें ऊर्ध्वसनां बिलें स्थित होइक
२ ४२ संसारोत्तरणेपायं वसिष्ठवदनेरितम् यथावेदेकाग्रधियश्चिन्तयामास राहताः ४२ संसा
रते उत्तरणेका उपाय श्रीवसिष्ठजीके मुखते जो प्रकार ऊर्ध्वा त्रिसकों एकाग्र बुद्धिकार आदरसहि
त यथावत् चिंतन करते भए ४२ ततः प्रहरमात्रेण निद्रामाप्नुदिते नमः उत्सवसुन्दरीमीयुः पद्मा
दुवदिनार्थिनः ४३ रात्रका प्रहरमात्र जब गयाहै तब मुखकमल मुंदे गए ओष्ठस्वर्णकरसंदर निद्रा
को प्रापत भए जैसे कमलदिनको चाहते हैं तैसे दिनको चाहते भए ४३ रामलक्ष्मणशत्रुघ्नाः प्र
हरत्रयमेव तत्र वासिष्ठमुपदेशंते चिन्तयामास राहताः ४४ राम लक्ष्मण शत्रुघ्ने रात्रके प्रहर
यपर्यंत वसिष्ठमुनीके उपदेश वचन सब चिंतन करते भए ४४ प्रहरस्पाईमात्रे ततश्चाप्नुदिते
नमः उत्सवमाययुर्निद्रांत एविद्रावित्प्रमम ४५ त्रिप्रहरोंके उपरंत अर्धप्रहरमात्र किंचित
मुंदे गए नेत्र तिनहोंके उत्तमस्वर्णकर युक्त निद्राको प्रापत भए तब बिलें अम दूर किआ ४५ इ
ति शुभमनसां विवेकभाजामधिगतसारतयोदिताशयानाम् अभजतविरतिं तदा त्रियामासलिननि
शाकरवक्त्रां जगाम ४६ इति श्रीमोक्षोपाये निर्वाणप्रकरणे दिवसव्यवहारवर्णनं सर्गः २ ।
इति चतुर्दशो दिनम् ४७ ऐसे शुभ मन सहित विवेकसहित सार आत्मतत्त्वके ज्ञानकर प्रफु
ल्लित ऊर्ध्वा हृदयजिनका ऐसे जो रामादिकहे तिनहोंकी रात्र निवृत्त होती भई अरुणोद
यकर रात्रका मुख चंद्रमा मलिनताको प्रापत होता भया ४६ इति निर्वाणप्रकरण भाषा सर्गः २
श्रीबाल्मीकिस्वाच ततः क्लिप्तेन्दुवदना पर्याकुलतमः परा दीपमाणवभोषणविवेकश्च वासना ।

श्रीवाल्मीकिरुवाच हेभारदाज मलिनचंद्रमाहें मुखजिसका जीर्णग्रंथकारहै वखजिसका ये
सीरात्र दीएहोतीशोभतीभई जैसेविवेकहोतसंते वासनादीएहोतीशोभतीहै । सर्वस्वना
घालोकेंदृश्यमानेपरेचले शायलीकावतंसाभतापकोनिकरोदधौ २ निकसंहेंम किरण
जिसके ऐसा जोहै उल्लासभाव सूर्य सो ऐसे प्रकाशको धारता भया कैसे सर्वदिशविखिहै अखजिनका
ऐसे जोलोकहेंन तिन्हें देखिआजो सर्वदिशविखिपर्वत तिसके झुंगोंने रोकिआजोप्रकाश सो हों हें
झुंगोंकेमध्यसे प्रकटभया लंबा किया हाथ जैसा पश्चिममुखलोकोने देखिआजो पश्चिमपर्वत जि
सके सिरविखें मुकुटादिक भूषण जैसा प्रकाश ऐसा लोकोने कल्पना कर देखिआ २ अवश्यायक
एकधीपरासछेन्दुमण्डलः जोत्माकबलनालोको वभौआभातिकोनिलः ३ प्रभातका पवन ऐसा शो
भताभया कैसा चंद्रमंडलका सपरश किया जोसके विहेंकों खेचना भया सूर्यप्रकाशरूप जो नेत्रप्रका
श तिसकरके ग्रासनिमित्त चंद्रिका कों देखताहै जैसेनेत्रोंकरके देखकर भोजन करीकहै तैसंहें चंद्रि
काकोंदेखकर भोजन करता भया मानो लुधातवाकर आतेहै पवन २ रामलक्ष्मणशत्रुघ्न उत्थाया
नुचरैः सह यद्युर्वन्दितसंध्यातो पुण्यवासिहमाश्रमम् ४ राम लक्ष्मण शत्रुघ्न आसनते उठकरके स्ना
नसंध्याकरके अनुचरों सहित श्रीवसिष्ठजीके पुण्य आश्रमकोंगए ४ तत्रवन्दितसन्ध्यास्य निर्गतस्यापिस
द्युतः मुनेर्वन्दिरेपादौ पदोर्दत्तार्घ्यसन्नतिम् ५ तिसआश्रमविखे संध्यावंदनकरके आश्रमसेबाहर आ
ए जो वसिष्ठमुनि तिनोके चरणोंकों बारबार अर्घ्य देकर चरणवंदन करते भए ५ दत्तात्रेयसदनमेंमौने मु
निब्राह्मणराजभिः दक्षः पुरण्यधानेष्टशमेनीरन्ध्रतांययो ६ वसिष्ठमुनिका आश्रम दत्तात्रेय मु
निब्राह्मणराजोंकर हाथी घोड़े रथ सवारियां कर शनैः शनैः सरल होता भया ६ अथासोमुनिशार्दूल
स्तथैवसहसेनया गृहेदाशरणकाले रामाद्यनुगतोययो ७ इसउपरंत वसिष्ठमुनीश्वर तिस सेना
सहितही रामादिक पीछे चलतेहैं राजादशरथके मंदिरकों समयविखें जातेभए ७ तत्रैने सर्वसंब
न्धः कृतसन्ध्यामहीपतिः दूरमार्गविनिर्गत्य एजघामाससादरम् ८ तिसमंदिरविखें राजादशरथसं
ध्यावंदनकर वसिष्ठमुनिके आगमनके प्रथमही मुनीकेमिलनेनिमित्त शीघ्र उत्साह युक्त होए ८

निर्वाण
भाषा
५

मार्गजाइकर मुनीकों आदरसहित ८ पुष्पमुक्तामलिजाते भूयोव्यधिकभूषितम् सभाप्रवि-
श्यते सर्वे विविधविहाराणि ९ पुष्पकोठी मलि समूहोंकर महापूजाकरतेभय वसिष्ठमु-
नि विशेषकर अधिकभूषित होय सो सब सभाविलें प्रवेशकर आसन पंगतिआविलें बैठतेभय
१० अथ तस्मिन् वसरे हस्तनाः सर्वएवते श्रोतारस्समुपाजम् नभस्सरमहीचराः १० उपरेत तिस-
समयविले सर्वदिनके सबही सो श्रोते आकाशचर पृथिवीचर आउतेभय १० विवेशसासभासो
म्या कृतान्मोत्याभिवन्दना बभौ राजसभाभोगाशान्ताः तातेवपद्मिनी ११ सोसभापरस्परवन्दना करके ।
वैवही भई जैसे राजा दशरथ वाली शरीरकी चेष्टाकों त्यागता भया तैसेही सो सभा निश्चल शांत सो
म्य निर्वात कमलिनी जैसी शोभतीभई ११ यथा प्रदेशमेवाय निविष्टेषु यथासुखम् तेषु तद्देशयो-
गेषु विप्रर्षिभुनिराजसु १२ सभास्थानविलें आप जो ऋषि मुनि ब्राह्मण राजे सो प्रतिदिनके
जो अपने अपने स्थान हैं तिनो विलें यथासुख बैठतेभय १२ मृदुनिस्वागतरेवे शनैः शमभु-
पागते सभाकोणोपविष्टेषु शान्तशब्देषु बन्दिषु १३ परस्पर कुशलप्रश्नका कोमलशब्द शनैः
शांत होतसंते सभाके कोण विलें बैठे जो भार तिनोका शहभी शांत होतसंते १३ तरसैवोदितेष्टा
मुश्रोतमभागतेशिव गवादादिवजालेषु प्रविष्टेषु कर्षिभु १४ उदय होइयां जो सूर्यकिरणो सो
शीघ्रही मानो कथाप्रवण निमिन्न आउतीयां भयं ऊरोरिवयां के छिंदो विलें प्रवेश किए होतसंते १४
सतरप्रविशद्भौत हस्तस्पर्शचटोदये मुक्ताजालफणत्कारे निद्रायामिवशास्पाति १५ सभाविलेंशी-
घ्रप्रवेश करते जो श्रोता हैं तिनोके हाथोंके परस्पर स्पर्शकर तथा श्रोतोंके टकराणे कर उतपत ऊ-
आ जो मुक्ताजालक भूषणोंक फणतकारणह सो निद्रा विलें जैसे शह शांत होताहे तैसे शांत भयाजब
१५ कुमारः शंकरस्यैव कचोदेवपुरोरिव प्रह्लादश्च मुकुन्दस्य सुपार्श्ववर्षाङ्गिणः १६ वसिष्ठस्थाननेरामः
शनैर्हृदिन्यवेशयत भ्रमन्तीमन्त्रतोषाज्ञेफल्गुपद्मशालिनीम् १७ तब जैसे स्वामिकार्तिकेय शंकरके मु-
खविलें हृदिकों स्थापित करे कच वृद्धस्यतिके मुखविलें प्रह्लादमुकुन्दके मुखविलें गरुड विस्रुकेमुख वि-
लें तैसे श्रीराम श्रीवसिष्ठकेमुख विलें शनैः हृदिकों स्थापित करतेभय जैसे अंबर विलें भ्रमती भ्रमरीकों

मयीदा-

प्रफुल्लितकमल विलेख उदयादि समय विलेख स्थापित करे तेसे १० मुनित्वऽनुजितेनाथतेमेवरहुन
ननम कमेणोवाचवाक्यशोवात्पवाक्यार्थकोचिदम् १० हेभरडाज उपरंत वसिष्ठमुनि तावैपाकेला
ना रहुनेंदनकों सर्वक्रम करके ही वाक्य करते भय सर्वक्रमकों नही त्यागते भय केसाहे रहुनेंदन वा
क्यार्थके जालने विलेख पंडितहे १० श्रीवसिष्ठउवाच कश्चित्स्मरसिद्यत्प्राक्तं होमयारहुनन्दन वाक्य
मयनगुर्वर्धं परमार्थवबोधनम् ११ श्रीवसिष्ठउवाच हेरहुनेंदन मेने सर्वदिनविलेख कहिआ जो वाक्य
अत्यंतगंभीरार्थ परमार्थकों जलाउने वाला तिसको स्मरण करते हो वा ११ इदानीमवबोधार्थ म
न्यच्चरिपुमर्दन उच्यमानंमयेदं च शृणुशृणुतसिद्धये २० देशमुमर्दन अबहोरभी वाक्य ज्ञानके निमि
त्रमेंने कहीताहे तमसुणो सदा स्थिरपदके सिद्धीनिमित्त २० वेदाग्याभ्यासवशात स्तथातत्त्वावबोधनात्
संसारस्तीर्यतेतेन तेष्टेवाभ्यासमाहर २१ सर्वक्रमकरकेही कहतेहैं मुनि हेराम वेदाग्यकेअभ्यासवशाते
तेसे तत्त्वज्ञानते संसारतरीताहे तिसकारणते तिनोही विलेख अभ्यासकरे २१ सम्यक्कृतावबोधेनडु
र्वेद्येत्यमागते गलितेवासनावेशे विशेषकंप्राप्यतेपदम् २२ भलीप्रकार सिद्ध किया जोहै तत्त्वबोध
तिसकरंभ्रमज्ञान दीण होतसंते शोकरहितपद पाईताहे २२ दिक्कालाद्यनवच्छिन्नमहस्योभयकोटिकम्
एकं ब्रह्मेव हि जगत्स्थितं हितमुपागतम् २३ देशकाल वस्तु परिच्छेदरहित नही किसे देखीहै एवं
पर हृद जिसकी ऐसा जो एक ब्रह्म सोही मायाकर है तजगत् स्वरूपकों प्रापतभया २३ सर्वभावान
वच्छिन्नं यत्र ब्रह्मेव विद्यते शान्तं समसमाभासंतत्रान्यत्वं कथं भवेत् २४ सर्ववस्तुके भेद रहित ब्रह्म
हे काहेते ब्रह्मविलेख सर्ववस्तुकल्पितहे कल्पितोंका भेदमिच्छाहे शान्तहे ब्रह्म सत्तास्वरूपकर
भासमानहे सत्ताकेसीहै समं विलेख भी समहे काहेते गोआदिक व्यक्तींयां परस्पर भिन्नहैं न
तिन्हों व्यक्तींयां विलेख गोत्वादिकजातीयां समहैं काहेते सबनो गोआदिक व्यक्तींयां विलेख गोः
गोः ऐसेएकाकारप्रतीत होतीहै समजोहेन गोत्वादिकजातीयां तिन्हों विलेख ब्रह्म सत्ता सम
हे ऐसाजो शान्तरूप ब्रह्म तिसविलेखभेदकेसे होवे २४ उन्निमत्ताऽहमित्यनृत्तामुक्तवपुर्मह
न एकस्वः प्रशान्तात्मा साक्षात्सात्मसखो भव २५ ऐसाब्रह्मसबभावनिश्चयकरके अहंकारका

निर्वाण
भाषा
ह

6

त्यागकरके जीवन्मुक्तस्वरूप व्यापक एक रूप प्रशंसात्मा साक्षात् स्वात्मस्वरूपहेतु २५ ना
स्तिचिन्तनचाऽपिद्या नमनोनचजीवकः एताःसुकलनागमकुताब्रह्मणपवताः २६ हेतुम नचिन्तने
नअविद्याहे नमनहे नजीवहे परअपनिआं चिन्तादिकल्पना ब्रह्मने किआं हेन २६ यासंपदोया
प्रादृशो यास्मिन्नायासदेवणाः ब्रह्मेवतदनाद्यनमविवस्मयिजेभते २७ जोभोगयोग्यसंपदोहे
म जोभोगकारवृत्तीहेम जोभोगवृत्तीवितेचिदाभासहेम जोभोगस्मरणहेम जोभोगेकाहेम सो
ब्रह्मही अनादि अनंत समुद्रजैसा प्रकृतहे २७ वातालेभूतलेस्वर्गे रणेप्राणयस्मरेपिब दृश्य
तेतमरंब्रह्म चिद्रूपनान्तरस्तिदि २८ पातालविते पृथिवीविते स्वर्गविते प्राणीविते अंबरवि
ते सोपरंब्रह्म तेतन्यरूप जामुदष्टिकरदेतीताहे दिनीयवस्तुनही पहीनिश्चयहे २८ उपेक्ष्यहेयो
पादेयबन्धवोविभवावपुः ब्रह्मेवविगताद्यनमविवस्मयिजेभते २९ उपेक्षाकियोग्य ज्ञाननेयोग्य य
हणकरणेयोग्य जोहेम पदार्थ तथा बंधव संपदा शरीर अधिकप्रीतिविषय जोहेम सो सब ब्रह्मही अ
नादि अनंत समुद्र जैसा स्फुरताहे २९ यावदज्ञानकलना यावदब्रह्मभावना यावदास्याजगज्जालेनावक्षि
तदिकल्पना ३० जोताई अज्ञानकल्पनाहे जोताई ब्रह्मभिन्नजगतहे पदभावनाहे जोताई जगज्जालविते स
त्वकी आशाहे जोताई चिन्तादिकोंकी कल्पनाहे ३० देहेयावदहुंभागे दृश्येसिन्धावदात्मना यावन्ममेद
मिमास्यातावद्विज्ञादिविभ्रमः ३१ देहविते जोताई अहंभावहे जोताई निश्चयकर दृश्यविते आप ममता
करताहे जोताई चिन्तादिक विभ्रमहे ३१ यावन्नोदितमुच्चैस्त्वे सज्जनासंगसंगतः यावन्नोर्त्यनसंती
ण तावद्विज्ञादिनिमृता ३२ सज्जनोंके प्रेमप्रदाएवक संगते जोताई एणताका उदयनही कृष्ण स
र्वताजोताईभलीप्रकारनहनहीहोई तोताईचिन्तादिकोंकी नीचताहे ३२ यावद्विधिलतायाते
नेदंभवनभावनम् सम्पददर्शनशक्त्यातावद्विज्ञादयःस्युताः ३३ दृढतत्त्वदर्शनके सामर्थ्यते सं
सारवासना शिथिलजोताईनहीहोई तोताई चिन्तादिक प्रकारहे ३३ यावदसत्त्वमन्धत्वे वैवश्यं
विषयाशया मोक्षान्मोहसमुच्छ्रायकावद्विज्ञादिकल्पना ३४ अज्ञान अंधकार जोताईहे विषयोंकी
आशाकर परवशता जोताईहे मूर्खताते शरीरपुत्रादिकोंविते मोहकी अधिकताहे तोताई चिन्ता

जवलन-
तवला-

तवलन-

तवलन-

दिकों की कल्पना है ३४ यावदाशा विषामोदः परिस्फुरति हृदये प्रविचारचकारोर्जन तावत्प्रविश।
 मलम् ३५ हृदयस्य वनवित्ते भोगाशा रूप विषयं प्ररती है जांताई तो तांई हृद आत्मविचार रूप
 चकोर अंतर प्रवेशन ही करता है ३५ भोगेष्टः नास्य मनसः शीतलाः मूलनिवृत्तेः स्निग्धापापा
 जालस्य दीयते चित्रविभ्रमः ३६ जिसके मनवित्ते भोगों की श्रुति नदी शीतल निर्मल सत्ता पशों नि
 का सत्ता है आशापाश जाल बुद्धि आ है जिसका चित्र भ्रम दीया होता है ३६ तस्मा मोद परिष्ठागा नि
 त्प शीतल संविदः ३७ प्रशान्त चित्रस्य प्रज्ज्वालयत्त चित्रभूः ३८ तस्मा मोद के त्याग में प्रशान्त चित्र नि
 त्प शीतल बुद्धिमान जो है पुरुष जिसने त्यागी जो है चित्र भूमिका सो प्रबोध फल वाली होती है ३८
 असंस्तुत मिया नास्य मः वस्तु परिपश्यतः दूरस्थ मिव देहं स्वमसंने चित्रभूः ३९ जैसे दूर स्थि
 त पुरुष का परिचय नहीं होता है ऐसा अवस्तु जैसे मेव ही पुरुषाकार भासे असत् अस्थिर त्रैलोक्य
 ने देह को देखता है जिसके चित्र की सत्ता किस कारण से होवे अस्थिर नहीं होती ३९ भाविता अनचित्रत्वं
 पशुपान्नरात्मनः स्तान्नावलीन जगतः एतान् जीवादि विभ्रमः ४० यावत्तमनन निदिध्यासन साक्षात्कारो।
 करके पोषित किया अनंत चिन्मात्रस्वरूप संसार वित्ते प्रसिद्ध जो है स्वरूप कर्त्री भोक्ता जिसमें होरस्वरूप
 कर्त्री अभोक्ता आत्मा जिसका मन में लीन हो आ जगत् जिसको जिसको जीवादि भ्रम शांत होता है ४० अ
 सम्पर्क दर्शने शान्ति मिथ्या भ्रम काल्पनिक उदिते परमादित्ये परमार्थे कदर्शने ४१ अपुनर्दर्शना येव दग्धं संपु
 क्ष्पणं वत् चित्रं विगलितं विद्विष्ये ह्येन तत्त्ववैयर्थ्या ४२ मिथ्या भ्रमों का करणे का स्वभाव जिसका पेशा जो तत्त्व
 ज्ञान विशेषी अज्ञान नष्ट होत संते केवल परमार्थ दर्शन स्वरूप परमस्वर्य उदय होत संते चित्रों अमुं तत्त्व
 लित जाण पुनः चित्रका दर्शन नहीं होता जैसे अग्नि वित्ते अति सूक्ष्म पद दग्ध होवे तथा ह्येन विंड गलित अर्थात्
 होवे जिसका पुनर्दर्शन नहीं होता जैसे ४२ जीवन्मुक्ता महात्मानो ये परावर दर्शिनः तेषां चाचित्रपदवी सा स
 त्तमिति कथ्यते ४३ चित्रका अभाव होत संते जीवन्मुक्तों का कैसे व्यवहार होता है इस प्रकारों वसिष्ठ मुनि हर करते
 हैं ४३ हे राम जो जीवन्मुक्त जीवात्म परमात्म दर्शी हैं मैं तिन्हों की चित्र पदवी जो है सो सत्त नाम कर कही ती है
 सूक्ष्म सत्त रूपों प्रापत होती है जैसे जल मुकुट होवे रत्न वित्ते सूक्ष्म जल रेखा शोध रहे जैसे सत्त का सत्त चित्र

निर्वाण
भाषा ५५

लाकर रागद्वेषरहित व्यवहार करते हैं ॥ ४२ ॥ जीवन्मुक्त शरीरेषु वासना व्यवहारिणी न चित्तनाली भवति
सा हि सत्त्वपदे गता ॥ ४३ ॥ जीवन्मुक्त शरीरे विरलं जो वासना व्यवहार कर लेवाली है जिसका चित्त नाम नहीं हो
ता है सो वासना सत्त्व रूपकों प्रापत होती है ॥ ४४ ॥ निश्चित सो हित तज्ज्ञा नित्य सम पद स्थिताः लीलाया प्रथम नीह सत्त्व सं
स्थिति हे लया ॥ ४५ ॥ चित्ररहित जो है तज्ज्ञानी नित्य समता पर विरलं स्थित सो लीला कर के व्यवहार करते हैं ॥ ४६ ॥ स
मा र विरलं सत्त्व रूप विरलं दृढ स्थिति कर के जगत विरलं आदर दहि नहीं करते हैं ॥ ४७ ॥ शास्त्रा व्यवहार नोपि
सत्त्वस्थाः संयतेन्द्रियाः नित्य पश्यन्ति तज्ज्ञोति न है तै को न वासना ॥ ४८ ॥ जितेंद्रिय शास्त्र सत्त्व रूप विरलं स्थित हो प
व्यवहार करते भी हैं ॥ तिनका की व्यवहार दर्शन विरलं है तदृष्टी नहीं परमार्थ दर्शन विरलं एकत्व दहि नहीं नित्य मु
क्त चैतन्य ज्योतिकों ही देखते हैं ॥ तिसकर के तिनकों की है न एकत्व वासना बाधित होती है ॥ ४९ ॥ अनामृत तया
सर्वं चिह्नं चो विजगत्त एव मुक्तो न निर्वर्जते मुनेश्चिन्ता दिविधमाः ॥ ५० ॥ चैतन्य मुनि विरलं अंतर्मुख चित्त पस्तु
चेकर के चिली की रूप त एकी आकृति देता है जो मुनि तिसके चित्तादिक विधम निवृत्त होते हैं ॥ ५१ ॥ विवेक वि
ष्टं चेतः सत्त्वमित्यभिधीयते भूयःफलति नो मोहं दग्ध वीजमिवाकुलम् ॥ ५२ ॥ विवेक कर के निर्मल जो चित्त है सो
सत्त्व कहती है सो मोह रूप फलकों नहीं करता है जैसे दग्ध वीज अंकुरकों नहीं करता है ॥ ५३ ॥ यावत्संवि
मूढान्नः पुनर्जनन धर्मिणी चित्तशब्दाभिधानोक्ता विपर्यय स्थिति बोधतः ॥ ५४ ॥ विमूढ जनों के अंतर चित्त श
ब्द नाम कर के कही जो वासना सो जो कोई होती है तो तोंई बारें बार जन्म दे लेवाली होती है जान कर के सत्त्व
रूप होई वासना जन्म निवृत्ति रूप विपरीत कार्यकों करती है ॥ ५५ ॥ प्राप्ताप्राप्ता भवान्नाम सत्त्वभावमुपागतम्
चित्तं तानाग्निना दग्धं न भूयः परिरोहति ॥ ५६ ॥ हे राम पाउना योग्य जो वस्तु है सो तमने पायो है तमद्वा रा
चित्त सत्त्व भावकों प्राप्ताप्राप्ता तानाग्नि कर के दग्ध होया फेर नहीं जन्म अंकुरकों उतपन्न करेगा ॥ ५७ ॥
संरोहतीषण विद्वेषया परमुनाग्निना न तज्ज्ञानाग्नि निर्दग्धं प्रबोध विशदं मनः ॥ ५८ ॥ जो मन धन की वृ
ष्टि कर प्रवृत्ती पवणा कर लोक की पवणा कर वेधिया है सो मन जन्म रूप अंकुरकों कहता है जैसे प
शु कर के काटिया अग्निकर के दग्ध कि आरण्य आदिक अंतर वीज शक्ति कर के वेधिया डुवा फेर डग
ता है तैसे तानाग्नि कर के अग्नि दग्ध होई ईषण रूप वीज शक्ति जिसकी ऐसा जो मन प्रबोध कर के निर्म

अवलग्न
तवलग्न

ल सो नही उगता है ५० ब्रह्म है वैदिक जगज्जगज्ब्रह्म है हराम नानयोर्विद्यते भेदश्चिद्वनब्रह्मणोरिव ५१
 ब्रह्म की जो है आरौ पितरूप करके वृद्धि सो जगत् है जगत् ब्रह्म स्वभाव वृद्धिवाला है जगत् ब्रह्म का भेद अज्ञा
 न करके ही है वास्तव नही जैसे चित्त चन ब्रह्म का भेद नही ते से ५१ चिद्वनरस्ति त्रिजगत् मरिचे तीक्ष्ण नायथा ना
 तश्चिज्जगतीभिन्ने तस्मात्सदसतीमुधा ५२ चेतन के अंतर त्रिजगत् चेतन रूप करके ही है जैसे मरिच चित्तें ती
 क्ष्णता मरिच स्वभाव करके ही है इस कारण ते चित्त जगत् भिन्न नही तिसते सत् असत् वस्तु का उत्पत्ति विना
 श माया कृत भ्रान्ति ही है ५२ प्राह शब्दार्थ संकेत वासनेहन संविदः चिद्वो मत्वा दुभे भानस्य जातः सदसत्प्रती ।
 ५३ सत् शब्द सत् शब्द का अर्थ असत् शब्द असत् शब्द का अर्थ शब्द का अर्थ विरें संकेत संकेत कहिय अर्थ बोधन
 शक्ति रह सब वैदिक लौकिक व्यवहार विरें वासना मात्र ही है चेतन रूप नही देस काहे ते चिदाकाश सत्ता में भिन्न
 ते सत् शब्द का अर्थ तथा असत् शब्द का अर्थ भासता है चिदाकाश ही परमार्थ वस्तु सत् असत् शब्द का अर्थ
 है तिसमें सत् असत् की भेद बुद्धि का माग कर ५३ अचिन्मयत्वाच्चासित्वं स्वात्मा किमिवोदिति अचिन्मा
 यत्वे जगत्ता मभावे कल्पमंजुतः ५४ तूम रासनामा शरीर सत् असत् स्वभाव आत्मा आप नही हो काहे
 ते शरीर की जडता ते जन्म मरण दिडः स्वभयों काहे को रोते हो सर्व जगत् का चेतन्य में विलक्षण
 ता निश्चय अथवा अभाव निश्चय होत संते शरीर दिकों की कल्पना तज्जकों कहते होनी है ५४
 चिन्मयं चेत्सदा सर्वं तच्चित्तं प्रविचारय शुद्धं सत्त्वमनाद्यन्तं तज्जकं कल्पनाजुतः ५५ जब तूम चित्त भेद न
 पजडता को त्याग कर सब जगत् को सदा चेतन्य स्वरूप मानते हो तब तूम चेतन्य स्वभाव को भली प्रकार वि
 चार विचार कर शुद्ध निर्भेद एकरस सत् आदि अंत रहित भासता है ऐसे स्वरूप विरें शरीर दिकल्प
 ना कहो ५५ चिदात्मा सि निरंशोति पाणवार विवर्जितः तूपे सार निजं स्फारं माः स्मृत्वा संमितो भव ५६ हे राम
 तूम चित्त स्वरूप आत्मा है अंश रहित हो पाणवार से रहित हो ऐसा अथवा स्वरूप स्मरण कर स्वरूप
 को विस्मरण कर छोटा शरीर रूप मानो ५६ तां स्वसंतागतः सर्वं मत्सर्वं भावयोदयी नादशूयो सि पात्रो सि
 चिदसि ब्रह्म त्वसि ५७ तिस अथनी शरीर दिक जगत् रूप स्थिती को प्रापत होया तूम परमानंद लभ रूप उदय
 वाला होइ कर परिक्रिन्न जगत् को सर्व स्वभाव कर हे राम तूम ते सात्त्विक है पौत है चेतन है ब्रह्म स्वरूप है

न हो =

जैसा है वास्तव परोक्ष

निर्वाण
भाषा
६
८

६

चिह्निलोदरमेवासि नासि नानास्यः पापः सि योसि सोसि न सोः सीव सदस्यः सदसि स्वभाः ५८ हे राम तू वैतन्यशिला
सार है वास्तव नाना रूप स्वभाव नही तथापि नाना रूप निषेध के सादी निषेध में परे तू है जो तू है सोही तू है
मनवाणी की गति तेरे विवेक नही तू परे दोन ही जिसे तू स्वयं प्रकाश है सत तू है असे तू है ५८ यः
पदार्थ विशेषो नर्त्तन होव सोलिते तदस्यः तदसि स्वस्थिद्विनात्मन मोक्षते ५९ जो सर्व पदार्थों का परस्पर भेद है सो
असत शब्द का अर्थ है सो तू नही इसने सने हो तू सो पदार्थों का परस्पर भेद वरादिक जो है सत तिन का धर्म है सोध विशेषण=
म सजा जाति है ऐसी शास्त्री या वारिकों ने कल्पना की है ऐसी कल्पित सजाते विवेक नही इसने तू असने तू
सदा स्वरूप विवेक स्थित हो हे चिह्न न आत्म स्वरूप राम तेरे को नमस्कार हो ५९ आद्य नवर्जित विशाल शिलानगर
ल संपीड चिह्न नव प्रगम नाम लक्ष्म स्वस्थो भवान् वरपत्न्य को शरीर वाली ला स्थिता तिलजगज्जयते नमस्ते ६० इति सो
तो पाये निर्वाण प्रकारे विप्रानि सुदृढीकरण नाम द्वितीयः सर्गः २ आदि अंतरहित विशाल स्फुरिक शिला के
अंतर जैसा दृढ जो है चिह्न न स्वरूप सो हे राम तू है तू के विवेक डः रादिक ऊछ नही ऐसा आपको जान कर स्वस्थ
हो जो चर्मो जोर विलीन जो है तू ही रा चैतन्य शिला जंतर तिस विवेक प्रतिबिंबित परकोश जैसी कल्पित जो है माया तिस
के पत्रे खाँ जैसि आँ जो वासना रेखाँ हैं तिन्हों वासना रेखाँ विवेक मन की लीला कर के अनंत जगत स्थित है सो तेरे
रीस कर के तेरे विवेक भासने है ऐसी जो तू है माया के जीतने हो राने हो तेरे नमस्कार हो ६० इति सो तो पाये
निर्वाण प्रकारे विप्रानि सुदृढीकरण नाम द्वितीयः सर्गः २ श्रीवसिष्ठ उवाच भाविभरित रंगारंग पयोद्वन्द्वमिवाम्बुधौ
याचिद्वदप्यनजानि जगन्मनव सो भवान् १ श्रीवसिष्ठ उवाच समुद्र विवेक उत्पन्न होते जो बहने तरंग हैं तिन्हों
का आधार जैसे जल समूह है तेसे जो चैतन्य अनंत जगतों को धारता है हे पापरहित राम सो चैतन्य आत्मा
तू है परम भावना कर १ भाव भावन या चित्तो भावा भात विवर्जितः चिदात्मन संस्थिता के वदते वास
नादयः २ हे चित्स्वरूप राम तू चैतन्य भावना से रहित हो भाव अभाव से रहित हो तेरे विवेक वासनादिक क
हो स्थित है २ जीवो य वासना दीद मिनि चित्त चरितस्वतः इतरोक्तः यो योत्र कः प्रसंगोः कु कथ्यताम् ३ प
द जीव है एह वासना है परवंधन है परमोक्ष है इत्यादिक रूप कर के चैतन्य ही स्वयं प्रकाश चमकता है चैतन्य
न्यसे भिन्न शब्द अर्थ इन्हीं का कौन एक रस आत्मा विवेक कौन प्रसंग है हे संग प्रिय राम पर तेरे
ने कहला अर्थान को प्रसंग नही ३ महातरङ्ग गभीर भास्वर आत्म चिदलवः समाभिधानास्ति मितः

समसोमोसियोमवत ४ रामनामा तूमे महाग्यामचैतन्यसमुद्र है केसासमुद्र तरंगरहित गंभीर प्र
काशमान निश्चल सम आकाशजैसा सौम्य होभरहित ऐसेतु है ४ यथानभिन्नमनला दोहोंसे
गन्धमसुजात कासूर्यकजलतः प्रोक्तं हिमात्माधुर्मिलितः ५ आलोकप्रकाशाद्गुणनिलयाचि
तेः जलादीचिर्यथाऽभिन्नचित्त्वभावात्तथाजगत् ६ जैसे अग्निमें भिन्न उल्लास नहीं कमलमें सुगंध भिन्न
ही कजलमें कालिग्राईभितरफते अल्लासि गन्धमें मधुरताभि तेजमें प्रकाशभिन्न नहीं जैसे चैतन्य
में अनुभवभिन्न नहीं अनुभवकहीए वृत्तिप्रतिविंबितचैतन्य जैसे जलमें भिन्न लहरीनहीं जैसे चित्त्वभा
वोंमें जगत् भिन्न नहीं ६ चित्तोनभिन्नानुभवो भिन्नो नानुभवाद्दहम् नमजो भिद्यते जीवो नजीवाद्दिद्यते
मनः ७ मनसोनेन्द्रियंभिन्नं पृथग्देहस्यनेन्द्रियात् नशरीराजगद्भिन्नं जगतो नान्यदस्ति हि ८ मूल्या
धिष्ठान जो है ब्रह्मचैतन्य तिसमें अनुभवभिन्न नहीं अनुभवकहीए मायावृत्तिविले स्थितचिदाभास सादिता
अनुभवमें भिन्न वृत्ति समष्टि अहंकारनहीं अहंकारमें भिन्न जीवनहीं जीवमें भिन्न मननहीं मनमें
इंद्रिय भिन्न नहीं इंद्रियमें देहभिन्न नहीं शरीरमें जगत् भिन्न नहीं समष्टिशरीरही जगत् है जगत्में
भिन्न कछु नहीं ७ ८ एवं प्रवर्तितमिदं महच्चक्रमिदं चिरम् नच प्रवर्तितं किंचिन्नचशीलं चनोचिरम् ९
एह दृश्य जगत् महाचक्रं चैतन्यने स्वरूपके विस्मरणमें अध्यासपरंपराकरके बरताया है चिरकाल
परमार्थदृष्टिकरके तो कछु भी नहीं बरताया नशीलं नचिरकाल ९ स्वदेदनमः नच सर्वमेवमख
रितम् विद्यते योमनि योम नकस्मिन्निन्न किंचन १० स्वयंप्रकाश अनेत सबही जगत् आवंड है चिदा
काशविले चिदाकाशही है न किसी विले नजुद्ध है १० अन्योन्यसमुच्चनं ब्रह्मब्रह्मणिदेहितम् सत्यं
विजम्भते सत्ये पूर्णं पूर्णमिव स्थितम् ११ अन्यविले अन्य वधिआ है ब्रह्मविले ब्रह्मवधिआ है सत्यवि
ले सत्यभासगा है पूर्णविले पूर्ण जैसा स्थित है परमार्थदृष्टिकर एकरस है किंचित भेदनहीं ११ रूपा
लोक्तमनस्कारान्कुर्यन्नपिन किंचन सः करोत्यनुपादेयान्नः तस्यैवदिकर्तृता १२ जानवान् बाहर रूपदर्श
न अंतर संकल्पों को करताभी है नहीं कछु करता है काहेते स्वरूपदृष्टिकर मन इंद्रियां विले अध्यास नहीं
मिथ्यापदार्थों को प्ररूपयोग्य नहीं जानता है अज्ञानी को ही अध्यासकरके करता है १२ यदुपादेयबुद्ध्या

सादिता

सादिता

५६

निर्वाण
भाषा
१५

चतुः। तद्यस्य वायते भावाभावेन नीदेयमकर्तृसखदुःखयोः १३ जो बस्तु उपादेय बुद्धि करके यह
एक सी नी है सो बस्तु प्राप्ति सख विखें सख दायक होती है आगे पीछे दुख दायक होती है उपादेय कही
पण्डित योग्य वस्तु भाव जो दृश्य है तिसकी असत्ता करके उपादेय कह्यु नही राग बुद्धि करके नही ग्रह
एक ई वस्तु सखदुःख को नही करनी है १२ यथा नाना व्यनानैव खिखे खानीति ताग्याः सार्धं कोप्यः
निष्कृन्त्या तान् यो मज्जतोः क्रमः १४ जैसे खे खे खानि एह वाली समूह अनेक रूप भी है तथापि एक
ही है एक आकाश दो आकाश बड्ठे आकाश एह अर्थ करके सहित भी है तथापि अतिशय स्वरूप है
काहेने आकाश एक ही है तैसे आत्मा जगत् पराह भेद अर्थ भेद भासता भी है अतिशय है काहेने जैसे
एह रज्जु परसर्प पराह अर्थ भेद भासता भी है अतिशय है सर्प रज्जु में भिन्न नही तैसे जगत् आत्मा में भिन्न न
ही है १४ अन्तर्धर्माः मलो बाह्ये सम्यगाचारवच्चरुः हर्षमर्षविकारेषु काष्ठलोहसमस्थितिः १५ अंतर आ
काश जैसे निर्मल हो जे बाहर भली प्रकार आचार विखें चतर हो जे हर्ष क्रोध विकारों विखें काष्ठ लोह
सम स्थिति करे जैसे काष्ठ लोह विखें अंतर हर्ष अमर्ष विकार नही होता है तैसे तू भी निर्विकार हो
यपवाः तितरो शत्रुः सत्त्वं मारणोद्यतः तमेवाकं त्रिमं त्रिं यः पश्यति स पश्यति १६ जो ही शत्रु त प्राप्ति
है शीघ्र मारण विखें उद्यम युक्त होता है तिसी को सद्गुरु मित्र जो देखे सो आत्मा को देखता है एक ही
आत्मा सर्वत्र है शत्रु शरीर विखें भी में ही आत्मा है जैसे अपने शरीर विखें स्नानी पीन करता है तैसे ही श
त्रु शरीर विखें भी सद्गुरु मित्र प्रीति करता है १६ समूल काष्ठ कषति न दीत दश्चकुम्भ यः सो हृदं मत्सरं च
सहर्षमप्यदायहा १७ जैसे नदी तट वृक्ष को मूल सहित काटती है तैसे जो राग द्वेष को समूल काटता
है सो हर्ष क्रोध दोषों का नाश करता है संसार की सत्य वासना भोग वासना राग द्वेष का मूल है १७ राग द्वेष
विकारों सत्त्वं चैव भावते ततः सज्जोप्यभद्राः सेविता अप्यसेविताः १८ राग द्वेष विकारों का मूल सत्त्वं
जब न विचारि प तब राग द्वेष रहित संत है एह पुरुष ऐसे प्रसिद्ध भी है लोकों विखें तथापि असंतहन
राग द्वेष का मूल नाशन ही कि आ राग द्वेष समयांतर विखें उतपन्न होवनगे सेवित कि पभी असेवित है व्यर्थ है
न १८ यस्मिन्नाहं कृतो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते इत्यापि स शमो लोका न्न दहति न निबध्नाते १९ जिसको मैं

अहंकार

ताहें यह अहंकार नहीं जिसकी बुद्धि रगद्वेषकर लिपन नहीं होती है सो इन्हो लोकोको मारता भी
 है नहीं मारता है न मरता है १५ यन्नास्ति तस्य सजाव प्रतिपुनिरुदाहता साधेति सापरिज्ञानदेव नश्यत्संका
 यः २० जो वस्तु नहीं जिसकी सत्ता प्रतीत माया कही है शास्त्रा विरुद्ध सा माया अधिष्ठान जानने ही नष्ट होती
 है इस विरुद्ध संशय नहीं है २० निःस्नेह दीपवत्कानो घस्यान्तर्वासनाभरः तेन चित्रकृते नेच जिते ने नाविकारिणा
 २१ जिसके अंतरावासनाभर पान ऊंचा निःस्नेह दीपक जैसे शांत होता है तैसे **जिस पुरुष** ज्ञानवान् निर्विकार
 है तिसने जीत पाई है जैसे चित्रपुरुष चित्रपुरुष शत्रु का सिरकार कर जीत पावे तैसे आत्मा विरुद्ध संसार अज्ञान
 न विकार विरुद्ध नहीं है जयादिक भी कल्पना मात्र है २१ यस्यानुपादेयमिदं समस्तं पदार्थं जातं सदसद्व्यासः ।
 ननुः खराहाय सुखाय नैव विमुक्तये हस जीवय २२ मोक्षोपाये ब्रह्मोक्त प्रतिपादनं नाम तृतीयः सर्गः ३ ।
 जिस उन्नत पुरुषको यह सब भोगयोग्य पदार्थ समूह उपादेय नहीं ग्रहण योग्य नहीं सो पदार्थ विद्योग
 दशा विरुद्ध दुःखराहकानि निमित्त नहीं होता संयोग दशा विरुद्ध सुखका निमित्त नहीं होता सो पुरुष जीव
 ताभी मुक्त ही है काहेते सदसद्व्यास विरुद्ध पदार्थों को मिथ्या जाना है अथवा आत्मरूप करके निरा
 प्राप्ति जाना है सदसद्व्यास कही प उन्मत्ति विनाश दशा ऐश्वर्य दरिद्रता दशा आरोप अपवाद दशा २३ ३
 तिमोक्षोपाय भाषायां ब्रह्मोक्त प्रतिपादनं नाम तृतीयः सर्गः ३ श्रीवसिष्ठ उवाच मनोबुद्धिरहंकार इन्द्रिया
 दितयानव अचेत्य चिन्मय सर्व कृते जीवादयः स्थिताः १ हे निष्ठा पुरुष मनो बुद्धि अहंकार इन्द्रियादि
 क यह सब अचेत्य चिन्मय है अचेत्य कही प चिंतन योग्य द्वितीय पदार्थ का अभाव सो जीव जगत् कहा
 स्थित है १ एकै नैवात्मना दत्ता नाना ते यं महात्मना यथैके नैव चन्द्रेण निमिराणां च दर्पिणोः २ एक ही आ
 त्मा पश्चात्मा है तिसने ही माया करके यह भासमान नानाता अनेक रूपता अपनी सत्ता के संबन्ध करके आ
 प विरुद्ध प्रकट किही है जैसे एक चंद्रने ही निमिरुद्ध छि करके जल पात्रों करके दर्पणों करके अनेक चंद्र
 स्वरूप प्रकट किछे है २ भोगरसादिषां वेशो यदेवोपशमंगतः तदेव मस्तमज्ञानमात्मध्वान्तयादिव ३
 आत्मदर्शन करके भोगरसादिषां वेष का अवेश दृढ वासना रूप आवेश जब निवृत्त होता है तब ही अज्ञान
 नष्ट होता है जैसे अंधकार के नाशने नेत्रों के देखने की असमर्थता रूप अन्धता निवृत्त होती है ३ अध्यात्म

की
 रोग वाली ५४

हे जिस विरुद्ध

नहीं है

निर्वाण
भाषा
६०

७०

अचित्र
५०

शास्त्रमन्त्रेण रक्षाविषविषचिका दीयते भाविते नान्नः शरदामिहिकायथा ॥ अथात्मशास्त्रकहीप आत्मा
कास्त्ररूपनिर्णयकरणेवालावेदंशास्त्र भलीपकार विचारित किष्काङ्ग्या महामंत्रे है जिसकरके रक्षा
रूप विषविषचिका दीलहोती है जैसे शरत् ऋतुकरके मेघोंकी धुडी दीलहोती है ॥ मोर्ख्यहीलेहने
विधि चित्रं रामसबान्धवम् विलीनान्धुधरेयोसि जायुषाम्भयविद्वजः ५ अज्ञान नष्टहोतसंते चित्र काम
क्रोध लोभादिक बांधवोंसहि नष्ट हुआ ज्ञान जैसे आकाशवितें मेघ निवृत्त होतसंते पीतलता निवृत्त हो
ती है विल्वविना ५ अचित्र त्वंगरेचित्रे दीयते वासनाभ्रमः हारमुक्तासमावेष्टास्त्रिनेत्राचिवानव ६ चित्रवि
नाशकों प्रापते होतसंते वासनाभ्रम लीलहोता है जैसे तंतु जुटे मोतीकी हार रचना बुरजाती है तैसे ६ रत्न
नाथविद्यानाथ पास्त्रार्थभावयन्त्रिये कमिकीटतयग्यायचेतसा संमिलनिते ७ हेरचुनाथ जो शास्त्रका
रहस्यार्थ लोडकरके शास्त्ररहस्यके विनाशनिमित्त अन्य प्रकारकरके कल्पना करते हैं सो कमिकीट
जन्मदेलेवाला जो है पापतिसके निमित्त रागद्वेषकारण जो है चित्र तिसके साथ मिलते हैं ७ नवतारमरा
कारकान्तलोचनलालता शान्तेमोर्ख्यतृतावाते चलता सरसोयथा ८ नवकमलाकार संदर स्त्रीके नेत्रे है
॥ जिन्हों वितें चंचलता मनोहर है परदुर्बुद्धिकल्पना मूर्खता शान्तहोतसंते नष्टहोती है जैसे पवन फांतहोए स
रकी चंचलता नष्टहोती है ८ स्थिरतामुपधातोसि भावाभावविवर्जितः पदेपरमविस्तारे नभसीवप्रभञ्जनः ९ हेराम
तुम् परमविस्तारवाले परवितें स्थिरता को प्राप्त हुआ है भाव अभावकी वासना संरहित हो जैसे आकाशवितें
पवनस्थिरहोवे तैसे ९ मन्ये मधुचने बोधगगतोसि रत्नरुद्र विगताज्ञाननिद्रोन्नर्दपतिः परहेरिव १० हेरचुक्र
नके उद्धार करणेवाले तुम मेरे बचनो करके आत्मबोधको प्राप्त हुआ है अज्ञाननिद्रा अंतर हर होई है जैसे रा
जा परहों करके जागता है परहकहीप जगाणेवाले भादोंके प्राप्ते १० सामान्ये चलननेव जने कुलपरोर्गिरः अ
सुदारमनोरम नलग्निकथं लयि ११ सामान्य जन वितें भी कुलपुरु किशो लालिमां हृदयवितें लग्नियों हैं हे
राम अति उदार बुद्धिवाले ते हीरे हृदयवितें मेरियों कुलपुरु किशोवालिमां के से नही लगे ११ यज्ञोपादेय
वास्तवं भाविते स्ववचेतसा मदचो नर्विशमये स्तभोः क्षेत्रे यथापयः १२ हेराम मेरे वितें तेने यथापय उपदेश करत
चित्तित कि पादे इसने मेरा वचन तेरे अंतर्हृदयवितें प्रवेश करता है जैसे ऊंचे वृत्तके दोत्रवितें जल प्रवेश करता है १२
अपने चित्र करके

जाज्यों के

अवश्यग्रहण
करले योग्य

वृत्तको

वयमिह हि महानुभावनिःसंजलप्रबोभवतां रक्षद्वहानाम् मरुदितमिदमाधुधार्थमार्थं सुभवचनं हृदि
 हारवत्तयेति १२ मोतोपायेनिर्वाणप्रकरणे चित्राः भावप्रतिपादनं नाम चतुर्थः सर्गः ४ हेमहात्रु
 भावराम इस एषिवीवित्वं सब इत्वा ऊवंशीशोंको विशेषकरके रत्नवंशीशोंको सुखी कुलप्रहरी कीन्हा ३५
 हों इस कारणनें मैंने मेरा पद सुभवचन हृदयवित्वं हेमोए हारजैसा शीत धारणा १२ मोतो
 पायेनिर्वाणप्रकरणे चित्राः भावप्रतिपादनं नाम चतुर्थः सर्गः ४ श्रीराम उवाच अहो अहं गतश्चित्तं
 भवदक्षार्थभावनात् शान्तजगज्जालमिदमयस्यमपि नायमे १ श्रीराम कहते हैं श्रीवसिष्ठकों हे
 नाथ तुम्हारे वचनोंके अर्थके विचारने में चैतन्य एकरस एण आत्मस्वरूपकों प्राप्त हुआ हों ५
 ह आश्चर्य हुआ हे मेरे आगे स्थित भी है यह जगज्जाल शांत भयो है १ परमन्तः प्रयातोः सि परमा
 त्मनि निर्द्वन्द्वः दीर्घाः वयसं संप्रवृत्त्यवसथा तलम् २ परमात्मावित्वं परमशान्तिस्त्वयि कों अंतर
 प्राप्त हुआ हों जैसे एषिवी मंडल चिरकालपर्यंत वर्षाके प्रतिबंधते संतप्त ऊवा वर्षाकरके शी
 तल होता है तैसे २ शाम्यामि शीतलाकारः सखंतिष्ठामि केवलम् प्रसादमनुयातोऽसि सरोनिर्वाणं यथा
 ३ शान्तिकों प्रायत हुआ हों शीतल स्वरूप हुआ हों केवल सखंति जैसे होवे तैसे स्थित हों निर्मलताकों प्रा
 त् भयो हों जैसे हो भकरणेवाला हाथी सरतें बाहर निकले सर निर्मल होवे तैसे २ सम्यक् सन्नमुखित्वं
 दिग्गण्डलमिदं मुने यथाभूतं प्रपश्यामि विनीहारमिवाधना ४ हे मुने इस सारे दिग्गण्डलकों भले प्र
 कार प्रसन्न यथा र्थ रूप सन्मात्र स्वभाव देखता हों अब जैसे नीहारते रहित होवे दिग्गण्डल तैसे नीहार
 करीए धूँध जाते स्मि गत संदेहः शान्ताशामगरसिका रागनी रागनिष्ठो मूषजङ्गल शीतलः ५
 संदेह रहित भयो हों आशामगरसा शांत होई राग वैराग्यनें निहन्न भयो हों नीहार जसे रहित जैसे शरकाल
 का जंगल शीतल होवे तैसे शीतल भयो हों ५ आत्मनैवान्नानन्दे तस्याप्रोत्पन्नवर्जितम् १ साधनरसास्वादीयत्र
 नाद्यतणायते ६ अपने आप ही अंतरहित तिस आनंदकों अंतर प्राप्त भयो हों जिस आनंदवित्वं अमृत रसका
 स्वाद रणरस स्वाद जैसा भासता है ६ अद्याहं प्रकृतस्थोऽसि मुदितोऽसि मुदितोऽसि च लोकारामोऽसि रामोऽसि नमो
 मह्यं नमोस्तुते ७ अब मैं परमार्थस्वभाववित्वं स्थित भयो हों प्रसन्न हों उदयकों प्राप्त भयो हों लोक जिस परम

५ नाथ हे स्वामीजी ३ जो आनंद है ३ साक्षात्कारको ३ योगी

लि
 करके

निश्चिन्तः
 शुद्ध-
 शुद्ध

निर्वाण भाषा ११

सुखविवेकमतेहैं सो राममेंहैं मेरा रामनाम अब सफलजग्रा ऐसा परमसुखरूपजो मैं हों तिसमेरे
 को नमस्कारहो ऐसे स्वरूपका दर्शन करणी वाले जो तम गुरुहो तुम्हारे को नमस्कारहो ५ ते संशय
 स्ताः कलनाः सर्वमसंगतमम रात्रिवेतालसंसारः प्रभातइवभास्करे ६ सो मेरे संशय सो भ्रम सर्व नाशकों
 प्राप्नहु ७ हेन जैसे रात्रिविवेक भ्रान्तिकल्पित वेतालका संचार ग्रथवा ऊंचेच प्रभात सर्वोदयहोतसे
 ते नाशकों प्राप्नहोताहै तेसे ८ निर्मलेहृदिविस्तीर्ण संपन्नेहिमशीतले मनोनिर्वृतिमायाते सरसीशरदी
 वसे ९ मेरा हृदय निर्मल विलारकों प्राप्नभया वरफ जैसा शीतलहोया तिसविवेक मन विलेपरहित विप्रा
 मोंको प्राप्नभयाहै जैसे शरत शतविवेक महासर निर्मलहोताहै तेसे १० कलङ्कग्रामनः कस्मात्कथंचेन्या
 दिसंशयः नूनं निर्मलतांयातो मगाद्ग्रेययातमः ११ चेतन्य एकरस आत्माको कलंक किसनिमित्तसे या
 याहै कैसे स्वयंप्रकाशविवेक स्थितहै असंग आत्माको आकादन करताहै कुरस्यकों कैसे विकारोंका अनुभ
 वहोताहै इत्यादिक संशय निश्चयकरके निर्मलताकों प्राप्नभया सर्वसंशयोंका मूल अज्ञानहै तिसका नाश
 भया जैसे चंद्रमाके आगे अंधकारनष्टहोताहै १२ सर्वमात्मेव सर्वत्र सर्वदा भाविनाकृतिः उदमन्यदिते चान्यदि
 त्समत्कलनाजतः १३ सर्ववस्तु आत्माहीहै सर्वदेश सर्वसमय विवेक स्फुरताहै स्वरूप केवल आत्माविवेक एह
 भिन्न एहभिन्नहै ऐसी असत् कल्याण कहांसे भईहै १४ को भवं प्रागहं तादृक् क्स्मानि गडुयवितः अनुरात्मा
 नमेवेति विहसामि विकाराशान १५ मेरा अब सर्वत्र प्रकाशमान निर्विकार सुखरूपहो ऐसे आत्मस्वरूपको
 कोडकरके पूर्वकालविवेक तस्मा अखलकरके बड़ा कौन को होताभया एहमें हसताहो पूर्वदशाको
 १६ आइराती सरतं समग्रयथैव सकलोऽस्य सो यस्तद्वागमृता परस्नातेनायमहं स्थितः १७ एह हो जै
 से परमार्थ स्वरूप स्थितहो एह पूर्णहो आत्मा सो ब्रह्महो एह अब भली प्रकार स्मरण कियाहै काहेते
 तुम्हारे वचन रूपजो असत् प्रवाह तिसविवेक स्नान कियाहै मैं तिसने १८ अहो नुविततां भूमिमधि
 ब्रह्मोऽस्मि पावनीम् इह स्थ एव यत्रा को न पातालमिवास्थितः १९ अहो आश्चर्यहै मैं इस सभाविवेक स्थि
 तहो परब्रह्मभूमिकाको आइरहो आहो कैसेही परमविभ्रहं परमविलारवालीहै जिसभूमिकाको ह
 थिकरके सूर्यपातालमें जैसेभी अथः स्थित नही भासताहै ब्रह्मलोकमें वहुन हेरा स्थितहै सूर्य ब्रह्महृदि

आनंद =

लोह

अव

विना =

तले =

विवेक तो सर्व
 वेशादिक सुख ही

महोसनासुपेतायभावभावभवालीवात नमोनिर्गुणमस्याय जयाम्यात्मात्मनात्मनि ॥ उत्पत्तिविनाशरूप जोसे
 सारसमुद्देहिसकोतरेके तिसके पारस्वरूपजोहे सर्वकी अधिष्ठानसत्ता तिसको प्रापत होयाहो जिसेते हो ।
 आत्मा आत्माकरके आत्माविते जयको प्रापत होयाहो तिसते सबनोसदा नमस्कारकरण योग्यहे मेरेको ॥
 अनुभववशतोहृदयकोशेस्फुरमलितोसमुपागतैननाथ तववरवसेहवीतशोकांचिरमुदितोमुपागतोसि
 ॥ मोक्षोपायेनिर्वाणप्रकरणोरावविश्वान्निर्वर्णननामपञ्चमः सर्गः ५ देनाथ हृदयकमलकोशविते
 प्रकरस्थिरताको भ्रमरजैसा प्रापतभयाजो तस्याशेषवचन तिसकरके इसी देशकालविते स्वात्माकेअनु
 भववशते शोकरहित सदाही उदयको प्रापत होई मुदितो जीवमुक्तदशा तिसको प्रापत होयाहो ॥ निर्वाण
 प्रकरणभाषायां रावविश्वान्निर्वर्णननामपञ्चमः सर्गः ५ श्रीवसिष्ठउवाच भूयपवमहाबाहोऽप्यगमपरमवचः
 यज्ञेहंप्रीयमाणायवक्ष्यामिहितकाम्यया ॥ श्रीवसिष्ठउवाच हेमहाबाहो एव मेरापरमवचन फेरसुता तु पर
 मानंदआत्माका अनुभवरूपजो प्रीतिहे तिसकेपात्रहे तेमहारेताईकहोंगा सबलोकोकेहितकामनाकरके ॥ भेद
 मभ्युपगम्यापिप्युगबुद्धिविदुदये भवेदल्पप्रबुद्धानामपिनोदुःखितपिथा २ यद्यपि अहेतुज्ञानते त्रुकोभेद
 बुद्धिनही रहीहे तथापि हेमेप्रोताहो भेने उपदेशवचन पुरोते सुगनेहें ॥ एहभेदकोअंगीकारकरकेभी मेरा
 वचन सुग जैसेतेमोरबोधकी बुद्धिहोवे अल्पबोधवालेजो प्रोताहें ॥ तिनकोभीजैसेडःखदृष्टानहीहोवे नि
 सकेनिमित्त सुग २ यस्याज्ञातात्मनोऽस्यदेहपवात्मभावना अद्वैतेतिरुषवात्तरिपवोभिभवन्नितम् ३ आत्मज्ञा
 नरहित जिस अज्ञानीकोदेहवितेही आत्मभावनाहे मानोइसअपराधते इंद्रियांही शत्रुहोके जिस अज्ञानी
 को वधाकरकेडुःखदेनिआहें ॥ २ यस्याज्ञातात्मनोऽस्यदेहपवात्मनिसंस्थितिः संतप्तोवात्सहदोनचन्नितम्
 निन्दितम् ४ जानिआहे आत्माजिसने पेसाजोज्ञानवानहे जिसकीसत्य आत्माविते स्थितिहे तिसको इंद्रियां
 संतोष करकेही मित्ररूपहोकरके नहीमारनिआहें ज्ञानवानकेअधीन होनिआहें ५ पदार्थोस्फुरतोयस्यनस्त
 निर्निन्दनाहते सदेहदेहदुःखार्थमादत्तेकेनहेतुना ५ जोपुरुष व्यवहारकरताभीहे भोगयोग्यपदार्थविते सदाही
 दोषदर्शनते निंदाहीकरताहे निंदाकोछोडकरके स्तुतिनहीकरताहे सोपुरुष देहसंबंधिडःखनिमित्त देहको
 किसकारणकरके आत्मरूपकरकेग्रहणकरताहे तिसवितेकोईकारणनही देहकोआत्मस्वरूपकटाचिनही
 जाणताहे ५ नात्माशरीरसंबन्धीशरीरमधिनात्मनि विद्योविलक्षणवेतोप्रकाशतमसीधया ६ आत्माशरीर
 कासंबंधीनहीहे शरीरभी आत्मावितेनही परस्परविलक्षणहे ॥ आत्माचेतन शरीरजड जैसेप्रकाशअंधकारका
 संबंधनहीतैसे ६ सर्वैर्भावविकारैस्तुनित्योन्मुक्तस्वत्वेपकः नात्मास्तमेतिभगवान्नचोदेतिसदोदितः ७ सबभा

मेरे

निर्वाण
भाषा
२०
१२

भावविकारजन्मादिकहेन तिन्होंसे नित कुरिआहे निर्लेप आत्मा भगवान् अस्तकों नही प्रापत होता है उदय।
कों भी नही प्रापत होता है सदा ही प्रकट है ७ जउ स्यात्तस्य तत्कस्य कृतस्य विनाशिनः शरीरको पलस्यास्य उदय
वयस्तु तत्रया ८ जउ ज्ञानरहित तत्क कृतस्य जिस आत्मा के प्रसादते जीवता भासता है तिसही आ
त्मा को दुःख देता है इसने कृतस्य है विनाशी है शरीर रूप पाषाण इसकों जो भी तउ स्यादिक होता है।
सो ते से हो मेरेकों ऊँच हा नि दृढि नही ८ आदने तत्क यं नित्य चिन्मय त्वं स हो दितम् तयो रे कपरिताने ज
इते वा परस्थिता ९ सो तत्क शरीर सदा भासमान नित्य चिन्मय भावकों के से धारे आत्मा अरु देह इन्हों
दों नो मध्य एक आत्मा का चिन्मय भाव के जानते दूसरे देह की जउ ता ही स्थित होती है ९ तयोः की दृग्नि
धा भूता समान सुख दुःखिता यो समो सम धर्माणो न कदाचन तौ कथम् १० जैसे अग्नि लोह पिंड अविचारते सम
एक जैसे भासते हैं सम धर्म भासते हैं अग्निके धर्म राह उल्लास प्रकाश लोह पिंड विवे भासते हैं लोह पिंड के धर्म
पिंडाकार भार स्थूलता अग्निके विवे भासते हैं जैसे आत्मा देह अविचारते एक जैसे भासते हैं आत्म धर्म वेदनता
आनंद देह विवे भासते हैं देह के धर्म स्थूलता कृपा तदिक आत्मा विवे भासते हैं विचारते कदाचित ते से नही
भासते हैं भिन्न भिन्न भासते हैं तिस देह अरु आत्मा का समान सुख दुःखित भाव के सा होवे किस प्रकार सत्य
होवे पर कहने कों नही समर्थ हो जाता है १० यावत्पञ्चावयवोऽयमिथः संगमि तौ कथम् कथं स्थूलोऽरूपः स्यादणुः
स्थूलः कथं भवेत् ११ जो आत्मा असंग स्वभाव महासत्त्व जो देह स्थूल है सो परस्पर नही मदी मिले सो ते मध्य सो के
से संग को प्रापत होवे कैसे स्थूल अणु होवे कैसे अणु स्थूल होवे आत्मा देह का संग ही दुर्लभ है एक तौ अति दु
र्लभ है ११ एकोदये द्वितीय स्पन सत्ता दिन रात्रयोः ज्ञानना ज्ञानता मे तिच्छाया नायाति तापताम् १२ जैसे
दिन रात्र की परस्पर एक तान ही कहते दिन के उदय होत संते रात्र की सत्ता नही होती रात्र के उदय होत सं
ते दिन की सत्ता नही होती जैसे ज्ञान अज्ञान स्वरूप नही होता कृपा धुप नही होती १२ सद्रूपना सद्रूपते
विचित्रा स्वपि दृष्टि मना गपिन संश्लेषः सर्वग स्यापि देहिनः १३ जन्म विनाशादिति चिन्तयती होत संते भी।
सत्त ब्रह्म अस्मत् देहादिरूप नही होता है सत्त जो देह का अधिष्ठान आत्मा तिसका अधिष्ठान देहादिकों साथ यो
उभी संबंध नही १३ देह न देहिनः कायिक मल सवधारिणा मना गपिन संश्लेषा ब्रह्मणो देह सत्तया १४ देही
जो आत्मा ब्रह्म स्वरूप है तिसका देह के साथ कदाचित भी थोडा भी संबंध नही काहेते संबंध नही देह कल्पना
के अधिष्ठान सत्ता स्वरूपता करके १ जैसे कमल का जल के साथ संबंध नही ते से १४ तद्वत्तस्याप्यनहत्ते
रस्य रस्ये ववायुतः जगत्तरा मापञ्च सुख दुःखि भवा भवो १५ मना गपिन सत्ता हत सत्ता निर्वृत्त भव जैसे वायु वि

कहा सो
वेन

तं स्थित भी है अंतर संगताने नही स्थित है वायु के दोष धूलिलेप वृत्तादिकों का कंपनादिक अंतरविले
 नही है न तैसे देहादिकों विले स्थित भी है आत्मा सत्त्वता संगतानिर्लेपतादिसंभावने नही स्थित है देहादि
 कों के दोष जगत्तरण प्राप्त सुख दुःख ऐश्वर्य अनेश्वर्य आत्मा विले अल्प भी नही है न तिसने तं सुखी हो देहा
 म स्थितो देह तथा पुंघुः पातो यात महाभ्रमः १६ दृश्यते केवलं ब्रह्मण्यः पृथ्वी चिचयो यथा देहात्म दृष्टि करके स्थि
 ३ त भी है अचेतन गति पदों तिनो फेर चटुना इत्यादिक महाभ्रम १६ ब्रह्मात्म दृष्टि करके ब्रह्मा विले जल विले तरंग समूह
 जैसे ब्रह्मात्र देही मा है आत्मा सत्त्वता जीवित्वात्मानुभव नही है १७ देह यंचुं पयससा मा ग्राह्य विरि स्थित म दे
 ह यंत्र कों आत्मा ही ज्ञात तत्त्व विले अनुभव कर ता है को हेतु आत्म सत्ता कर के ही देह यंत्र जीवता स्थित है १७ जैसे जल
 अपनी सत्ता मात्र तं तरंग भाव कों अनुभव कर ता है आधार स्थान ने नाउ यथा हो भवता भवः सदा देः प्रतिबिंब सत्तया
 देहे न देहिनः जैसे प्रतिबिंब का जो है जलादिक आधार तिसके हिलने कर के हो भवता सने सदा दिकों कों अल्प भी
 हो भव नही तैसे देह कर के चिदाभास कों हो भवता सने भी देह साती कों हो भव नही सम्पद छे यथा भूते वस्तु ने वाभिजायते
 १८ स्थिति ईदमयोः ज्ञान विभ्रमो लय मेति च भली प्रकार दर्शन कि ए हो त सने परमार्थ वस्तु आत्मा विले ही स्थिति चारों
 ओर होती है देह स्वरूप अज्ञान विभ्रम भी लय कों प्राप्त होता है देह देह वतो र्ज्ञाना यथा भूतार्थयोः स्थितिः २० सत्ता सत्ता
 त्तिको देहि दी पदी पदार्थयोः देह अर देह साती जैसे है तैसे यथा र्थ ज्ञान तं देह की असत्ता स्वरूप स्थिति प्रकर होती
 है साती की सत्ता स्वरूप स्थिति प्रकर होती है जैसे दी पदार्थ की सत्ता प्रकर होता सने अंधकार की असत्ता प्रकर होती है ।
 असम्पद र्शिनो देह स्वावर्त परिवर्तनेः २१ अज्ञः प्रज्ञाः स्फुरन्ती हते मोहाजुं न पादपाः अज्ञानी कों देह के वारं वार आडुले
 जा उले कर के अंतर अन्तर्निःसार पदार्थ ही स्फुरते हैं जैसे सन्निपातादि मोह कर के सो प्रसिद्ध अर्जुन वृत्त अंतर अन्तर्निःसार
 रते हैं अपर्णा लोचितात्मा र्था अपरामृष्ट संविदः स्पन्दने चेति तो मुक्ता स्मरण वन्मूढ बुद्धयः मूढ बुद्धि जो है सो अचेत
 न देह कों ही आत्मा जानते हैं सो चेतन ज्ञाने छोड़ हो प रण जैसे निष्प्रयोजन हिलने है तैसे हिलने है नही विचारते है
 वन्मोत्तरूप अपना प्रयोजन नही विचारते हैं अहं चेतन्य स्वरूप आत्मा कों अनात्मा दित चित्तत्वा जाडाः सर्वे खवा
 युभिः २२ यत्र तत्रोदिता ज्ञाना रत्नि प्रस्फुरन्ति च तत्का एादिकं सर्व माह रत्नि यजन्ति च २३ को र्झां का को मूढ बुद्धि जेव
 चेतनारहित है नव के से तोलते हैं अरव्य वहार करते हैं तिसका उत्तर कहते हैं चेतन्य परमानंद कानही कि आह अत्र
 भव रूप आत्मा दन जिनो ने मो सब जउ है मुत्वा दिक छिद्रां विले जो पवन है तिनो ने हिला उले कर के जिस स्थान वि
 रें वश करीते है मूढ बुद्धी जिस स्थान विले ही तोलते हैं तत्का एादिक सब ल्या वं मेरे छोड़ते हैं इत्यादिक वायु य
 वहार करते हैं जैसे पाले बंज छिद्र पवनों कर के कीच कीच पराष्ट कर ते हैं तैसे २४ सदा ह स्पृशी रूपा द्यात्मा

प्रतिबिंब कों

होये नञ्
 द्यते यस्ते दी
 पात तमः

की

निकाल
भावा
६
१२

13

२३ नरलाङ्काः जडाः सन्तः स्फुरदभाभं स्फुरदभाभं सन्तः २५ सविहारगमापायामहोवाइवदुर्धियः" शाहस्परी
 रूपारिविषयाकेलाभकरकेही आपकों धनवानेकतार्थमनतेहैं वेडीजोहै विषयसकीभोगेका सोई है मदिरोजे
 सी उन्मजकरणेवाली जिनकों तरेगों जैसे चंचलहन अंगजिनके जडही विद्यमान चेतनजैसे फरतेहैं। जैसे
 हीकेमहाप्रवाद अचेतनभीहैं विहार आउणा जाउणा दिचेखा सहितहोतेहैं तेसेडुर्बुद्धीहोतेहैं सर्वेषामेवचेतेके
 स्थितैवैषाचिदवया किंतु बोधसशादस्याः पराकृपणतांगताः सबजोएहडुर्बुद्धीहैं इनकीभीआत्मचेतनता आ
 विनाशिनी आनंदरूप स्थितेहै तदभी विषयभोगनिमित्त बडीकृपणताकोप्रापतेहैं एहेन कोहेते इसचेतनकेअज्ञा
 नते आसमनतयोदात्ताहकारहेतेयथा सन्दरात्रार्थमेवमुदृष्टानेनार्थकारिणः अज्ञानीमें जोआस प्रकरहे
 तेहेन सोउदरअग्नीके संदमात्रनिमित्तहीहैं अममर्थकरणेवालेनही जैसे लुहारकेचर्मपुटकेअन्धस अग्निमात्रके
 हीप्रज्वलितकरतेहैं तर्जनगर्जनमृदुहनुदेणुआदि १६ अघनेमरणधेवचिह्नोपपरिवर्जितम् मृदते तर्ज
 न अरगर्जन सुगमिहो मरणनिमित्तही तर्जनकहीएभयकरशब्द चेतन्यआत्माकेबोधकारणशब्दनहीसुणी
 ताहै जैसे धनुषदंडकेचिल्लते भयकरदंकारशब्दहीसुणीताहै फलभोगोपियोमहीनदरण्यतरोरिव २० तस्मिन्निष्प्र
 मलयत्रिजलाफलदकेयथा तेनयत्संगमः सम्यात्स्यात्तनाभुविजडुल ३ जोमृदते सासारिकफलकालाभहोता
 है सो वनकेरुतेजैसेहोताहैफललाभतेसा तिसचिह्नैजोदिशामकारणा सोतप्रशिलापदरे विरेविश्यामजैसा दुःखका
 कारणहै तिसमृदकेसायजोसंगमहै सोवर्षहै जैसेवनभूमिकाचिह्नै उपरसें कटिआजोहै वनका मुंड तिसकासंगमहै ते
 साहै तदर्थयत्तकिंविनहोमलजुडेहैतम् तस्मिन्पदार्थमेदततमकेकिंनकदमे ३१ अज्ञानमापदोनिष्ठाकारिनापद
 जानते ३२ तेनसाहै कथायत्रलोलेयाहानमम्यरे मृदकों जोउपकार किष्वाहै सोआकाश सेरिआ करकेताडित कि
 ओहै तिसमृदअधमकों जोदिआहै सो चिकडविले किंउन सरिआहै ३१ तिसकेसाय जो ऊक कथनकरणाहै
 सो अंवरविरे जतेकों सदाहै अज्ञान आपदाकी स्थितिभूमिकाहै अज्ञानीकों कोन आपदानहीप्रापतेहोतीहै
 सप्रनाडः एवम अज्ञानीपात्रहै ३२ इयंसारसरणिर्वहजप्रसादतः अज्ञेयोप्राणिदुःखानिसखानविहटानिच प्रनःप्रन
 निवर्तनोयंगप्रभावल ३३ एहससारमार्ग अज्ञानिआकेप्रसादकरकेचलताहै अज्ञानीअुभाअुभकर्मअुहंका
 रकरकेकरतेहैं तिसकरके स्वर्गएथिवीपाताललोको आउतेजाउतेहैं अज्ञानीकोंहोरहडुःखसुख
 वारंवारनिवृजहोतेहैं जैसे युगंवालेजोहैरयादिक तिलेहोने पर्वतलेचुनहीसकीहै तेसेअज्ञानीने सु
 खडुःखनिवृत्तिनहीलवसकीही शरीरधनदाशदावास्यासमनुवधातः ३४ इहेडुःखमत्तस्यनकदाचनशाप्यति
 शरीरधनसौपुत्रादिकोविले जो प्रीतिकों भलीप्रकारबांधताहै तिसअज्ञानीकाएह डुष्टडुःखकरा चितभीनहीशों

का

जुगले
वाले-

तर्जुन है अनात्मनिशठेदे आत्मभावमुपेयुषि ३५ असहो धर्ममीमांसा कथं नामापि नृपति आत्माते भिन्नजो है
दुष्टदेहविते आत्मभावको जो प्रापतहोता पहीमेरा आत्मा है एहजाणता है तिसविते भुंतिज्ञानमयी माया कि
सप्रकारकरके नष्टहोवे सोप्रकारप्रसिद्धकोईभीनही दुर्भावस्वचितधियोवस्तुन्यास्यदुर्मतेः अवस्तुनिसनेत्रसाल
ठतश्चपदेपदे विषमयुतेवन्दादामोदः असमादिव ३७ कएकश्रेणिपयसोदूर्वाकु ३४ वस्यलात दुष्टभावोकरके भ
लीप्रकारव्याप्राहोईदे बुद्धिजिसकी सहस्रदेखनेविते अन्यहै दुर्नुहीहै असहस्तविते नेत्रासहितहै असहस्तकोईहै
देखताहै इसीति पगपगविते गिडताहै महादुःखपावताहै उसको चंद्रमाते वितेउतपतहोताहै जैसे पुष्पते सुगंध
उत्पतहोतीहै जैसे दूधतेकं जापतहोताहै जैसे स्थलभूमिकाते दूर्वाकुप्रकरहोताहै परिपूर्ण आत्मानंदते भ्रमक
रकेडुःखकोप्रापतहोताहै देहशाल्मलिभोगितो मनोमानदुःखदुःखलाः ३८ अतस्यापाः प्रसयनेसहस्रादिवशालयः अ
ज्ञानीकेदेहस्यसिमलवृत्तविते सर्पिलीरूप आशावसतीआहो सोरागलोभदीनतादि रूपसर्पको सुविग्रहो अथ उत्पति
सकी वासनरूपजो हाथीहै तिसंगलरूपआशा दुःखको सुविग्रहो जैसे भलीप्रकारहलकरके समकियाजोहैते तिसते
धानउतपतहोतेहै नरकश्रीरिहाज्ञाने दुष्टतयालवेष्टितम् ३९ परिपालयतिप्रीतामदूरीवारिदंयथा नहीहैज्ञानजि
सको सोकहीए अज्ञान केसाहै अज्ञानन पापरूपसर्पनेवेदिआइआ तिसको नरकलक्ष्मीप्रसन्नहोई बलगतीहै कवमे
रेपास अज्ञानीआवे जैसे मोरणी मेघकोबलगतीहै नेत्रलोलालिनीलोलास्फुरिताधरपल्लवा ४० सूर्यार्थमेवविकसा
त्यङ्गनाविषवल्लरी स्त्रीरूपजोहै वितेवेल सोसूर्यकोमारणेनिमित्त प्रफुलितहोतीहै कैसीहै वेल नेत्रहीहै चंचल
भ्रमरजिसके चंचलहै ओहूरूपप्रजिसका ऐसीचंचलहै अतस्यहृदिसद्भाववितेपेलवपल्लवः विद्योतेपगतच्छाया राग
विद्रुमद्रुमः तरुच्छदलसद्रुमः शस्त्रजालरदोत्पुलकः ४२ ज्वलतिहेषदावाग्निर्हृन्मरोकायतापदः जैसेश्रेष्ठभूमिकावि
तेसुंगानामावृत्तहोताहै तैसेही अज्ञानीकेमनरूपश्रेष्ठभूमिकाविते विषयरगरूपसुंगंडुष्टवृत्तहोताहै कैसाहै लच्छ
संकल्पहीहनछोटेपत्रजिसके छायातेरहितहै वृत्तपत्ररूप फरोजोहै जोष्ट तिनंविखे रोभतेहै आसधमजिसके
शस्त्रजालकेसिकटकरशवृकरतेहै दंतही बलतेकाष्ठजिसके द्वेषहीहै दावाग्निजिसकी ऐसाजोहै रागरूपसुंगार
दा सोमनरूपजो मातु निर्जल अरण्य तिसविते बलतोहै मानोभस्महोताहै शरीरको संतापदेताहै अतमात्सर्यम
नसिपरापवदनछदा ईर्ष्याकमलिनीचिनाषट्पादविलसत्पलम् अज्ञानीका जोमनहै सोही मानससरोवर मत्सर
रूपजलकरकेपूर्ण तिसविते ईर्ष्या कमलिनी अतिविलासकरतीहै कैसीहै परनिंदाहीहै पत्रजिसके चिंताही
है भ्रमरजिसविते प्रतिजन्मप्रसंष्टाशुःखकल्लोलसंभ्रमम् ४४ जडमेवसमाभ्यतिपुनर्मरणवाडवः जैसे समुद्रजल म
हातरंगवेगोंको वेलोसमीपजाउणेकरके निवृत्तकरताभीहै वडवाग्नीकोनिवृत्तनहीकरसकता वडवाग्नीसमुद्रजल
कोप्रापतहोताहै तैसे जडजोहै आत्माका अज्ञानी सो जन्म जन्मवितेप्रापतहोतेजोहै चोरदुःखरूपमहातरंगवेग ति

उत्पति करति

मर्यादा-

निर्वाण
भाषा
५०
१४

कहिये
अल्पतराग

होके निवृत्त करमा भी है जपतप होम औषधां दिक उपायां करके मरण को निवृत्त करणे को नही समर्थ होता है जइ को ही ज
मज्जन्म विखे फेर फेर मरण रूप बडवा नी प्रापत होती ही है जन्म बाल्य वृद्धावस्था युवावस्था को प्रापत होती है जइ को ही ज
मृदु स्वेव पुनः पुनः जन्म बाल्यावस्था को प्रापत होता है बाल्यावस्था युवावस्था को प्रापत होती है युवावस्था वृद्धावस्था को
प्रापत होती है वृद्धावस्था मरणवस्था को प्रापत होती है मृदु को पेसी दशाचारं चार जन्म जन्म विखे होती है जगज्जीर्ण रचते
स्मिन्न जा संस्तरि पया ४८ मज्जाने मज्जाने रतो यत्र कलश तांगतः जैसे अर्द्ध विखे बांधि आ जो दिंजो है सो भविष्या ऊजा ज
ल को डकर डूबति आ है होर जल ले करके उपर आ उति आ है ते से जगत् रूप उराणे अर्द्ध विखे राग द्वेष रसी करके वडा अज्ञा
नी हिंदु रूप ऊजा प्रारब्ध कर्म फल भोग कर मरता है होर कर्म फल के भोग निमित्त जन्म धारता है अर पाप कर नर क विखे
डूबता है पुण्य कर स्वर्ग उपर चडता है यदेव गोष्पदा परे तपियः पेल व जगत तदेवाऽपार पर्यन्त मगाध मम हात्मनः । गो का जो खु
र है तिस को भी नही परण करे ऐसा जो अलप जल है तिस के जैसा जो जगत् जानवान की बुद्धी को अति तल सुगम लतने योग्य
भासता है सो ही जगत् अमहात्मा जो देहात्म दर्शी है तिस को पार लार रहित अनंत गंभीर नही लखने योग्य भासता है धियो दृश
इताऽजस्य दीर्घे जवर को रगत ४८ न प्रयान्ता परं पारे चिद्व्यापन्न रादिव अंध जैसा जो अज्ञानी है तिस कि आ जो बुद्धि आ है सो
संसार समुद्र का जो पार है परं ब्रह्म अपर नही है परे को ई जिस के तिस को नही प्रापत होति आ है काहे ते उदर छिद्र के पोखरण आ
संगे बंधन वशते जैसे पतिणि आ पंजर बंधन वशते पंजर ते पार को नही प्रापत होति आ है न भाव मात्र परावृत्त वासना भार नाभयः
४९ सखी कर्त्तव्य न शक्य ते जन्म चक्र स्पने मयः विषय मात्र विखे व्याप्र जो वासनाहन तिन के भार करके आक्रान्त हन हृदय रूप ना
भि जिन कि आ पेसि आ जो जन्म चक्र कि आ इन्द्रिय रूप धाराहन विषय रूप चिकु विखे दु वि आ है सो विषयों ते निकाल कर ।
शोध नही सखी ति आ है असे नेन्द्रिय र्था रगान्म गयुणाननुः ५० संसार राप आसी ली हर आ मिष पिण्डु वत् अज्ञानी जो है शिकार
री सो शिकार के रागेते इन्द्रिय रूप जो पृथु वाज है तिन के पालने निमित्त संसार वन विखे अपना शरीर मांस पिंड जैसा बिछाया है
सर्व काल सर्व देश विखे अज्ञानी शरीर विदेकर के भी इन्द्रियों को प्रसन्न करता है भूत शैल मयी दृष्टि र्मनां सल वमात्रिका ५१ मोहा
त्सल द्यते चित्र पदार्थान्न रज्जनः जयत्प नत्प सकल्प कल्पना कल्प पादपः ५२ भूत मयी जो दृष्टि है मनुष्य पञ्चादिक प्राणी जि
स विखे बडत भासते हैं सो वस्तु विचार ते मांस कण मात्र है शैल मयी जो दृष्टि है हिमवान् विंध्य मलय इत्यादिक पर्वत जिस वि
खे बडत भासते हैं सो वस्तु विचार ते मृत्तिका कण मात्र है सो मोह ते आत्म तत्त्व के सर्वत्र अदर्शन ते पुरुष माता आता हिमवान्
मलय इत्यादिक लपना करके लखी ते हैं ५३ अनेक विचित्र शब्दों कर अर अनेक विचित्र अर्थों करके अनंत हैं रंग जिस के
पेसा जो है बडत संकल्प रचना रूप कल्प वत् जय को प्रापत होता है असत शब्दों अर्थों करके सर्व कामना के पूरण कर ले की
समर्थता ते सब से अधिक महिमा करके वर्तता है ५४ अज्ञाना प्रसृता यस्माज्जगत्पारं पराः यस्मिंस्तिष्ठन्ति राजन्ते विशन्ति
विलसन्ति च ५३ विचित्र रचने पेता भू रि भोगि विहंगमाः यत्र जन्मानि पर्णानि कर्म जालं च कोरकम् ५४ फलानि पुण्य पापानि मज्ज

दोविभवप्रियः अज्ञानेन्दुयेनैतायोविशेषधयः स्मृतम् ५५ संसारवनवलेखित्यंशोभामुपागताः अनंतसंकल्पकल्पवृत्तौकर
 व्याप्तसंसारवनवलेखिते जिसतेविलेकीरूपपत्रपरंपरा विस्तारकोप्रापतहोईहै जिसवनवलेखिते भोगीरूपवृत्तपत्ती विचित्र
 रचनायुक्त स्थितहोतेहैं प्रवेशकरतेहैं विलासकरतेहैं शोभतेहैं जिसविलेअनंतजन्मपत्रहैं कर्मजाल कलियाहैं ५६
 १७५ पापफलहैं ऐश्वर्यलक्ष्मिओं मंजुश्रीहैं इसवनवलेखिते स्त्रीशून्य औषधिलता अज्ञानचंद्रोदयकरके प्रकटपर
 मशोभाकोप्रापतहोतिश्रींभईयां ५५ जन्मजालकलाएलीलमः कालकृतोदयः शून्यादितामाहोषो जयत्यज्ञानचंद्रमाः
 ऐसाजोअज्ञानरूपचंद्रमाहै सोजयकोप्रापतहोताहै केसाहै जन्मजालरूपकलाकरकेएलीहै विवेकसूर्यकेअस्तसमय
 होतसंते तमोयुगसमय विलेकियाहै उदयजिसने प्रपंचसेअन्यजो ब्रह्महै जिसविलेप्रकाशमानहै कामक्रोधादिहो
 होंकास्वामीहैं जैसेप्रसिद्धचंद्रमा कलाएली सूर्यकेअस्तकालविलेअन्यआकाशविलेप्रकाशमाहोषा कहीपरात जि
 सकास्वामीहैंतैसे अज्ञानेन्द्रोः प्रसादेनवासनामृतशालिना ५७ तर्पिताशाचकोरणचित्ररत्नरसेषिणा राजहंसविलासिन्यः
 प्रालेयशिशिरादिकाः ५८ भौतिकान्त्रकुशुदमोलोलोचनघट्टाः धमिल्लनिमिरोल्लासालसपण्डुपयोधराः ५९ रामाज्योरा
 जनेतमोर्वेणविजम्बितम् स्त्रियांरूपजो रात्रिओंहैं सोअज्ञानचंद्रमाके प्रसादकरके जोशोभतिश्रींहैं सोदेखनेवालेप्रह
 षांकीजोमूर्खताहैं सोहीस्त्रियोंकी शोभाकारकरकेबदलीहैं स्त्रियांशोभाककुनाहीविचारदृष्टिकरकेभासतीहैं केसाहैअज्ञानचंद्र
 इमेकाप्रसाद वासनारूपअमृतवालाहै तपतकिपहैंआशाचकोरजिसने चित्ररूपजोरत्नहैं सूर्य जिसकाजो विषयों
 का स्वादरूपअमृततिसकोंचारता प्रसिद्धचंद्रमाकीभीशुक्लपदविलेएलीता सूर्यमंडलके अंतरस्थित अमृतकरकेहीहोतीहै
 स्त्रियोंपरत्रियोंकेसिओंहैं राजहंसजैसेगमनविलासवालिओंहन प्रसिद्धरात्रियोंभीराजहंसोंकरकेशोभतिश्रींहन होर
 केसिओंहनस्त्रियोंहन जोसजैसेशीतलंगवालिओंहैं रात्रियोंभीजोसकरकेशीतलांगियोंहन होरकेसिओंस्त्रियोंहन भौति
 रूपजोसुंदरकुमुदपद्महन तिन्हाकरकेशोभतिश्रींहैं चंचलनेत्रहीभ्रमरजिनां विले केशपाशरूपअंधकारकी
 शोभाजिन्होविले शोभतेहैं पांडुवर्णपयोधरस्तनजिनके प्रसिद्धरात्रिविलेपयोधरमेहजागने पयःकहीपडुग्ध
 और जल दुग्धकेधारणवालेस्तन स्त्रीपदविलेजलकेधारणवालेमेहरात्रिपदविलेजागने ५९ आषाढमात्रमधु
 रत्नमनर्थसज्जमाद्यनवजसखिलस्थितिभंगुरतम् अज्ञानशाखिनश्निप्रसूतानिरामनानाकृतानिविपुलानिफलानितानि ६०
 शक्तिमोहोपायेनिर्वाणप्रकरणोमोहमाहात्म्यनामषष्ठः सर्गः ६ हेरामविषयोविलेजो अविचारकरकेभासती मधुरताहै
 और अंतविलेअनर्थकारणता किसीदेशविलेहैं किसीदेशविलेनहीं पददेशपरिच्छिन्नता ब्रह्मलोकपर्यंतसर्वलोकस्थि
 तिओंविले विनाशशीलता परसबअज्ञानवृत्तकियेसेनानाकारमहाफलप्रसिद्धपसरेहैं जिसतेतिनोंकामूलअज्ञान
 कारनायोग्यहै ६० इतिनिर्वाणप्रकरणभाषायांमोहमाहात्म्यनामषष्ठः सर्गः ६ श्रीवसिष्ठउवाच यन्मृतावलितारत्नभू
 सिताभान्नियोषितः मदेन्द्रावुदितेक्षकामहीराणीवोर्मयः १ सचनो विभूतिश्रीविलेस्त्रियोंही अज्ञानकिशोरकामकिशोरमहा
 विभूतिश्रीहैं सबविवेककिशोरएलीवालिओं अनर्थगतविलेगिडाउनेवालिओंहैं इसआशयकरकेप्रथमस्त्रियोंकाहीवर्ण
 नकरतेहैं वसिष्ठमुनी हेराम मधुरपंचंद्रमाके उदयहोतसंते लोभकोप्रापतहोताहै कामरूपतीरसमुद्रकिशोरहरिओंजैसेसिओं

निर्वाण
भावा
२०
१५

केश

वेला=

स्त्रियां जो भासति हैं सो अज्ञान की विभूति है सतहावने द ७ अर्थ श्लोक विलेख तदज्ञान विजृम्भितं परुषादहे इसके साथ
सबनं श्लोक दो संबंध जानना १ सोवर्णाभोजकोशस्थ तोला लिपट लक्ष्मियम धारयति दशः स्त्रीणां कपोलमलदीपिता २
स्त्रियां जो नेत्र कपोलस्थ लविलेख पीव विलेख जैसे ऊट्टे २ स्वर्ण कमल मध्य विलेख चंचल जो भ्रमर समूह है तिसकी शोभा
कों जो धारते हैं सो भी अज्ञान की विभूति है ३ उद्यानवन खण्डे पुष्पमौक्त मदा मयौ हृद्याः समन सो भाति दासा इव मनोभवः
३ वसंत विलेख वाग विलेख वन खंड विलेख पृथिवी विलेख हृदय प्रिय सुंदर कामियों को उत्पन्न कि आहै उन्माद जिनों ने ऐसि
आं प्रसन्न मन तालि आं स्त्रियां अरु पुष्प काम देहा समानो जो भासते हैं सो भी अज्ञान की विभूति है ३ कृष्ण दृष्ट गोमायु को
लेखक चलाङ्किकाः स्त्रियः समुपमीयन्ने चन्द्रचन्दनपङ्कजैः ४ व्याघ्र पृथग्निदुःस्मान् इनके शासन रूप है ५ अंग जिनों के ऐसी
आं जो स्त्रियां हैं तिनकी उपमा चंद्र चंदन कमलों आल दिई ती है कवी को ने चंद्र जैसा मुख चंदन जैसी शीतल उल्लासाल
विलेख कमलों जैसे नेत्र हृष पाद है ४ सोवर्ण कुलशाभोज कलिकामा तलिंगवत दृश्यते स्त्रीतन श्रेणी रक्त सति सुगन्धिका
५ रक्त की दुर्गंध ही है सुगंध जिसकी ऐसी जो है स्त्रियां ही स्तन पंगती स्वर्ण कुंभ कमल कली मोह कड़ी जैसी कामियों ने जो
देखी ती है सो भी अज्ञान की विभूति है ५ सायनेन्दु निस्पन्द मधु विम्लासवदनेः ओष्ठाभिधो मांसल तोला ला क उपमीयते द नारी
आका जो छनामा जो मांस खंड है लालां करके जुक्त सो सायन चंद्रका अस्त मखीर मंदर स समान लालां विलेख जैसा कनेरी=
ल जो छ है एह उपमा दिई ती है ६ अल्पा ल्पाष्ठी वराकार भुजा कुरास्थि शक्रवः महाबाहुलता शब्दे वर्णने क विभिः प्रभैः ७ हल कि
आं हल कि आं जो गंढि आं हैं तिनो जैसा आकार जिनका ऐसि आं भुजा नाम वालि आं कठिन हाडि या रूप की लजो है सो महाबा
हुलता है सो ऐसे अष्टाष्टां करके कवी को ने वर्णन करी नि आं है ७ कदली स्तम्भ संभार संदरी भिसया भूत कुच शोभा चितान नरा तो
रणालि विराजते ८ कदली स्तम्भ ही है पहां दी रचना की सामग्री जिनों की मानो विधाताने को मल के ले दे लंभ ही पहर चेहे में
जिनो के ऐसि आं जो सुंदर स्त्रियां हैं तिनो ने धारी जो है करि विलेख कांची लडवटिका सो के सी है स्तन शोभा के योग होता है आ
नंद जिसमें जैसै स्तन शोभा में देखे लो वाले कामियों को आनंद होता है जैसा ही आनंद कांची देखे लो वालियों को होता है काम
मंदिर की तोरण माला रूप कांची जो विराजती है सो भी अज्ञान की विभूति है ८ आपाते मन्द मधुरा मध्ये हृन्धानुबन्धनी शीघ्रावसा
न विरलान्दमी शय्य भिवाञ्छते ९ आरंभ विलेख मंद बुद्धि आं को मधुर भासती है अथवा अविचार दया विलेख अल्प मधुर भासती मध्य वि
लेख खरच करे समय विलेख राग देवादि के हैं १० बंधन रूप फल जिसका सिता ची है दय जिसका विरले लो को विलेख होती है ऐसी लक्ष्मी
जो चाही ती है सो भी अज्ञान की विभूति है ९ मयु पेति मति दुःखं सुखं च शतशः खताम् ३ः खशाखास्तु जायन्ते नाना कर्म फलाः स्त्रियः १०
जो बुद्धि दुःख को प्रापत होती है अरु जो सुख सैं करि आं शाखां को प्रापत होता है जो शुभाशुभ नाना कर्म फलां वालि आं लक्ष्मी आं
दुःख रूप शाखा वालि आं उत्पन्न होती हैं सो भी अज्ञान की विभूति है १० बहु जाल हाता काराः कारणमिव रज्जवः दहृदः सदृशा
वाचः प्रतान गहने स्थिताः ११ लक्ष्मी आं अज्ञान कि आं विभूति है लक्ष्मी है फल जिनका ऐसै जो कामना वाले कर्म हैं तिन कर्मों विलेख
प्रवृत्त कर ले वाले जो कर्म कांड वचन हैं सो भी अज्ञान की विभूति है इस आशय करके कहते हैं वसिष्ठ मुनी काम्य कर्म विस्तार रूप
जो वन है तिस विलेख स्थित जो है कर्म कांड वालि आं सो भी अज्ञान विभूति है वैसि आं हैं वालि आं लता जो से बांधे जो है अनेक फ

लकामनाजालनिर्णयकरनाहै आकारजिनका इसीमें सकामकर्मकरणवाले जोहैमनिनके संसाररूपवंधीत्वाने
विवेकबंधनेनिमित्तरज्जुजैसेसिंधुहै जैसेजोएलातरंगचंचलतासहितहै जैसेरागचंचलताप्रधानकर्मकांडवर्णियाहै ॥ सतता
मोहमिदिकाकार्यसारविसारिणी यमुनाप्राद्वीवैतिनिमिरणामलाचिरम् ॥ देहाभिमानरूपजोमोहहै सोहीनिर्णयमिदिकोहै मे
होकीधडहै प्रवृत्तिकार्यरूपजो जलधारावरत्नाहै तिसकरकेविस्तारकोप्रापतहोई मुक्तानीपुरुषकोप्रापप्रापतहोई अंधकारके विष
योविवेकप्रवृत्तकरवतीहै जैसेयमुनानदीस्वतः प्रणमवर्णा चर्चाकरतविवेकरजकरकेमलिन रात्रिकेअंधकारकरकेअमृतप्रणामबा
हतीहै जैसेमोहमिदिकाबहतीहै ॥ कट्टुकुतानः करणानासखविशारदः वहतेदिगंतस्त्रेदेजन्मप्रतिविचारसः ॥ भोगाविवे
प्रवृत्तजोहोताहै तिसकारण विषयाविवेकतथाप्रपौत्रादिकोविवेकधताहै केसाहै राग अविचारकरकेअनेकसत्वाशोकउत्पन्नक
रणविवेकचरहै परिणामविलेडुःखदेनेनेदेषमत्सरचिंतादिकोकेउत्पन्नकरनेतेरुताजैसेहोवैतेसेकोडाअंतःकरणकोकरता
है जन्मरूपविषलताकारमजैसापत्रकेबधानेवालागवधताहै ॥ व्याधुनजर्जरकीर्णजनतापरराजयः स्वकर्मपतनावाञ्छिताना
वकरेणवः ॥ अपनेऊकर्मरूपपवनकुलतेहै केसेहैपवन रोगादिकोकरकेजीर्णजोहै म प्रवादिकपरिजनसमूहरूपपत्र
पंकनिआसेगिडाइदियाहै जिनेने जोरकेसेरूपपवन रुडकेरेण जैसेविवेकहृष्टीकेरुणेवालेअनेकविक्षेपजिनावि
वै ॥ कालः कवलिताननूजगमकफलोपयम वृक्षसचारजठरः कल्यारपिनदप्यति ॥ व्यापदेम अनंतजगतहृदयफलजिसने
पेसाभीकाल भद्राणीलेहै उदरजिसकासो काल अनंतकलंगकरकेभीनहीह परहोताहै मरभीसराजन्मजन्मविवेककालकेसु
खविवेकप्रवेशहोताहै ॥ मोहमारुतमापीयत्वाविषमचारिणः स्फुरन्तीहाहयश्चित्राः शीतलाचलदीप्रयः ॥ शीतलसंतापरहित अचे
ल ब्रह्मके प्रतिविवेकप्रकाशजोजीवहै से संसारविवेक विचित्रसर्पदीदेम काहेने जिसने मोहरूपपवनकोपीकरके स्थि
तहै बारबार कुटजाउती अनेकदेहरूप त्वाजिनकी कुटिलगतीहै जैसेसर्पशीतल अचलचमकवाले पवनकोपीउतेहै ॥
गारवारकेचुककुरती ऊरितगति चलतेहै जैसेजीवहै ॥ चिंता पिशाचुपहताविवेकेन्दुदयविना तमसवनिरालोकायात्रियो
वनयामिनी ॥ अज्ञानिजीवोंकी युवाअवस्थापररात्रि अज्ञानांधकरकेआत्मप्रकाशरहित विवेकरूपचंद्रके उदयविना चिंतापि
शाचीनेपीडितकिईहोई मोहसाधनहीनदृष्टाहीजाउतीहै ॥ जिह्वाजर्जरतामेतिप्राकृतानुनयज्वरैः पद्मकोटरकोणस्थमपिसत्रे
हिमैरिव ॥ पांमरजोस्त्रीपुत्रादिकक्रोधीहोपदेम तिनोके क्रोधकेनिवृत्तकरणेनिमित्त अनेकमिथ्याकथननेजोहोतेहै म संता
पतिनोकरकेजीभजीर्णताकोप्रापतहोतीहै जैसेकमलमध्यकेकोणविवेकनाडीस्त्रकरकेटहवहजोहै दल जिह्वाजैसा सो खर
फाकरकेजीर्णहोताहै ॥ दुःखशोकमहाहीलः कष्टकण्टकसंकटः सहस्रशाखायातिहारिद्राहृदशान्मलिः ॥ दरिद्रताहृदह
सिम्मलवृत्त सहस्रशाखाकोप्रापतहोताहै दुःखशोकहै महागंदिआजिसकिआ कष्टरूपकडेकोकरकेभरिआहै ॥ अन्तःसूत्रो
व्रिधसचित्रचेमरुगलयः साद्याबहुलयामित्यालोभोक्तोविवलुति ॥ एवंपृथ्वीत्वाकर्णभ्यास्फुरन्तीपरिनिष्पृथग् जराजर्जरमजारी
योवनाकुनिकृति ॥ सगवस्तुवैविध्यविना अंतरस्थ अहंकररूपकुचिआइकरके भगनहोआजोचितहै सोहीभयाचैत्यवृत्त प्रधा
नवृत्त तिसविवेकियाहैवरजिसने प्रेसाजो लोभरूपी उल्हपदीहै सोसाद्यारूपकुसुमपत्राविवेकधमताहै ॥ जरावस्थापरजीर्ण विही
है सो योवनरूपजोहै मूषक तिसको काटतीहै केसीहै प्रथमकर्णविवेककरके निष्पृथक्करके चारोंओर फुरतीहै भयतीहै ॥
निःसारक्रमशः क्रान्ताधराधरसमुन्नतिः तिंडीरपिण्डकेवेयस्सहिरायातिप्रहताम् ॥ अज्ञानतेही सृष्टि जगतदृष्टि पुष्टताको विस्तार
कोप्रापतहोतीहै केसीहै जगतदृष्टि साररहितहै क्रमकरकेरचनानिमित्तआरंभकितीहै पर्वताकी उचयाई जिसने जैसे बजकी
पिण्डिका निःसार क्रमकरके पर्वताकीजैसे उचयाईकाआरंभकरतीहै पुष्टताकोप्रापतहोतीहै ॥ आभासपुष्पधवलाजगत्पल्लव

कार

निर्गल
भाषा
१६

16

शालिनी सज्जालताविकसिताधर्मार्थफलधारिणी १३ व्यावहारिकसत्यतारूपलता विकसितभईहैं चिदाऽऽभासप्रकाशरूपजोष
षहैंनिनोकरकेउज्ज्वलहे जगतरूपजोपत्रहैंनिनोकरकेशोभतीहैं धर्मार्थफलकोधारतीहैं १२ सूर्यचलमहास्थानचंद्रसूर्यग
तात्कमगगनाकादनचारुधियोतिजगद्गुरुम २० जगतरूपजोमहामंदिरहैं सो अज्ञाननेधारीताहैं केसोहैं जगत मंदिर सुमेरुअ
दिकपर्वत बडेसंभहैं जिसके चंद्र सूर्यहैं ऊरोवेजिसके आकाशहैं कुत जिसकी पेसासंदरहैं चर २० संसारसरसिसारचरत्रि
प्राणघट्टादः शरीरपुष्करेश्वनश्चिद्रूपसपाचिनः २५ विलारवालाजोसंसारसरहैं तिसवितेंउत्तममएजो शरीररूपकमलहैं नि
नोवितें अक्षरस्थितजोहैं चैतन्यरूपरस तिसकेपीनेकोहैंस्वभावजिनका येसंप्राणरूपभ्रमरविचरतेहैं २५ नभोमार्गमहानीलकुहि
मैकान्नशालिनी भुवनोदरस्थानाः स्फुरत्यादिसदीपिका २६ आकाशमार्ग रूप वडा नीलमणिकरचितकिआजो कुत्रिम पृथिवीभा
ग तिसवितें शोभमान सूर्यरूपदीपिका विलोकीकेमध्यवितें अतिसुंदर प्रकाशतीहैं २६ आशातनुनिबडाझीजागतीजीर्णपक्षिणी स्व
वासनाप्राणाकेननिबडेन्द्रियपञ्जरे २७ आशातंतकरके दृढबडेहैं अंगजिसके ऐसीजोहैं जगतके अंतर्गत जीवसमूहरूप पुरातन
वृक्षपक्षिणी सो अपनिआवासनाकीलोककरकेजुकत इन्द्रियाकापजरदेह तिसवितें बडीभईजो सोभीअज्ञानकीविभूतिहैं २७ अना
तपतजालभूतपर्णपरंपरा स्पन्दनेमरुतासूक्ष्मासंस्तिवर्ततिश्चिरम् २८ निश्चर गिटुनेहन वासनाजालवाले प्राणीरूप पत्राकी परंपराजि
स्तेन ऐसीजोसंसारलता प्राणपवनकरके कंपितहोई चिरकालचंचलहोगीहैं सोभीअज्ञानकीविभूतिहैं २८ स्फुटः कतिपयकालप्रदृष्टाः
कुलशालिनः अधःकृतोपनरकपक्षाः शङ्काजिताक्षराम् २९ देव पातालवितें प्रकटहंसनेनिमित्त ब्रह्माने किए होरनरकरूपपंकचि
कड होतेभी अज्ञानी प्रकारहित असीमहाकुलीनहैं इत्यदिक अभिमानकरके दणमात्रकोईकाल जो बडतद्वर्षकोप्रापतहोतेहैं सो
भीअज्ञानकीविभूतिहैं २९ भुक्तेन्दुवणकलिका नीलनीरदशेवले सर्गमार्गसरस्वतः स्फुरतिस्सारसाः ३० नीलमेघहंशेशवालजिसवितें पे
साजो भ्रममार्गवितें स्थित स्वर्गरूपसरहैं तिसवितें स्थितजोहैं देवरूप सारसपदी चन्द्रखंडकीअमृत कलिकाको भोगकरके जो फु
रतेहैं सोभीअज्ञानकी विभूतिहैं ३० नानाफलालिमलिनावासनाजालमालिना स्पन्दामोदमयीस्फिताक्रियाविकसिता द्विनी ३१ क्रियारूप जो क
मलिनीहैं अनेकफलरूप भ्रमरो करकेमलिन वासनाजालजालवाली विकसितहोई सोभीअज्ञानकीविभूतिहैं ३१ वराकीसृष्टिशफरीस्फुर
तीभवपत्तले कृतान्नवृद्धयुष्माणशेनविनिगीर्यते ३२ तुक्जो सृष्टिरूप शफरी कोरीमछी संसाररूप चफरीवितें फुरतीहोई कालरूप
वृद्ध युष्माणशेन निंगलालिई जो सोभीअज्ञानकीविभूतिहैं ३२ तरंगफेनमालेवसेवायेवचभङ्गः ३३ श्वाऽपरेन्दुलेखिवस्यदेतिविचित्रता ३३
जैसे तरंगमाला फेनमाला दणभंगरा प्रथमजैसी तथा भिन्नजैसी प्रकटहोतीहैं अरु जैसे दिनदिनप्रति भिन्नभिन्न परिमाणवाली चंद्ररेखा
प्रकटहोतीहैं जैसेसंसारकी विचित्रता प्रथमजैसी भिन्नजैसी जोप्रकटहोतीहैं सोभीअज्ञानकीविभूतिहैं ३३ भूतिभूतशरावाणितणभङ्गानि
कुर्वता इदंकालकुलालेनचक्रसंपरिवर्त्यते ३४ बडतप्राणीरूप मृत्तिकापात्रोंको दणभंगरोकोकर्त्रीजोहैं कालरूपकुमहार तिसने पर
संसारचक्र भुमाईजोहैं असेव्याप्तानिकल्पानिसंजातान्यचलेपदे जगज्जलजालानिदधानियुगवद्धिना ३५ अचल पर्वतरूप ब्रह्मस्थान
वितें गिनतीरहित जगतरूप जगलसमूहव्यवहारसमर्थउत्पत्तहोतेभए प्रलयकालकी अशिकरके दग्ध होतेभए ३५ भावाभावेरप
र्यनैः सखडुःखदशाणीतैः चैषीमप्रयागवमजस्रजागतीस्थितिः ३६ उत्पत्ति विनाशकरके अरुतममममम सखडुःखदशा शोकाक
रके जगतकीस्थितिविपरितभाको सदाप्रापतहोतीहैं ३६ त्वय्यैगपरावर्त्रवीसनाष्टह लोभिता महाशुनिनियतेअनभगाऽबुद्धधी
रता ३७ वासना अखलोककरके सरितहोईजो अज्ञानियाकी सूर्यतादृढतारूपधीरता महादोभोवाल जो जुगोंकेफेरोंकरके महा
वज्रोंके पातां करकेभी नहीं भगनहोतीहैं ३७ शतशोचिदुताविधेइनुपेत्रभिष्णुताम भवभङ्गरयामेन्द्रीतबुवहनिवासना ३८ ता
नवानजोइंद्रहैं तिसके शरीरको अधिकारसमाप्तिपर्यंतवासनाधारतीहैं जो सोभीअज्ञानकीविभूतिहैं केसोहैं इन्द्रकाशरीर होरजन्मादिकों

सखिके

नरकपतनकी
संगादिरससव
एरूपसुगंध
वर्जितवालीहैं

न्याय =
भाग =
काय

रक्षादिक-

अंतरदीप्त
५: खकाभु
भवकाभु
रुन

निर्वाण
भाषा
५
६

घनी-

रूपभरसमूहजो सो बज्रत बुंभुमधनिकरतांहे ह्यर्थ ब्रह्माण्डभैरवभाण्डेयंकालीभगवतीक्रिया ५५ स्वयंदेवदेवदेवभूतभित्तजिह्वानि प्रा
णिश्रीकीजोक्रियाहे सोहीहे कालीभगवती ब्रह्मांडहे भित्तापात्रजिसका प्रथमलिईजोप्राणिभित्ता तिसको अपुनेभर्ताकालको वारंवारदेकरके
होरहोर प्राणिरूपभित्ताकोलिआचाहतीहे ५१। तिमिरालीककवरीऽन्धःकचपलेतण ५२ ब्रह्माण्डमहेन्द्रादिधरागिरिवरुणिका ब्रह्मतेजेकधि
टकालममानपयोधरा ५४ चिह्नकिमारकास्थलातरलातनचपला तारकाजालदशनामन्पाकरणगराधरा ५५ समस्तपद्मिनीहस्तापातकृतप्रानना सभा
विमुक्तालनिकानीलाखरपरीरता ५६ जम्बूहीपमहानाभिर्वनश्रीरोमराजिका भूलाभूतादिनशनीविलोकीरुहकामिनी ५७ मुसकृजायतेनष्टाभरिविभ्रम
कारिणी विलोकीरुपट्टकामिनीहे जिसकाग्रंथकाररूपकेशपाशहे जिसके चंद्रसूर्यचंचलनेउहेमै जो आंतस्वेतनस्तभावकरके ब्रह्माविस्ममहेन्द्र
द्विपदे एधिबीरुमेरुहिमाचलादिकहेपा वाह्यस्थलदेहराजडसभावकरकेहे ब्रह्मतत्त्वहीहेहृदयविलेफोडोसोसातिसकोबन्धनकरकेडकक
रसदागुप्ररावतीहे लमकतेजोपयोधरमेवसोहीहेनक्तनजिसके चेतनशक्तिजोहेविदाभास सोहीहेमाताजैसेपोषणकरणेवालीजिसकी।
इसीतिसलहे गौहहीचपलहे तारासमूहहेदंतजिसके संस्थासमयहे बज्रतलालगोठ जिसकी सबजो कमलावालिआंभेहसता हाथजिसके ३३
कानगरहेमुखजिसका सतसमुद्रहेमोतिश्रीकीश्रीमालाजिसकी नीलाआकाशहे उपरलानीलावसंतरजिसका जंबूद्वीपहेमहानाभीजिस
की वनशाभाहे रोमपंकजिसकी वारवारउत्पतहोकरकेनष्टहोतीहे नष्टहोकरवारंवारजंभतीहे बज्रतविलासकरतीहे बज्रतभमाकेभीउत्पतक
रतीहे ५७। मन्मन्मेरयो नमोभीमेकालमहार्णवे प्रतिकल्पतणहीलेब्रह्माण्डस्फुटबुद्धेः कालागाधरसस्पन्दःस्थिरस्थिताग्रनः पुनः ५८ कल्पमात्र
निमेषलोडुनाकारणसारसाः भयंकरजोहेकालरूपमहासमुद्रतिसविले ब्रह्माण्डरूपजोहेमपकटअनंतबुद्धे सो ब्रह्मतेहेन होरअनंतब्रह्माण्डबुद्धे
देउगतेहेन ब्रह्माकाआयुजोकल्पहेसोहीतणहे तिसविले स्थितहोइकरतीणहोतेहेन ब्रह्माण्डबुद्धे पेसेहीअनंतकल्या विले अनंतब्रह्माण्डरूप
हेन अगाध अथाह रसस्पंद अनंतभ्रांतितस्मात्पजलस्पंदजिसविले पेसाजोकालरूपनदहे तिसविले वारंवार स्थितहोकरके हिरण्यगर्भहीजो
सारसपटीहेन कल्पमात्रपलककरके उडजाउतेहे ५९। उत्पत्त्योमसनाशितः सतस्यासृष्टिविद्युतः ६० कालमेवेस्फुरयेताश्चित्स्रकाशतनोद्यमाः।
कालरूपमेवविले सृष्टिरूपविजलिआ वारंवारउत्पतहोइकरके वारंवारनष्टहोतिआहेन चित्प्रकाशकीवाग्निकरके हेप्रकाशशक्तिजिनकी पेसि
आसृष्टिविजलिआफुरतिआहने ६१ प्रपतद्भूतविहगाः पतन्त्यः विरतभूमाः ६२ कालतालाक्तिलो जालाडुहाण्डफलपालयः उन्मेषकतेवेविचरसृष्ट्यादेवना
यकाः ६३ निमेषकृतसहाराः सन्निकेचनऊत्रचित अग्निकृचाजो कालरूपतालवृत्त तिसमें पोतेजोहनप्राणीरूपकाकपटीजिनांते तिसिआजोब्रह्माण्डर
पफलाकिआपेकनियो पोतिआहेन देवनायकजो विस्तरुइईश्वरसदाशिवहेन को नेत्रोंके उच्चाडनेमात्रकालविले ब्रह्माकिआसृष्टिआकरतेहे।
निमेषमात्रकरकेसहाराकरतेहेन पेसेदेवनायककोईकहीहेन ६४। निमेषोन्मेषसंतीणकल्पजालाः सदस्रशः ६५ रुद्राः केचनविद्युन्तस्मिंश्चि
त्यरमेपुनः जिनकेनेत्रोंकेनिमेषउन्मेषविले अनेकहजार सृष्टिजाल हीणहोतेहेन सोरुद्रअनेकहजार तिसचिद्रूपपरमकारणविलेहेन ६६।
तेपियस्यनिमेषाभवन्निनभवन्निच ६७ तादृशोपलिदेवरोहाननेयक्रियास्थितिः सोरुद्रभीजिसकेपलकमात्रकरकेहोतेभीहेन नहीभीहोतेहेन
तेसाभी देवोंकाईशहे यह रुद्रपर्यंत क्रियास्थितिहे कर्मकी आउपासनाकी फलसजास्थिति अनंतहे संख्यारहितहे ६८। अनन्तसंकल्पमयेपुमे
चब्रह्माण्डपदे नसंभवन्निकानामशक्तयश्चित्रप्रकाः मायाकरके अनंतसंकल्पमयेहे ब्रह्मपदे तिसविले कोनशक्तिआनंदी अनेकआश्रयकेछरण
करणेवालिआ सर्वशक्तिआहेन वस्तुदृष्टिकरके मायासंकल्पसंरहितहे ब्रह्मपद ६९ पंचमदीणसंकल्पालवार्थभरभासर जागतीकल्पनायेयंतद
ज्ञानविज्रभिन्नम् ७० प्रपतद्भूतजोहेनगतकल्पना सो दृढसंकल्पकरके प्राप्तरूपजो पदार्थसमूह तिनोकरके भासमानहे सो अज्ञानकीचिभूतिहे ७१।
याः संपदोयदुतसंततमापदस्य यदाल्ययोवनजामरणपतायाः धनमजनचस्रखड्गः खपरंपराभिरज्ञानतीव्रतिमिरस्याविभूतयस्ताः ७२ मोक्षोपायेऽ
ज्ञानमाहात्म्यप्रशंसननामसप्तमः सर्गः ७ जोसंपदाहेन जोनिरंतरआपदाहेन जोवालावस्था युवावस्था बृद्धावस्था मरणवस्था संतापहे
न जोखपरंपराकर अरुडः खपरंपराकर संसारसमुद्रविलेडुबनाहे सोसब अज्ञानरूपतीव्रग्रंथकारकिआविभूतिआहेन ७३। इतिनिर्वाण
भाषाया अज्ञानमाहात्म्यकथनसप्तमः सर्गः ७ श्रीवसिष्ठउवाच संसारवनखरोडस्मिंश्चित्पर्वततरेस्थिता कीदृशीसृष्टाः विद्यात्वात्तताविकसिताक
दा ८ इससंसारवनखरोडविले निर्वाकारचेतनरूपपर्वतकेतदविलेस्थित सृष्टिरूपअविद्यालता विकसितहोई किंसमयविले कोसीहोईसो

निर्वाण
भाषा
१८

वहुत हैं पतंगिका जिस विषे १८ कुकर्माजगरा प्राप्ति श्रीधर्ममण्डप जीवजीवन नीत्यानामोदमप्रदा १९ कुकर्मपुत्रो जगत्तिसकरके वा।
गै स्वर्गशोभा है पुण्यमंडप जिसका जीवों के जीवन उपायों करके सारण है अनेक प्रकार के जो सुगंध जो सुगंध हैं तिनके मंदने वाली है २० नामोपशम वे विष्णु
नाना कुसुम भासिनी नाना फलावली वा प्राप्ति नाना वषट्कारिका सिनी २१ विचारवानों के अनेक प्रकार उपशम की विचित्रता ही जो अनेक पुष्पों
तिनो करके भासती है अनेक फल पै फिआ करवाते हैं अनेक पुष्प फल पुष्प रस पुष्प रस वैष्णव करके विकास को प्राप्त होई है २२ नाना लता
लवलायाना विहगधारिणी नाना पद्म पद्म नाना भूषणालिका २३ अनेक किष्कि आदि के मंडल जिसके अनेक पक्षि आदि के भारो वाली है
अनेक पुष्प रस जो करके कगेर है अनेक पर्वत जो हैं सोही हैं अनेक जाल जिसके २४ नाना कला कुशुलिनी नाना वन गणोत्थिता नाना गिरितरा
रहाना नाना दल निरनारा २५ अनेक व्यवहार कला है कलि आ जिसकी अनेक वन गणों से उठी है अनेक पर्वतों के तटा विषे चढ़ी है अनेक
पर्वतों के भी है २६ जाता च जायमाना च प्रियमाण तया मत्ता अर्थ कि ज्ञान था कि ज्ञानिय महे दिनी तथा २७ पिछे उभय जो ती भी वरमा
न उभय दो ती है वर्तमान विषे मरती है अर पीछे मृत होई है आधी बुढ़ी है मृत सारी बुढ़ी है नियम प्रवाह रूप करके नहीं बुढ़ती है २८ अतीत
वर्तमाना च सत्य वा सत्य वसदा नियम मत्त न तनी नियम शोष सपेयुषी २९ पीछे हो ती भी वर्तमान विषे भी है सदा सत्य जैसी अतीतों को भासती है स
दा सत्य जैसी ज्ञानी को भासती है नियम अत्यंत जगत्तु है ३० अर पर्वतों के युक्त है विवेक हृष्टिकर के नियम सुकती है ३१ महा विषल नेषा हिंसार
विषमूला नाम ददाति रभसा स्मिष्टा परा मृष्टा विनश्यति ३२ परा विद्या महा विषलता है निष्पन्न करके जन्म मरण हिंसार रूप जो है विषमूर्च्छा
निसको देती है अविचार के वेग करके स्वशक्ति होई ३३ विचारी होई विनाश के प्राप्त हो ती है ३४ स्मृति नूतन लिता तस्य अनेकः संस्थिता निता अनेक
लमितः शोला अतो नागाः स्वरा इतः ३५ विचारवानों के रत्न आत्मा विषे अंदर बाधित हो ती है अतीतों के अंदर मिलित होई स्थित है अनेक रूपों
स्थान विषे जल रूपों है अविद्या विषलता एक स्थान विषे पर्वत रूपों है एक स्थान विषे नागरूपों है एक स्थान विषे देव रूपों है ३६ इतः एष्यति माया ता तथे तो
तया स्थिता इत अन्तर्क तां प्राप्ते तो युतया स्थिता ३७ एक ओर एषि वीरुपों प्राप्त होई है तैसे एक ओर स्वर्ग रूप करके स्थित है इत ओर चंद्र सूर्य रूपों
को प्राप्त भी तैसे इत ओर तादां आकार मई है ३८ इत स्तम्भ इत स्तम्भ इतः रवित उर्वरा इतः प्राप्ति तो वेदा इतः दध विवर्जिता ३९ इत ओर अन्य कार रूपों है
त ओर तेज रूपों इत ओर आकाश रूपों इत ओर खेती करके रत्न एषि वीरुपों इत ओर शास्त्र रूपों इत ओर वेद रूपों इत ओर प्रलय सृष्टि विषे तैर रहित रूपों ४० क्वचि
तवगत यो धुना क्वचिद्वत यो स्थिता क्वचिस्थाना तया रूढा क्वचिपवन तागता ४१ किसी ओर पक्षि रूप करके उड़ती है किसी ओर देव रूप करके उड़ती है
किसी ओर किसी ओर कटे डूब के डूब रूप करके चढ़ी है किसी ओर पवन रूपों को प्राप्त भी है ४२ क्वचिन्नरक मंलीना क्वचित् स्वर्ग विलासिनी क्वचि
त्सुखमा क्वचित् क्वचित् मित्रा स्थिता ४३ किसी ओर नरक रूप करके पाताल छिद्र विषे डूबी होई है किसी ओर स्वर्ग रूप करके विलास करती है कहीं देवों
के मंडको प्राप्त होई कहीं क्वचिन्नरक रूप करके स्थित है ४४ क्वचिद्विष्णुः क्वचिद्रुद्रा क्वचिद्रुद्रः क्वचिद्विष्णुः क्वचिद्विष्णुः क्वचिद्विष्णुः क्वचिद्विष्णुः क्वचिद्विष्णुः
कहीं विष्णु रूपों कहीं रुद्र रूपों कहीं सूर्यः कहीं अग्निः कहीं वायुः कहीं वैश्वः कहीं धर्मः ४५ यत्किंच न भवेत्तु महांस हिंसा वा प्रज रत्न एत
वत्तु मया गते वा दृश्यं स्मरं च पिहारा यथा म विद्या विहितं ध्यायत दती ततया तलाभः ४६ इति मोक्षोपदेश विद्या तलाभोपदेशो नामोदमः सर्गः ८।
हे राम महामहिमा करके रत्न जो है हर आरि क्वचि तत्तु जो है जीर्ण तत्तु अश को प्राप्त भया जो ऊर्ध्व रूप स्फुरता है तिस सर्व को अविद्या जाल
तत्तु जाल करके अविद्या का बाध होता है अविद्या के बाध करके जो आत्मा काल भी है सोही मोक्ष है ४७ इति निरुक्त भाषा विषे अविद्या का विलासक
थन अष्टमः सर्गः ८ श्री राम उवाच आकार जगत्तु मरितं शुद्ध हरि हर गायि अविद्या वेमल्यता व्रत नृम मिवागतः ४८ श्री राम उवाच हे ब्रह्मन् शुद्ध आका
र सत्तु दाले जो हैं हरि हर दिक सो भी अविद्या ही है पहल मने कहि आ है पहल मने कर भ्रम जै से को प्राप्त भया हो विस भ्रम को हर करे ४९ श्री वसिष्ठ उ
वाच सेवे दो ना परा मृष्टा न सत्ता म कचयर तस्यिदा भा समय मही द कल नो जिह तम् ५० सेवे जो है दृश्य जगत्ता आकार तिस करके रहित है।
जगत्संस्कारों करके भी जो है माया तिसके अधिष्ठानों से वे रूप है इसी तें सर चित्र प्रकाश की अधिकता वाला कल्प नारहित स्थिति पूर्व है। समुद्र
गिखत सत्ता कला कल नर पिणी जलादाव तले विवस्त्र जल तयोदिता ५१ जगत के संस्कार महा प्रलय विषे लीन हो पड़े हैं सहिसमय विषे सब संस्कार
संका प्रकर हो ना जो है सो कल न कसीप कल न रूप जो कला है विद्या भास का स्फुरण स्फुरिके आदिकाल विषे उदय हो ता है अर्पनी सजा कर के स्थित ही है

स्फुरता =

सवेदन =

श्री वसिष्ठ उवाच ५

को धार
ले
होए

शुद्धसत्त्व रजोमिलितसत्त्व तमोमिलितसत्त्व ३ शुद्धरज सत्त्वमिलित तमोमिलित ३
शुद्धतम रजोमिलित सत्त्वमिलित ५९

स्फुरता जो जल है तिस रूप कर के २

स्वल्पमात्रमासीजैसै पहगुणीका गुण है जैसै सूर्य का प्रकाश चंद्रकी प्रकृति अधिकी उस्ता है सूर्य चंद्र ग्रह पहगुणी हैं प्रका
 श प्रकृति उस्ता गुण है तै से चिदाभास का स्वरूप उदय होता है जैसै जल में आवर्तिले वॉ उदय होती है अभिविधे भी किं
 चित भेद कल्पना होती है ३ सत्त्वामध्या तथा स्थूला चेति सा कल्पने विधा पञ्चात्मन सयातेन ज्ञाते वव पुषा पुनः ४ सा कला सत्त्वाम
 ध्या स्थूला परुष प्रकाश करके कल्पीती है सत्त्वामेद करके जैसै बिंदी धूप मध्या रू विधे प्रभात विधे स्थूल धूप व्या विधे सूर्य के तेज
 का भेद होता है व्या विधे सत्त्वामेज प्रभात की धूप विधे मध्यम तेज मध्याह्न की धूप विधे स्थूल तेज सत्त्वाम कल्पना तै पी
 छे तिस कल्पना करणे वाले ईश्वर ने हिरण्यगर्भ रूपमन स्वरूप करके मध्यम जानी है पुनः तिसै उपरत विराट् शरीर करके स्थूल
 स स्वरूप रूप कला स्थित होती है उपाधि भेद करके त्रिप्रकार करके कल्पनीती है जिसै पृथ्वी प्रकृति सत्त्व रज तम पहगुण मयी कही है
 वेदादिक शास्त्र विधे ५ अविद्या प्रकृति विदित गुण वितय धर्मिणी म पंचेव सत्तिर्जगत्तयाः पारंपर्य दम् ६ विगुण धर्म वाली जो प्रकृति है इसको
 त्रिप्रविद्या जाना पृथ्वी जीवकी सेंसार रूप है इसके पार परम पद है ६ अत्र ते ये त्रयः प्रोक्ता गुणास्तपि त्रिधा स्मृताः सत्त्व रजस्तम इति प्रत्येक
 भिद्यते गुणः ७ इस अविद्या विधे जो सत्त्व रज तम पहगुण तु जे को कहे हन सो भी त्रै रूप करके कहे हन एक एक गुण त्रै रूप
 ह प्रकार वाला है ७ नवयें वै विभक्तेयमः विद्या गुण भेदतः यावत्किंचिद्विदं रूपमनयेव तदा श्रितम् ८ परम अविद्या एक एक गुण के
 त्रै भेदोने नव प्रकार करके ऐस न्यारी होई है जितना ऊछ पर दृश्य है सो अविद्या हीने धारि आ है ८ कषयो मुनयः सिद्धाना
 गविद्या धराः सराः इति भागमविद्यायाः सात्त्विकं विदिराद्यव ९ सात्त्विकस्यास्य भागस्य नागविद्या धरास्तमः रजस्त्वमुनयः सिद्धासत्त्व
 देही दरादयः १० ऋषी मुनी सिद्ध नाग विद्या धर देव पर सात्त्विक भाग अविद्या का जाना हेराद्यव ११ इस सात्त्विक भाग का नाग विद्या धर तम
 है तमो गुण मिलित सात्त्विक है ऋषी मुनी सिद्ध रजो गुण मिश्रित सात्त्विक है हर आदिक देव हर विस्त ब्रह्मा शुद्ध सात्त्विक है सत्त्व जातो दे
 वयो नावः विद्या प्राकृतैर्गुणैः निर्मले पदमाधाताः सत्त्वैर्हरादयः १२ अविद्या रूप प्रकृति गुण करके सात्त्विक जाति देव यानी विधे हरि हर ब्रह्मा
 ह सात्त्विक है कोहेने निर्मल अविद्या आवरण रहित स्वात्म पद को सदा ही प्रापत होय है स्वाभाविक ब्रह्म विद्या करके ॥ सर्वज्ञता सम संकल्पना ज्ञान
 दातृता मोक्ष कारणता त्रै रूपों विधे समाने है हर आदिक भक्ते के प्रदा के रहत निमित्त हर आदिकों की स्तुतिकरी है हर आदिकों से ब्रह्मादिक अल्प है
 विधे तमार्थ नहीं है हर आदिकों विधे जो अल्प दाष्ट करे तै सो राक्षस पिशाच अवश्य पदाते है परम सुविधे कहि आ है १३ सात्त्विकः प्राकृतो भागो राम
 तज्जो हियो भवेत् न समुद्यते भयस्तेनासौ मुक्त उच्यते १४ ब्रह्मादिक विमूर्ति रूप प्रकृतिका भाग सात्त्विक है ब्रह्मादिकों का जो उपासक सो
 जान का प्राप्ति हो इसके फेर नहीं उत पत होता है पर हरि हर आदिक सदा आवरण के अभाव ते स्वाभाविक जीवन्मुक्त कहि ते है १५ तेन रुद्राद
 यो ह्येते सत्त्व भागमहामुने तिष्ठन्निमुक्ताः पुरुषा यावदेह जगत्स्थितौ १६ हे महा बुद्ध राम पर रुद्रादिक प्रकृतिके शुद्ध सात्त्विकों शो निरावर
 ण ज्ञान प्रभाद करके जीवन्मुक्त पुरुष जातों ई देह तां तां जगत्स्थिति विधे स्थित हो ते हे निश्चय करके १७ यावदेह महात्मानो जीव
 न्मुक्ता व्यवस्थिताः विदेह मुक्ता देहा नैस्यास्य निपरमेश्वरे १८ जातों ई देह तां तां ई रुद्रादिक महात्मा जीवन्मुक्त सें सार व्यवहार विधे
 स्थित है देह के अंत हो प विदेह मुक्त स्वरूप शुद्ध ब्रह्म स्वाभाव विधे स्थित हो ते १९ भाग पृथक् विद्या या पंच विद्या तम गुणतः बीज फ
 ल तम याति फल मायाति बीज तम १५ अविद्या का परम शुद्ध सात्त्विक अंश मुक्ति कारणता करके विद्या स्वरूप को प्रापत होता है बीज जो है का
 रण अविद्या सो कार्य रूप स्थित तम अविद्या रूप फल को प्रापत होती है कार्य विद्या रूप जो है फल सो प्रलय विधे कारण विद्या रूप
 जो है बीज तिस रूप को प्रापत होता है १५ उदेत्यविद्या विद्यायाः सलिलादिव बुद्धुदः विद्यायां लीयते विद्या सलिलादिव बुद्धुदः १६ कारण वि
 द्या विधे जो शुद्ध सात्त्विक भाग है सो विद्या है विद्या स्वरूप देह धारी जो है ब्रह्मादिक तिन्हा ते सत्त्व रूप अविद्या उत्पत्त होती है जैसै जल से बुद्धुद

कलाः

अथपरस्त्वभ्येनेति
संस्मृतिनिवेशिन
यादधानाश्चजायन्ते
शाचाश्चनसंस्मृताः =

निर्वाणभा
का १५

19

जनावलेवाली
निर्वाणकर
लेवाली =

काए-

उद्धा

तिसकरके
प्रतिष्ठाका
नामहोताहै

१५

होतेहैं विद्यास्वरूपजोहैंरुद्रादिकोंविलेंस्वरूपविद्यालीनहोतीहै जलविलेंजैसेबुदुदलीनहोतेहैं कार्याविद्याकेउद्भय
स्वरूपतिनकेआधारहोवनेकरकेभीविद्याशरीरवालेजोहैंरुद्रादिकतिनांकाअविद्यास्वरूपहीहै १६ पयस्वरूपयोर्हितभावनादे
वभिन्नता विद्याविद्यादृशोर्भेदभावनादेवभिन्नता १७ जलतरंगोंकादेतकल्पनाहोतीभिन्नताहैजैसेतैसेहीविद्याअविद्यादृष्टीकेभेदक
ल्पनाहोतीभिन्नताहै १८ पयस्वरूपयोर्कयथेवपरमार्थतः नाविद्यालेनविद्यालेमिदकंचनविद्यते १९ जैसेपरमार्थतेजलतरंगोंका
एकतापरमार्थतेहै तैसेचैतन्यस्वरूपविलेंअविद्यास्वरूपनहीविद्यास्वरूपभीनहीहै केवलशुद्धचैतन्यपरमार्थतेएकहीहै २० विद्या
विद्यादृशोपक्तायदस्तिदस्तिहितिप्रतियोगिचवहेदयशादेतद्वत्तुह २१ विद्यादृष्टिजोहैअविद्यादृष्टिजोहै इनकीजोहैपरस्प
रभेददृष्टिअविद्याजोहैपरस्परविरोधदृष्टि इनकात्यागकरकेजोवस्तुहैसोहीसत्यहै विद्यादृष्टिकरकेअविद्यादृष्टिकाबाधहोताहै वि
द्यादृष्टिजोहैअविद्याकीबाधकतिसकाकिसकरकेत्यागहोताहै २२ श्रीरामकीशकाजानकस्त्रीवसिष्ठमुनीकहतेभाहैरुद्रजलकेउद्धारकर
लेवालेहेराम विद्यादृष्टिविलेंजोबाधकताहैतिसकीप्रतियोगिनीअविद्याहै बाधकरकेअविद्याअसतहोईहै अविद्यानेजनाईजोहैबाध
कताअसतहै बाधकतावालीविद्याभीअसतहै असतजाणनहीविद्याकात्यागहै परमेकपणकियाहै बाधकहीपरमवर्तमानभविष्यत्कालवि
लेंअसत्ताभाव २३ विद्याविद्यादृशोनस्तःशेषवदपदोभव नाविद्यास्तिनविद्यास्तिनकल्पनयाभया २४ विद्याकीदृष्टिअविद्याकीदृष्टिपरमार्थ
करकेनहीहै बाकीरहिआदेविन्मात्रिसविलेंनिश्चयकोबाधनहीअविद्याहै नहीविद्याहै परमार्थकरके अविद्याविद्याकीकल्पनावर्थाहै
२५ किंचिदस्तिनकिंचिद्विस्तिनविहितस्थितम तदेवाविदिताभासमद्विद्येमुदाहृतम् २६ ऊर्ध्ववस्तुहै जिसवस्तुविलेंदोरऊर्ध्ववस्तुनही
है जोवस्तुचितसंचितहैसंकल्पितनामकरकेशस्त्रीययावेदार्विलेस्थितहै सोहीऊर्ध्ववस्तु अज्ञानप्रकाशस्वरूप अविद्यानामकरकेश
स्त्रीविलेकहिआहै २७ विहितमनदेवेधमविद्यातयसंस्थितम् विद्याभावादविद्यात्वास्थित्योदेतिल्लाना २८ सोहीऊर्ध्ववस्तुजान्याऊराअवि
द्यातयपरमात्मालाहोताहै अविद्याकीअभावाहै अविद्यानामकल्पनामिषाहीउदयकाप्रपटहोतीहै २९ मिथःस्वानातयारनृच्छायान
पनयोरिव अविद्यायाविलीनायालीलोद्वेपकल्पने ३० मनविलेंस्थितजोहैपरस्परविरुद्धकायाधुपकीसदृशविद्याअविद्या इनकेमध्यजोहैअवि
द्या सो सवमेअंतरजोचैतन्यहै तिसविलेंबाधकरकेलीनहोचै विद्याअविद्याएहदोहीकल्पनालीलाहोताहै ३१ एतेएववलीयेनेअवाप्यप
रिषिधामे अविद्यासतयालीलाविद्यापतोपरिगृह्य ३२ हेरावृष एहदोविद्याअविद्याजवलीनहोतिआहैतबपाउनायोग्यजोहैविद्याकाफलप्रक
टसयापूर्णानन्दरूपशेषरहताहै विद्याकाबाधककोईनहीविद्याभीकिंउनीशेषरहैइसशंकाकोदूरकरतेहैश्रीवसिष्ठमुनिहेरावृषअ
विद्याकेलयतेविद्यापतभीलीलाहोताहै जैसेअंधनकेलयतेअग्निदीलाहोतीहै विद्याकाअंधनअविद्याहै ३३ यच्छिष्टतत्रकिंचिद्विहाकिंचि
हापीरमाततम् तत्रैवेदप्रपतेसर्वनकिंचनचदृश्यते ३४ जोशेषहै सो सर्वबाधस्वरूपहैतिसतेनहीऊर्ध्वहै परमार्थसदृपतेऊर्ध्वहै जिसश
षस्वरूपविलें परमार्थरूपकरकेसवऊर्ध्वदेखीताहै माधिकरूपकरकेनहीऊर्ध्वदेखीताहै इसतेआमदर्शनहीपरमार्थतेसर्वदर्शनहैसर्ववा
धदर्शनहै ३५ वद्व्यवस्थानाद्यामिवपुष्पाफलादिमानसर्वशक्तिहिकिंचित्सर्वशक्तिसषड्रकम् ३६ जैसेवटचीजविलेंचरदत्तपुष्पाफलादिम
हितसत्त्वरूपकरकेस्थितहै सोवटदत्तस्थलरूपकरकेकालांतरकरकेप्रकटहोताहै तैसेअज्ञानकरकेआवृत्तजोहैचैतन्यतिसविलेंसर्वशक्तिमयसत्त्वमक्ति
विद्रावहै जिसतेसर्वशक्तिमयअज्ञानोपाधिकरकेसर्वशक्तीकासंप्रदेहचैतन्य ३७ नभसोपधिकंस्वयंनचस्वयंचिदात्मकम् स्वयंकायेयथावर्द्धय
यात्तीरेहतेतथा ३८ तत्रेदंस्थितसर्वदेशकालक्रमोदये यथास्फुलिङ्गाग्रनलाद्यथाभासोदिवारका ३९ तस्मान्नयेमानिर्वाणिसुरमःसविदश्चितः
आकाशतंभीअधिकअन्यहै कोहैतं आकाशविलेशत्रहै चैतन्यविलेंशत्रुभीनही परमार्थकरकेअन्यनही जिसतेचैतन्यस्वरूपहै जैसेसूर्यकान्नविलें
अग्निहै जैसेउग्यविलेंचुतहै तैसेचैतन्यविलेंसर्वजगत्स्थितहै देशकालक्रमकेउदयहोतसंतेचैतन्यतेप्रकटहोतेहै जैसेअग्नितेचिन्नागिआप्रकट
होतिआहै जैसेसूर्यसेकिरणप्रकटहोतिआहै तैसेब्रह्मचैतन्यसेजीवचैतन्यअंतःकरणदिकउपाधिसहितप्रकटहोतेहै यथाभाषितरगाणो

स्फुरतेहोएत

२५
 यथा मलमणिस्त्रिषाम् कोशो नित्यमनन्तानां तथैव तस्य विदित्वा म जेसे समुद्र तरेगा का भंडार है जेसे निर्मल मणि का तिया का भंडार है तेसे व
 अत्र न ही जीव चेतन्य का तिया का नित्य भंडार है २५। सवाहाभ्यन्तरे सर्व वस्तु न्यस्त्येव वस्तु सतः सर्व वैवा विनाशात्मक भागां गगन यथा । देह के अन्तर
 देह के व ह जो जगत है सो सदस्वस्व रूप प्रवृत्ति है ही है जिसमें जगत की सत्ता सदस्व की ही सत्ता है जेसे कल्पित सर्प की सत्ता २५ सत्ता ही
 है वस्तु जो है सदा अविश्व रूप है जीवों का जो वस्तु ते निकलना है सो जीवों की जो है उपाधि अतः करणादिक सो निकलने वस्तु विवेक है
 जो कल्पित माया है तिसमें वास्तव जीवों का निकलना नही होता जेसे कुंभा के निकलने ते कुंभा का निकलना है ३०। यथा मल रयः सन्ने अ
 यस्तान्ने स्य कर्तता ३१ अकर्तरे वीह तथा कर्तता तस्य कथ्यते जेसे अयस्तान्ने मणि जो है चुंबक मणि तिसके निकट ताते लोहा चलता है चुंबक
 मणि लोहे के चलने का कर्ता है वास्तव कर्ता नही तेसे ही जीव चेतन्य के निकट ताते मन इन्द्रियादेह चेष्टा करत है जीव चेष्टा का अकर्ता ही क
 र्ता है ३१। मणि सन्निधिमात्रेण यथा यः सन्दते जडस्य तस्य जगत्तथैव यदेह अतः यः चिदप्रः । जेसे जड लोहा चुंबक मणि के सन्निधान करके
 किंचित चलता है तेसे ही जीव की सत्ता अकर्त के जड शरीर स्थल सत्त्व चेष्टा करता है ३२। तत्र स्थित जगदिदं जगदेक वी जे चिन्नाभि स
 विदित कल्पित कल्पनेन लोलोर्मिजालमिव वारिणि चित्र रूपेण वायु पत्रपत्रवति यत्र न किंचिदस्ति ३३ मोक्षोपाये विद्या निरकरण नाम नवमः स
 र्गः ४१ चित्र नाम जिसका पेसा जो है जगत का एक वी जगत्तत्र स्थिति सविते स्थित है परु विचित्र जगत चिरकाल का काहेते सर्व सर्व
 स्थिति विवेक जगत है तिसकी जो कल्पित राग द्वेष वासना तिसकरके उत्तरे त्रस्य कल्पना करके चिरकाल जगत्तत्र स्थिति विवेक जगत भा
 सता है जेसे जल विवेक चल तरंग समस्त विचित्र भासते हैं जो वस्तु जगत्तत्र आकाश ते भी रूप रहित स्थल सत्त्व प्रपंच स्थान तिस विवेक
 न्यस्त कुंभ भी नही ३४ इति निर्वोक्त भाषा यानवमः सर्गः ४१ श्रीचमिष्ठ उवाच तस्मान्न किंचिदेवेदं जगत्स्थावर जंगमम न किंचि
 द्भूततां प्राप्नोति किंचिदिदं विदितं विदितं । तिसमें जग जीव भेद का अज्ञात वस्तु मात्रता ते परहस्याव जंगम जगत कुंभ भी नही न कुंभ उत्पत्ति भाव को
 प्राप्नुया है हे राम परह जगत अ निर्वचनी यमाया मात्र जाण । यत्र का चित्र कलना भावाभाव मया मिका तदिदं राम जीवादि सर्व व्यर्थ किमीह से २
 जिस वस्तु विवेक भाव अभाव मय कल्पना कोई नही सो जगत्तत्र ही परह सब जीव जगत रूप अज्ञान करके हे राम भासता है तम किं उच्यते वस्तु ते भिन्न कु
 छ वस्तु चाहते हो २ सवन्धो यम सावर्तु है दिवा तपदि प्रपते न तल भा मदे सर्परजु सर्प प्रमादिव ३। जो सवन्ध देह विवेक अहंता रूप है अंतर हृद
 य विवेक बाह्य वस्तु विवेक ममा रूप सवंध है तिस सवंध को असी विचार करके नही लभते हो जेसे अविवेक संधि भ्रम ते भासता जो है सर्प तिसको
 नही लभते हो ३ अपरिज्ञात आत्मेव भ्रमता सुमुपागतः ज्ञात आत्मा त्वमाया तिसी मात्रः सर्व संविदाम् ४ अज्ञात आत्मा ही जगत भाती को प्रापत हो
 आह ज्ञात आत्मा अपने अक्षय आत्म स्वरूप को प्रापत होता है के सो है सब जो है देहादि ज्ञान तिन के अविधी का अत है आत्मा के ज्ञान करके देहा
 दिको विवेक अहंता ममादिक आतिज्ञानों का नाश होता है ४ अविद्यो स च तलो के चित्रे तप सलमाश्रिता चेत्पाती तामता मे तिसर्वा पाधिविचिता
 ५ चेत्तजो है दृश्य अहंकारादिक तिसका वी ज जो है मल आत्मा का अज्ञान तिस विवेक स्थित जो है स्थित चेतनता अपनी सत्ता के अधास करके ।
 सो लो क विवेक अविद्या पे से के ही ती है सो ही चेतनता वस्तु विद्या करके सर्व उपाधि से रहित होई दृश्य संपरे जो है आत्म स्वरूप तिसको प्रापत होता है
 ५ चित्र मात्र विदित रूप स्मिन्न हे च न यति स्थिते तिष्ठति चात्मा यं वदे सति राग रस ६ पुरुष जो है जीव आत्मा सो चित्र के साथ तादात्म्या धासते चि
 त्तरे अधीन है ५ सकारण ते चित्र सपुष्पि सुखी दिक अवस्था विवेक जवन घटता है तब आत्मा भी नाश को प्रापत होता है सो होता है चित्र जव स्थित होता
 है तब आत्मा भी स्थित होता है सो भासता है जेसे वृत्त हो ते वटा का स्थित होता है वृत्त नाश हो ते वटा का भी नाश जेसा भासता परमाय करके नाश
 नही जीव आत्मा का ६ गच्छ य एति गच्छति स्थिति तिष्ठति अर्थ यथा आत्मेव विदित चेतः परपत्पात्मानमाकुलम् ७ परु जीव आत्मा आत चित्र को ही अप
 ने आत्म स्वरूप को व्याकुल जानता है चित्र स्थल देह रूप ऊंचा चलता है आत्मा आप को चलता देखता है चित्र स्थित होता है आप को स्थित देख
 ता है जेसे बालक चल ते जल विवेक अपने प्रति विवेक को चलता देखे क आप को जानता है मैं चलाता हो स्थिर जल विवेक स्थिर प्रति विवेक को देखे

आत्मा

निर्वाण
भाषा
२

20

केआपकोस्थिरदेवताहोके कोशकारवदात्मानवासनातत्तन्मभिः वेष्टयेच्चैवचेतो नर्वासनावावृथ्यते ८ जेसेकोशकारजोहैकमिविशेष
सोतंतकरकेआपकोबांधताहै तैसेपरहजोवात्मा चित्तेअंदरजोहैवासनाहूपसत्त्वतंतत्तिनाकरकेआपकोबांधताहै बालभावकरके विचारके
अभावतें ८ श्रीरामउवाच मोर्कामननवनतामागतसमवस्थितम् स्यावरादितुप्राप्तकीदृशभवतिप्रभो ९ तत्तत्तत्तावृत्तादिकजोहै
स्यावरादिशरीरवित्तेंजोहैप्रभुसत्त्वताग्रं तत्तावृत्ताकोप्राप्तहोइनिश्चलस्थितहै देप्रभोसोमविताकेसीहोतीहै परहश्रीरामवसिष्ठमुनीको
छोलेभए ९ श्रीवसिष्ठउवाच अमनस्तुमसंप्राप्तमनस्तुदपिचिंतय तदस्यरूपमाधित्यस्थितेषास्यावेषवित १० श्रीवसिष्ठउवाच हेराम स्यावरा
वित्तें परहजीवचेतनता मूढतास्वरूपकोधारकरस्थितहै कैसाहैमूढतास्वरूपमनकीलयदशाकोनहीप्राप्तहोताहै जेसैसुषुप्तप्रदशावित्तें
सासारिकसुखदुःखोकास्फुरणनहीहोताहैमनोलायकरके स्यावरोवित्तेंसुखदुःखोकाज्ञानहोताहै होरकेसाहै मूढताकास्वरूप सर्वांश
रजाननेकोसमर्थजोहैमनकास्वभावतिसतेभीरहितहै १० तत्रहरस्थितामुक्तिर्मन्येवेद्यविदावर संप्रपुंयकापत्रविस्थितासुखवाचिनी ११ मुक्ता
न्यजडवृत्तसत्तामात्रेणतिष्ठति अवश्यजाणनेयोग्यजोहैआत्मतत्त्व तिसकेजाणनहारजोहैतिनुवित्तेंअष्टदेराम तिसस्यावभाववित्तेंमुक्ति
दूरस्थितहै परहमेंमननाहो जिसस्यावरदेहवित्तेंपुंयकृत्तिकाग्रं तद्विद्यवाह्यउन्विद्यासतिग्राहें विचारकरणकोअसमर्थहैं देसीचेतन
तास्यावरोकीवृत्ततदुःखदेनेहारीहै कर्मद्विषाकीचेष्टाअन्यतातेमुक्तजैसेहै ज्ञानेद्विषाकीप्रचारस्यन्यतातेग्रंथजेसीहै मनकेप्रचारस्यन्यता
तेजडजैसेसीचेतनता सत्तामात्रकरकेस्यावरोवित्तेंस्थितहै ११ श्रीरामउवाच सत्तामहेततथायत्रसंस्थितास्यावरोवित्तें तजहारस्थितामुक्ति
र्मन्येवेद्यविदावर १२ श्रीरामउवाच हेमुने जिनास्यावरोवित्तेंज्ञानेन्यिकर्मद्विषाकेबापाअन्यताकरके अहेतसत्तामात्रकरकेचेतनतास्थि
तहै तिनस्यावरोवित्तेंहेआमजानिचामध्यवित्तेंप्रोह निकटमुक्तस्थितहै १२ परहमननाहो जेसेयोगीश्वरकीइंद्रियवापारविनास्थितहोतेवा
सनात्तयमनोनाशशीघ्रहोताहै मुक्तिनिकटहोतीहै तैसेस्यावरोकीभीहोवे श्रीवसिष्ठउवाच बुद्धिपूर्वविचार्येयथावस्तुऽवलोकनात् सत्तामा
मान्यवोधोयःसमोत्प्रेदननकः १३ निष्कामशास्त्राक्तकर्मकरणेते उपज्जहोइजोपुद्गुवृद्धितिसकरकेवेग्यादिसाधनपूर्वकश्रीसकुरोपासवेदो
तथास्तुकाविचारकरकेयथार्थपरमात्मवस्तुकेदर्शनते जलमृदेतपरमानन्दचित्तसत्तामात्रकाटहबोधकोतोवे तबसोअनंतमोक्षहै येसाबोधअ
तिदुर्लभहैस्यावरोकोतिसमेंमोक्षनही १३ परिज्ञायपरित्यागोवासनानासुतमः सत्तासामान्यरूपत्वंतत्केवल्यपदेचिदुः १४ आत्मतत्त्वको
जाणकरवासनाकोपरित्यागहैसोउत्तमत्तागहै सोहीसत्तासामान्यरूपकेवल्यपदेहै परतत्त्वतेजालतहै १४ विचारार्थः सत्तालोकाप्राप्तारण
ध्यात्मभावनात् सत्तासामान्यनिष्ठतयत्रद्वेषपरिदुः १५ गरुसंतीर्णादिकपदितोकेसायवेदान्तशास्त्राकाविचारकरमननपूर्वकआत्मनिदिध्यासनते
आत्मतत्त्वकेदर्शनते सत्तामात्रवित्तेंजोस्थितिहै सोपरवृत्तस्थितिजानीजालतहै १५ अन्तःसत्तास्थितासन्दायत्रवीजुत्पादुः वासनातत्त्वप्रभुत्ववि
द्विजन्मप्रदपुनः १६ जिसअवस्थावित्तेंअंदरवासनासत्तास्थितहै मंदहैवेगरहितहै जेसेवीजवित्तेंअंकुरसत्तस्थितहै तिसअवस्थाकोसुषुप्तजाण
फेरजन्मदेतोहारी १६ अन्तःसत्तामननपरितः सत्तवासनम् सुषुप्तजडधर्मापिजन्मदुः त्वरातप्रदम् १७ अंतरलीनहोसंकल्पजिसवित्तेंचारा
ओरसुप्तहोइआरागदेषवासनाजिसवित्तें ऐसीसुषुप्तअवस्थापाषाणदिकोऐसीजडस्वभावाभीसंकरेजन्मदुःखोकेदेतोहारीहै १७ स्यावराद
यतेहिमसत्ताजडधर्मिणः सुषुप्तप्रदमात्रहोजन्मयोग्याः पुनः पुनः १८ परहस्यावरादिकसवजडस्वभावहै सुषुप्तपदवित्तेंआवृत्तहै चारचारजन्मके
योग्यहै १८ यथावीजेषुपुष्पादिसुदोराशोचतोयथा तथातः संस्थितासाधोस्यावरोवृत्तवासना १९ जेसेवीजवित्तेंअंकुरादिपुष्पावृत्तस्थितहै जे
संमृत्तिकाकेहेरवित्तेंचुटस्थितहै हेसाधारम तैसेस्यावरोवित्तेंरागदेषवासनाग्रंथस्थितहै १९ यथासिंहासनावीजतत्त्वसुषुप्तनसिद्धये निर्वीजा
वासनायत्रतत्त्वसिद्धिदस्मत् २० जिसवित्तेंवासनावीजहै सोसुषुप्तमोक्षसिद्धिकाकारणनही जिसवित्तेंज्ञानअग्रिकरकेदग्धहोइवीजशक्ति
जिसकीऐसीवासनाहै सोतर्पपदसिद्धिदायककहियाहै शास्त्रावित्तें २० वासनायासत्थावकेरूपकापिद्विषामपि स्नेहवेरविषाणायः शेषः स्वल्पोपिवा
यते २१ वासनाका तैसेअग्रिकाकरणका रोगका वैरीका रागका वैरका वित्तेंका अल्पभीषणस्थितहुआक्रमकरकेवृद्धिकोप्राप्तहुआहुःखदेताहै २१

एकपुरुकेशिखर=

दशाकी
ऐसी

सोऽसुसहितवासनास्थावर
दिवस्त्वितरेवस्थिते

निर्दग्धवासनावीजः सन्नासामान्यरूपवार सदेहोवाविदेहोवानभयोडः त्वभाभवेत् २२ ज्ञानाग्निकरके निर्दग्धकिआहे संसाध्यंकरका कारणवासनावीज
जिसेने पेसाजोहेजानी अदेतआत्मासन्नामात्रस्वरूपवान सोदेहसंयुक्तहो अथवादेहरहितहो फेरदुःखभागीनहीहोतोहे २३ चिह्नकिर्वसनावीजत्रपिलीसा
पथिगिली स्थितारसन्नासामान्यरूपवारदिवस्त्वितरे २४ अज्ञानकेआवरणवालीजोचेतनशक्तिहे सोहीवासनाकावीजहोहे स्वप्रसिद्धभावा वासनावितरे
संरूपकरकेस्थितहे जेसेवीजवितरे अंजुकरकेअग्निकरणवालीरसंरूपाशक्तिहे अग्निदाहकरकेजेसेमनहोताहे तेसेज्ञानकरकेआवरणरसदग्धहोता
हे २५ बीजेसल्लासंरूपेराजाशेनजडरूपिष इवेषुद्रवभावेनकाठिन्येनेतरेषुच २६ बीजांविरेवजोहोतीहे पृथिवीजलकेसंयोगतेउत्पन्नतातिस
करकेजानीतीजोहेवीजांविरेव अंजुअज्ञाननेकीशक्तिरूपकरकेचिह्नकिस्थितहे जडस्वरूपावितरेजडरूपकरकेस्थितहे धनरत्नादिद्रवोवितरेमंग
लभावकरकेस्थितहे शिलादिकावितरेकठिनतारूपकरकेस्थितहे २७ भस्मस्थानियरूपापासुषणपुरपिली अग्निनेषसिनस्थिराशितधारत
यासिषु २८ भस्मवितरेधडवितरेअग्निगुणगुणरूपाभीस्थितहे मलिनवितरेनेत्रेद्विकेआधारवितरेभीमलिनताकोमलनारूपस्थितिकरके
खड्गावितरेतीक्ष्णधाररूपकरकेचिह्नकिहे २९ आत्माशक्तिः परार्थेषुतथावदुपरादिषु सर्वसंज्ञासामान्यरूपमाश्रित्यतिष्ठति ३० वरपरादि
संवेवस्त्वितरेआत्माहीसन्नासामान्यरूपधारकेवदवितरेजलधारणशक्तिरूपपरदेवितरेशीतनिवारणादिनानाशक्तिरूपहोआस्थितहे ३१ इतीय
मविलाहणपदशामास्यसंस्थिता यथावरापराप्रादुम्बरात्तिलनीतया ३२ इत्यप्रकारकरकेपदचिह्नकिसेरणदृश्यपदशकोसरकरकेस्थितहे
जेसेमद्यकीहोराहेवस्त्वकेजेसीढकनेहारीजिसकीचेसीजोहेवर्षाअतमोअंवरकोपरकरकेस्थितहोतीहे ३३ स्वरूपमस्यप्रवेनस्त्वितप्रवि
चारितम् अ सर्वसर्वतोवापिसदित्तास्त्वयात्मकम् ३४ इसअज्ञानावृत्तचित्तशक्तिकास्वरूपभलीप्रकारविचारितकदिआहे सर्वसेभिन्नसर्वबापकसत्
जैसा अ सन्मायाकार्यकेसाथअभेदकोप्रपतऊआभासताहे ३५ आत्महृदिरेखेवाससारभ्रमदायिनी दृष्टासतीसमग्राणांडः त्वानांक्षयकोरिली ३६
आत्मारूपदखिनहीसातात्कारकिईहोईसेसारभ्रमदेतीहे आत्महृदिरेखीहोईसर्वदः त्वानांक्षयकरतीहे ३७ अस्मास्तः दर्शनेयमदविद्यामुच्यते
येः अविद्यादिजगद्वत्सुतः सर्वप्रवर्तते ३८ इसआत्महृदिआजोअपरीनदेदर्शनविरोधीआवरणहे सोपेडितोनेअविद्यापेसेकहीताहे अविद्याही
जगत्कारणहे अविद्यातेसवअहंकारकामकायदिकप्रवृत्तहोताहे ३९ अविद्यारूपरहितायावेदावलाकणे तावेदुगलताप्रतिनाएयथातये
३१ अविद्यावास्तवस्वरूपकरकेरहितहे जिससमयवितरेअविद्याकीविचारदृष्टिकरकेदेखीतीहे तिसीसमयवितरेगलतीहेप्रीतिजेसेवर
पुकीकलीधुपवितरेगलतीहे ३२ यथानुरागलत्रिप्रोयावत्कलनयामनाक विमृशणशयतावन्निद्रातस्यविलीयते ३३ जैसेमनुष्यनिद्रा
याडीगलतीहोई अपनेचित्रकेवृत्तातकोबुद्धिचक्रिकरकेविचारताहे जिससमयवितरे तिसीसमयवितरेतिसमनुष्यकीनिद्रालीनहोती
हे ३४ यथाचकीदृग्गुस्त्वितदितियावहिकल्पते अविद्यातीयतेतावदालोकान्यतायथा ३५ जैसेसूर्यादिवस्त्वकेसोहे क्यासतोहे अथवामेही
भौतिकरकेकल्पितहेपेसजवविचारीताहे तवरजुकीअविद्याहीणहोतीहे जैसेप्रकाशकरकेनेत्राकाअंधकाररुतआवरणहीणहोतोहे
३६ दीपहलायथाभेतिगमोहपदिहृत्तया तथाविलीयतेसर्वतमसापेहोतयाथा ३७ जैसेदीपकलौकरकेअंधकारकास्वरूपदेवनेकीइकाकर
केअंधकारकेसंमुखजाताजवतवजैसेअंधकारलीनहोताहे तेसेविचारकरकेअविद्यासंयुक्तसर्वजगत्लीनहोताहे जैसेसंतापोकरकेहृत्त
लीनहोताहे ३८ नचसंलक्ष्यतेदीपेतमसोरूपनिश्चयः उदेतिकेवलंधातंधुसोविमलमूर्तिमार ३९ दीपलिपहोपअंधकारकास्वरूपनिश्चयनही
लखीताहे केवलअंधकारकानाशहोताहे निर्मलमूर्तिवाला ३५ एवमालोकमानेपाकापियातिपलायते असंख्योदयस्तथाहूपतेखविचार
णात् ३६ जैसेअंधकारकेजैसेअविद्यामंदविचारकरकेदेखीतीमंदमंदजाउतीहे भलेविचारकरकेनसजातीहे अवस्तुतेअविद्याअसत्स्वरूपहे
ही ३७ अविचारकरकेदेखीतीहे ३८ आलोकआगतेयाहृत्तमस्तहूपतेतथा तदस्तुतवविद्यायास्त्वितस्त्वप्रतीयते ३९ जैसेप्रकाशआहोपअंधकार
असत्स्वरूपवस्त्वदेखीताहे तेसेआत्मविचारआहोपअविद्या अवस्तुदेखीतीहे कोईअंधकारकोयुक्तिकरकेवस्वरूपताकहे प्रकाशकरकेअंधकाररूप
ताहे तिसकाअंतगभावनहीहोताहे जैसेउसाताकरकेजलकीप्रीतलाताकपतीहे प्रकाशगहोपअंधकारदेखीतीहे जैसेउसातागहोप

दिकां

उपरा

ही

असत्स्वरूप

निर्वाणभा
पा
२१

जलकीशीतलताफेरदेखीतीहै १८ द्युक्तिहै तथापि अविद्याका अस्वरूप प्रकाशिक अर्थ ताऽभावके अनुभवकरके जानिनाको प्रतीत हो ता
हीहै ३० याचनालोकाते तावन्न किंचिदपि दृश्यते आलोक्षिते यथाऽविद्या तत्राप्रतिपद्यते ३८ ऊर्ध्वक अक्षिरज्ज्वादिक अथवा जलतर्पीदिक जो
ताईनही विचारकर देखीताहै ताताईसतवस्तुनही देखीताहै विचारकर देखते होए जिससंभावनाली अविद्याहै जेसे वस्तुतत्त्वहै तेमेही पाईताहै
३८ रक्तमांसस्थियनुमिक्तः स्यात्तस्मात्तिसुखमयावहिचार्यते तावत्सर्वमाश्रयित्वीयते ३९ रक्तमांस अस्थीकायं त्रयीरहै इसवित्विही कोनहै
एहअपजबविचारीताहै तबही शरीरवित्वेअहंताममताप्रमादिक सबगोलीनहीनहोताहै ३९ आद्यतयोरसद्वेनूनपरिहृतहैदा सर्वस्मिन्नेवयुः
शेषसमविद्यादयंविदुः ४० विचारवालेमनकरके आदिअतवित्वेअसत्स्वरूपमवदृष्टपरिअयकरकेदूरकितेहोए जोशेषरहता चिदात्माहैतिसको
अविद्यातयजानतेहैजानी आत्मावित्वेअथसअविद्याका अभावआत्मातेभिन्ननही ४० तन्न किंचिच्च किंचिदातस्मद्वेनवशाप्यतम् तद्वस्तुतदुपादेय
यदविद्यानिवर्तते ४१ जिसकेज्ञानकर अविद्यानिवृत्तहोतीहै सोऊर्ध्वदृष्टपरूपनही ऊर्ध्वअकथा सोमत्तब्रह्माहीहैसनातनेहै सोसारवस्तुसोही प्रमाणक
रणा ४१ रूपस्वानामपरासाज्ञायेतेनिःस्वावकम् नहिजिद्वगतरसासाहो न्यसाप्रतीयते ४२ इसअविद्याकास्वरूपअपनीसत्तारहितअपनेनामते
मिथ्याहीजाणीतोहै मायाअविद्यानामस्वप्नादिपदार्थवित्वेप्रसिद्धहै जिह्वावित्वेसकासादृज्ज्वातेहीप्रतीतहोताहै द्वाप्रमाणातेनहीप्रतीतहोताहैजेसे
तेसेअविद्याकामिथ्यासंभावअविद्यानामतेहीजाणीताहै ४२ नाविद्याकचिदप्यसिद्धस्वरूपमवलिप्ततम् सदसत्कलनास्फारमयायेनमरिणुतम्
४३ अविद्याकहीदेशकालवित्वेसतनही एहभासमानअखंडब्रह्माहीहै जिसवृत्तनेसर्वजगतअपनेप्रकाशकरकेशोभितविआहै केसा
हैजगतस्पष्टसत्त्वकल्पनाकोहैविसारजिसवित्वे ४३ एतावदेवाविद्यायानेद्वस्वप्नतिसुखः एतदेवक्षयोयः स्याद्ब्रह्ममितिनिश्चयः ४४ इसना
हीअविद्याकास्वरूपहै जोएहजगतवृत्तनहीएहनिश्चयहै एहीअविद्याकाक्षयहै जोएहसर्ववृत्तहैएहनिश्चयहै ४४ वृत्तपरशकटावभासजालनविभ्रितीसुहि
तहमात्रविद्या वृत्तपरशकटावभासजालविभ्रितिविचलितेवसातविद्या ४५ मोलोपायेऽविद्याविक्रिमानमरुमः सर्गः १ अडाकपडाशकड ५मादिकभास
काहीहैजोगतजालसेविभ्रनहीइसनिश्चयकरकेसाअविद्यासब्रह्मावित्वेउदयकोप्रपूहतीहै वृत्तपरशकटपादिकभासमानजगजाल विधुहैएह
निश्चयहैजबहोवेतवसाअविद्याअवपगलतीहै ४५ इतिनिर्वाणभाषायादशमः सर्गः १० श्रीवसिष्ठउवाच पुनः पुनरिदंमप्रवोधार्यमयोद्यते अभासेनवि
नासाधोनाभुदेपातमभावना १ वसिष्ठउवाच हेराम वारंवार एहब्रह्मकाउपदेशप्रकारं तोंकरकेकहीताहोहैसोज्ञानकेदृढतानिमित्त हैसाधोअभासको
विनाआत्मभावनानहीउदयहोतीहै १ अज्ञानमेतद्वलवदविद्यतरनामकम् जन्मान्तरसहस्रात्यवनस्थितिसुपागतम् २ सवाद्याभ्यन्तरसुवर्णिचिरेनुभूय
ते भावाभावपुदेहस्यतेनानिवृत्ततागतम् ३ एहअज्ञानवलवानहै अविद्याहैहोरनामजिसका अनेकहजारजन्मातरंसेउठिआहैएहस्थितिकोप्राप्तहोहै २
मेअदिकजोहैइदियाअतिप्रबलवाह्याभ्यन्तरब्रह्ममातानिकोकरकेअनुभवहोताहैहैतनुअज्ञानका देहकेजोहैभावावस्थाजीवनजागरादिकतिनोवित्वे
इदियाकरकेदेहकाअनुभवहोताहै देहकेजोहैअभावावस्थामरणप्रलयादिकतिनोवित्वेसाहीनेअनुभवकरीताहैअज्ञानतिसतेअतिप्रबलहैज्ञानाभा
सविनानष्टनहीहोताहै ३ आत्मज्ञानतसर्वेषामिन्द्रियाणामगोचरम् सर्वाकेवलमाधातिमनःसुखेन्द्रियतये ४ आत्मज्ञानतोसबइदियाकाअविषयहैम
नहैकिवाजिनोवित्वेसीआजाइदियाहनतिनाकेलयहोतेकेवलभासतोहै ४ प्रोक्तव्येन्द्रियजानियस्थितंतत्त्वकिल यातिप्रसूतताज्जोः प्रत्य
क्षातीतवृत्तिमत् ५ इन्द्रियज्ञानविषयकोलंघ्यकरकेजोआत्मतत्त्वस्थितहैलोकिकप्रमदकोलंघ्यवर्तताहै सोदेहाभिमानजीवकोकैसेनिश्चयक
रकेप्रत्यक्षहोवे ५ तमविद्यालतामेताप्रब्रह्माहदयदुमे ज्ञानाभासविलासासिपातेस्थितिसिद्धये ६ हेरामएहअविद्यालताहदयप्रवृ
त्तवित्वेचहीहोईहै इसको अवलमननादिकजोहैज्ञानाभासकेविलासप्रवृत्तपातानिकोकरकेहोआत्मसाक्षात्कारकेसिद्धिनिमित्त ६ यथा
विहरतिज्ञातज्ञेयोजनकभूपतिः आत्मज्ञानाभासपरस्तथाविहरणव ७ जैसेराजाजमीनानोहैआत्माजिसनेसोराज्यादिव्यवहारकरताहैआत्म
ज्ञानाभासवित्वेनितवर्तताहैतेसेहेरावतमभीवरतो ७ निश्चयोयमभूत्सकार्यकार्यविहारिणः जायतस्तिष्ठतोवापि न ज्ञातेनसमता ८
कार्यजोवाह्यव्यवहारअकार्यजोसमाधितिसकरकेवर्तताहोहैराजाजनकतिसका एहसुखजैसेअनुभवविश्वयुक्ताजागतेस्थितहोतेभी सोअभा

अविद्यानाम=

उठतेभी=

सकाफलनिरावरणज्ञानहे तिसजानकरके प्रकटहोताजोहैसबप्रतिसकीहीसत्यताहै सावरणज्ञानकरकेजोप्रकटहोतिसकीनहीसत्यताहै ८ निश्चये
 नहरिचैनविविधाचारकारिण योनिधवतरसर्वागतजस्तबुदाहृतम् ९ जिसनिश्चयकरकेहरिअनेगर्भयोनीविलेखवतारधारतहनअने
 कप्रकारव्यवहारकरताभीहै दुःखीकरकेलिप्रनहीहोताहै सोआत्मज्ञानकाप्रभावविवेकिबुरकोनेकहिआहै ९ निश्चयोचस्तिनेत्रस्य
 कानपासहेनिष्ठतः ब्रह्मणोवापरागस्यसतेभवतगव १० (योनिश्चय) मोरीसुंदरीसाथसदास्थितभीहै तथापिसंभोगरागभूतिजोहैविनेत्र
 शिवनिसकाजोनिश्चयहैअथवाब्रह्मासद्विकर्ताभीहैतथापिसद्विवेकागरहैतहैतिसकाजोनिश्चयहै सोनिश्चयहेरावतमकोहो १० योनि
 श्रयः सरगुरोर्वाक्यतेभार्गवस्यच दिवाकरसाशपिनः पवनस्याः नलस्यच ॥ नारदस्यपुलस्त्यस्यममचां गिरसस्तथा प्रचेतसोभृगोश्चेवक्रतोरत्रेःश्रुक
 स्यच १२ अनेषामेवविप्रेन्द्रराजर्षीणांचरावव योनिश्चयोविमुक्तानांजीवतातेभवतसो १३ श्रीरामउवाच येनेतेभगवन्भीरानिश्चयेनमहाधियः वि
 श्रोकः सांस्थितास्तमेवद्वानुग्रहितजतः १४ देवगुरुहस्यति श्रुत्वा सद्यंचंद्रमा पवनश्रुति नारद पुलस्त्य हो अंगिरा प्रचेता भृशक्रतु श्रुति श्रुक हो
 रजोहैजीवन्मुक्त ब्रह्मर्षीराजर्षी इनकाजोनिश्चयहै हेरावत सोनिश्चयतुकोहो १३ श्रीरामउवाच हेभगवन् जोतुमनेकहेहैमहाबुद्धीधीर सोजिसनि
 निश्चयकरकेप्राकरहितस्थितहै सोनिश्चयहेब्रह्मन्मुक्तकोतत्त्वकरकेहो १४ श्रीवसिष्ठवाच रामप्रभुमहावाहोविदिताविलवेद्यहै स्फुटंस्फुटंय
 ध्याएषमयमेवोदिनिश्चयः १५ श्रीवसिष्ठवाच हेराजपुत्रमहाबाहो जान्याहैसबजगत्तुमनेयोग्यवस्तुजिसनेउसीजोतुमहो सोतुमजोसाप्रशक्तियाहै
 तेसासुखो जेसाएहजीवन्मुक्तोका निश्चयहै १५ यदिकिंचिद्विभोभिजगज्जालप्रदृश्यते तत्सर्वमविलेख्यं ब्रह्मभवेत्येतद्व्यवस्थितम् १६ जोएहप्रत्यक्षजोऊक
 विलारसहितजगज्जालदेवीताहै सोमबर्णब्रह्मपदनिश्चितस्थितहै १६ ब्रह्मचिद्विभुवनब्रह्मभूतपरंपरा ब्रह्माह्मब्रह्ममह्मब्रह्ममन्त्रिब्रह्मवाच्यः १७
 ब्रह्मकालत्रयंतत्त्वब्रह्मणोवच्यवस्थितम् तस्मात्कालयासो धियंयातनिविवर्द्धते १८ तथापदार्थलक्ष्यमिदं ब्रह्मवितुर्हते ब्रह्मचेतन्यहै ब्रह्मजगत्तेहै ब्र
 ह्मस्यावजंगमप्राणिपरंपराहै होब्रह्माहो मेराशत्रुब्रह्महै मेरेभिन्नवाधवब्रह्महै ब्रह्मभूतभविष्यवर्तमानकालत्रयहै सोब्रह्ममायिकअव्यवस्थितहैप
 कातागकरपारमायिकमुपनेब्रह्मस्वरूपविलेखीस्थितहै जेसेतेरगमालाकरकेसमुद्रआपविलेखिकोप्रापतहुआजेसाभसताहै तेसेपदार्थलक्ष्यीक
 रपदब्रह्मसप्रकारवृद्धिकोप्रापतजेसाभसताहै १८ ॥ गृहातेब्रह्मणाब्रह्मभुज्यतेब्रह्मब्रह्मणा ब्रह्मब्रह्मणिहोहोभिर्ब्रह्मणोवर्द्धहति १९ ॥ ब्रह्मनेव
 ह्यगृहणकरीदाहै ब्रह्मनेवब्रह्ममहणकरीदाहै ब्रह्मविलेखब्रह्ममायाकेकिएअन्यथाप्रतिभासोकरकेवधताजेसाहै १९ ॥ (रागादीनामवस्थानाकल्पि
 तानां तु वृक्षवत्) ब्रह्ममह्मब्रह्ममेवब्रह्मणः प्रियकृद्यदि तद्ब्रह्मणि ब्रह्मनिष्ठं किमप्युक्तमपि चिह्नतम् २० ॥ रागादीनामवस्थानाकल्पितानां तु वृक्षवत् २१
 असंकल्पेन नष्टानां कः प्रसंगो ब्रह्मने ॥ मेराशत्रुब्रह्मजोब्रह्महै सोब्रह्मस्वरूपमेरेकोअप्रियकरजव तवब्रह्मविलेखनिष्ठकिसकाकिया ब्रह्मभिन्नत्वाहै
 जिसकेसाथहेपकरेब्रह्म २१ ॥ रागदेषादिकअवस्था आकाशवृत्तजेमेकाल्यतेहैमेकल्यकर संकल्पकेसागकरनछहोतेहै इनकाब्रह्मविलेखधनेकाको
 नप्रसंगहै सर्वत्रब्रह्मदधिकरकेरागदेषनहीहोताहै २१ ॥ ब्रह्मल्लेखिसर्वसिंश्ररणस्यन्दनादिकम् २२ स्फुरतिब्रह्म सकलं सुखितादुःखितेजतः ॥ एतं ब्र
 ह्मविलेखीगमनादिककियाभासतिआहै सर्वत्रब्रह्महै इसविलेखसुखदुःखादिकवास्तवकहाहै २२ ॥ ब्रह्मब्रह्मणिसंरावृत्तावृत्ताणिसंस्थितम् २३ स्फुर
 तिवृत्ताणिवृत्तादमस्मीतरात्मकः ॥ ब्रह्मब्रह्मविलेखतुहै ब्रह्मविलेखब्रह्मस्थितहै ब्रह्मविलेखब्रह्मस्फुरताहै होब्रह्मनेभिन्नस्वरूपनही २३ ॥
 चरेवृत्तापदीवृत्तावृत्ताहमिदमाततम् २४ अज्ञां राग विरागाणामेव कलनेहका ॥ वरब्रह्महेपदब्रह्महै एहहोब्रह्मवापकहो एकब्रह्महै इसनेरागदेषाकी
 रचनकीनहै २४ ॥ मरणब्रह्मणिसिरेदेहेब्रह्मणिसंगते २५ दुःखितानामकेवस्थादुःखसर्वभ्रमोपमा ॥ मरणब्रह्मविलेखहेब्रह्मआपसंगतेहोए दुःखदशाराज
 सर्वभ्रमजेसीकोनहै नहीकोईहैब्रह्मदधिकरके २५ ॥ संभोगादौ सुखेवद्वाराण्यस्थितदेहवृत्ताणि २६ संपन्नमेतन्मतिमुधास्यात्कलनाकृतः ॥ देहवृत्तादिविषय
 ताहोएविषयसंभोगादिको विलेखोसुखहै सोसुखमुक्तकोहोआपदेमिष्याकल्पनापरमानंदब्रह्मविलेखिसनिमिजमेहोवे २६ ॥ वीच्यममोध्यस्यन्दनो
 नलनादवनीयथा २७ तजामनेतथानसोब्रह्मणिस्यन्दरुणिता ॥ चलतेजोहै जलओरतेरासोजलसेनहीभिन्नहैजेसे रागदेषादिचंचलताके तेसे
 कारणजोहैतेभावअदेभावसोब्रह्मविलेखनहीहै २७ ॥ यथावर्गमृतेतोयेनकिंचिन्मियतेकचित् २८ मतिब्रह्मत्वमायातेदेहवृत्ताणिवेतथा ॥ जेसे
 आवर्गजोहैजलकाभ्रमणतिसकेनाशहोए जलविलेखहीऊकनहीनछहोताहै तेसेदेहवृत्तामरणरूपब्रह्मभावकोजाग्रहोएऊकनहीमरताहै २८ ॥

सुखेकरमा
 ब्रह्मविलेख

इच्छा

ब्रह्मविलेख

निर्वाणभा
षा
२२

२२

युक्त

तेसे
जो अर्थ है प्रकृति
यमोग

भिन्नजैसा

रूप

यथाचलाचलेतोयेतन्नामनेननिष्ठतः २१ तथाजडजडैरुपेनस्थितेपरमात्मनि ॥ चंचलजलविवेचं अथवाचंचलनिश्चलविवेचं तंभावग्रहंभाव
हीस्थितहोतेजैसे तेपरमात्माविवेचजडअजडरूपनहीस्थितहोते २॥ कटकतयथाहेमोयथावर्जितलस्यच ३ तदतद्भाववृत्तेयं तथाप्रकृतिरा
त्मनः ॥ जैसेसर्वणीकी कंकणता जैसेजलकाध्रमण जैसेआत्माकीप्रकृतिमायिकस्वभाव तिसआत्माकीहीतिसआत्मासेभिन्नभावभासनस्वरूपहे
३॥ इंदहिजीवभूतामजडरूपमिदंभवेत् इत्यज्ञानात्मनोमोहोनचज्ञानात्मनः क्वचित् ३॥ एहजीवरूपआत्माहे परजडरूपहे ऐसामोहोजिसकोआ
त्माकाज्ञाननहीतिसकोहोताहे जिसकोआत्मज्ञानहे तिसकोकहींदेशकालविवेचसामोहोनहीहोताहे ३॥ अत्रमृदुःखात्रमयजस्यानन्दमयजगत्
अत्रधुवनमयप्रकाशतत्त्वसचक्षुषः ३॥ अज्ञानीकोडुःखसमूहैरुपजगतभासताहे ज्ञानीकोआनंदमयभासताहे जैसेअंधकोजगतअंधकारमयभा
सताहे निर्मलनेत्रकोप्रकाशमयभासताहे ३॥ जगदेकात्मकेजसमूहस्यस्वातीवडुःखदम ३३ शिरोरिवस्फुरद्यत्तानिशाप्रसक्तुकेवला ॥ ज्ञानीकोजग
त एकआत्मस्वरूपहे अज्ञानीकोअग्निडुःखदायकहे जैसेबालककोभ्रमकरकेरात्रिविवेचयत्स्फुरताहे युवावृद्धपुरुषकोकेवलरात्रदीभासतीहे
३३॥ अस्मिन्प्रसृतदेहितमेकस्मिन्सर्वतः स्थिते नकिंचिन्म्रियतेनामनचकिंचनजीवति ३४॥ ब्रह्मस्वरूपएकअमृतकलशानित्यएकसर्वत्रस्थि
तहे इसविवेचनजहुजीवताहेनकुछपरताहे ३४॥ यथालासविलासेषुननपतिनजायते ३५ तरंगादिमहास्रोथोभूतवृन्देतथात्मनि ॥ जैसेसमुद्रवि
वेचअनेकजलकेउछलनविलासहोतेतरंगादिकनछनहीहोताजनमतानही तेसेआत्माविवेचआकाशादिकभूतसमूहैनछनहीउत्पत्तनहीहोता
हे ३५॥ इंदनात्मीदमस्तीतिभ्रात्रिनामात्मनात्मनि ३६ शक्तिर्निर्देहेतानुःस्फुरतिस्फुरिकाश्वर ॥ जगच्छापात्मनामेवब्रह्मात्मनिसंस्थितम् ३७ न
रंगकणजालेनपथसीवपयाचनुम ॥ एहवस्तुहे एहवस्तुनही एहभौतिकारणमायाशक्तिनिष्कारणआत्माविवेचुरतीहेआत्माकरके जैसेस्फटिककीअ
नेकप्रतिबिंबोंकीधारणकीयोग्यताहोताहे तिसकीकारणनिर्मलताहे सोनिर्मलताही अनुकप्रतिबिंबस्वरूपकरके प्रतिबिंबोंकेअनेकप्रणक्रिया
दिस्वरूपकरकेभीफुरतीहे जैसेमायाशक्तिजगत्स्वरूपकरके तिसतिसवस्तुप्रतिकुरकेभीफुरतीहे भासतीहे भासनाआत्माही सोआत्माब्रह्मयुद्ध
यस्वरूपआत्माविवेचहीस्थितहे जैसेतरंगकणसमूहकरजलविवेचहजलहीस्थितहे ३७॥ शरीरनाशेनकथंब्रह्मणोमृतभीर्भवेत् ३८ ब्रह्मणोम
निरिक्तेदिशरीरादिनविद्यते पथमोवागिरेकोणतरंगादिमहालीवे ३९ शरीरनाशकरकेब्रह्मकीनाशबुद्धिकेसेहोवे ब्रह्ममेंभिन्नशरीरादिकनहीहे
जैसेमहासमुद्रविवेचजलसंभिन्नतरंगादिकनहीहे ३९ यःकलोवाचकणिकयावीचिद्यस्तरंगकः यःफंगावाचलहरीतद्यथावारिवारिणि ४० योहे
दायाचकलनायदृश्योदयाक्षयो याभावरचनायोयस्तद्यथातद्विब्रह्मणि ४१ जोजलविंडुहे जोसूक्ष्मविंडुहे जोसूक्ष्मतरंगहे जोतरंगहे जोफे
नहे जोलहरीमहातरंगहे सोसबजलविवेचजलहीहे जैसेजोरेहहे जोकननाइंद्रियाकीदृष्टिहे जोहृषभोग्योग्यहे जोतद्यविपत्तहे जोअतयसंपदा
हे जोभावहे हृषभोकादिकसोब्रह्मविवेचब्रह्महीहे ४१ संस्थाभरचनाचित्राब्रह्मणः कनकादिव नान्यस्याविसृष्टानामेवैवदितभावना ४२ विचित्रजो
हेस्यावरजगमोकीआकाररचनासोब्रह्मसेहोतीहेब्रह्ममेंभिन्नरूपनही जैसेसर्वणसेकंकणकुंडलादिकआकाररचनासर्वणसेभिन्ननही हेतभाव
नामिथ्याहीहे ४२ मनोबुद्धिरहेकारलमात्राणिद्रियाणिच ब्रह्मवसर्वनामात्मसत्त्वडुःखविद्यते ४३ मन बुद्धि अहंकार सत्त्वपंचमहाभूत इंद्रिया
एहसबमायातेअनेकरूपब्रह्महीहे सत्त्वडुःखनहीहे ४३ अयंसाहमिदंचित्रमिथाद्यथोत्ययागिरा शब्दः प्रतिश्रवणाद्रविद्यामात्रनिजभाते ४४ जैसेप
कहीशब्दपर्वतकेनिकटप्रतिधनिरूपकरके दौंवेरीकहियाजैसाभासताहे तेसे एहसो हों एहचित्रइत्यादिकपदार्थोंकेनामोंकरकेएकआत्माहीआप
विवेचफुरताहे ४४ ब्रह्मवातातमतत्त्वमभागतमिवस्थितम् यथादिदृश्यतेस्वप्नेवेतसात्मात्मनात्मनि ४५ ब्रह्महीअज्ञात अज्ञभावकोजीवजगत्भावका
आप्रहाअजैसास्थितहे जैसेस्वप्नविवेचआत्माही चित्रकरकेआपविवेचआपकरकेविचित्ररूपदेखीताहे ४५ अभावितब्रह्मगयाब्रह्माज्ञानमलंभवेत् अभाव
तेहेमतयायथाहमचुमुद्रवेत् ४६ ब्रह्मस्वरूपकरकेनहीजायाब्रह्मअततज्ञानरूपभासताहे जैसेसर्वण सर्वणरूपकरकेनहीजाया पीलीमृत्तिकाभासती
हे ४६ स्वयंप्रभुर्महामेवब्रह्मब्रह्मविदोविदुः अपरिज्ञातमतानामज्ञानमितिक्वणो ४७ ब्रह्मकोजाननेहारेस्वयंप्रभुमहात्माहीब्रह्मकोजाणतेहे अ
ज्ञानियोंको अज्ञातब्रह्मअज्ञानभासताहे ऐसीकहीताहे ४७ ज्ञातब्रह्मतथाब्रह्मब्रह्मैवभवतिदत्तात् ज्ञातेहेमतयाहमहेमैवभवतिदत्तात् ४८ ब्रह्म
पकरकेज्ञातब्रह्म दत्तामात्रतेब्रह्महीभासताहे जैसेसर्वणरूपकरकेज्ञातसर्वण दत्तामात्रतेसर्वणहीहे ऐसेभासताहे ४८ ब्रह्मात्मासर्वशक्तिहित

महा

२३

नद्यथाभावयत्तलम् निहेतुकः स्वयंशक्त्या तत्राद्यप्रपश्यति ४५ आत्मास्वयं ब्रह्मसोऽस्मि जीवजगत्स्वरूपकरके अथवा ब्रह्मरूपकरके जैसी भाव
 नाकरतो हे मायाशक्तिकरके जैसे सोही होदे रवतो हे हेतुजो हे प्रयोजनतिसरहित ४६ अकरके कर्मकरणप्रकारणमनामयम् स्वयं प्रथमहात्मानं ब्र
 ह्मरूपविदो विदुः ५० कार्यसंभित्त कर्मासंभित्त क्रियासंभित्त साधनसंभित्त हे कर्म कर्ता क्रिया साधनजिसचित्तेनही विदरहित स्वरूपके वोधते अपने स्वरू
 पके पावनेको समर्थ आपक आत्मा ब्रह्मको ब्रह्मज्ञानी जानते हैं ५० अपरिज्ञातमज्ञाना मज्ञानमिति कथ्यते परिज्ञातं भवेज्ज्ञानमज्ञानपरिज्ञानम् ५१ अज्ञा
 तब्रह्म अज्ञानिओं को अज्ञानरूपदे एतक ही तो हे शास्त्रातिरेक ज्ञातब्रह्मज्ञानीओं का ज्ञानरूपदे अज्ञानका नाश करलो हार ५१ अमुनि वासमि तातो ब्रह्मपरितिक
 थ्यते परिज्ञातो भवेद्वन्धुबन्धुभ्रमनाशनात् ५२ अप्रनावन्धुही नही पछान्या अवन्धु हे पेसेक ही तो हे पछान्या बंधु होतो हे अवन्धु भ्रमको नाशते ५२ इदं ब्रह्ममि
 त्यनेकी ते सो देति भावना यस्मादद्युक्तो देर स्याद्यथा किल विरज्यते ५३ एतजीवजगत्स्वरूप अयुक्त हे विचारविना भासतो हे एत अंतर निश्चित होए सो ब्रह्मभावना उद
 य होती है जिससे तेने अयुक्त मिथ्याश्रुतिरजतादिको ते विरजता प्रसिद्ध है जिस विचारणकरके जगतो भोगाते पुरुष विरक्त होतो हे ब्रह्मभावना होती है ५३ हे ते
 ज्ञानसममि तेने की ते सो देति भावना तस्मादेता ज्ञेय स्याद्यथा किल विरज्यते ५४ हेत ता असम्यहे एत अनरज्ञात होए सो ब्रह्मभावना उदित हो नि सस्य सत्य हे तेने विरस
 ता होती है जिससे तेने भोगाते विरक्त होतो हे एत प्रसिद्ध है ५४ अयनादमिति ज्ञाते स्मुरे सो देति भावना मिथ्याहंकार ज्ञात स्याद्यथा नन विरज्यते ५५ एत एतदस्य लस्य ल
 पदो नही पेसे प्रकट जाणते होए सो ब्रह्मभावना उदय होती है जिस ज्ञातने अहंकार स्वरूप मिथ्या भासतो हे जिस मिथ्यात्व विचारणकरके नाम सत्य तेने विरक्त होता
 है ५५ अहंकारमिति ज्ञात सत्य सो देति भावना तस्मिन्सत्ये निजे ज्ञेय यानाः परिलीयते ५६ ब्रह्मही होतो पेसे सत्य स्वरूप ज्ञात होए सो ब्रह्मभावना उदय होती
 है जिस ब्रह्मभावना करके जिस अयने सत्य स्वरूप चित्ते जीवजगत्भावलीन होता वाधित होता ५६ सति विस्मयजेतस्मिन्सत्यो दमिति वेद एतम् तमहेता
 दिवायेत सदिता दिजगत्तम् ५७ अत एव महावाक्यार्थ अपरिच्छिन्नस्वभावकरके प्रकट होए एत जगत् ब्रह्म हे एतमे जाणता हो तं भावग्रहभावका
 वाध होए सो प्रसिद्ध सत प्रिय भासन नाम रूप एत पंच जगत् विते स्थित सर्ववस्तु ब्रह्म ही है एत ही जाणता हो ५७ सत्य सर्व प्रकार हो ब्रह्म दमिति वेद
 हम् न मे दुःखेन कर्माणि नेपेमा होन वाञ्छितम् ५८ सर्व प्रकार सुख एत जगत् सत्य ब्रह्म हे एत ही जाणता हो मुक्त को नही दुःख है न कर्म है न मोह है न श्रद्ध है ५८
 समः स्वस्थो विप्रो को मि ब्रह्माहमिति सत्यता कलाकलंकुं कला मि सर्वमस्मि निरामयः ५९ सम स्वरूप चित्ते स्थित शोकरहित ब्रह्म हो पेसे सत्य स्वरूप भाव हो
 संकल्पादिकलंकरहित हो सर्व रूप हो निर्दुःख हो ५९ नराजमिनवाक्कामि ब्रह्माहमिति सत्यता अहंरक्त महेमा सम दमस्थी नंदवपुः ६० न त्यागता हो न चो
 दता हो ब्रह्म हो एही सत्यता है ही रक्त हो हो मांस हो हो अस्थी हो हो शरीर हो मुक्तो भिन्न जगत् नही ६० चिदहं चेन्न न वा हे ब्रह्माहमिति सत्यता यो रहं ए
 महे साकर्महमाशा भुवा पदम् ६१ अदचिन्मात्र हो चिदाभास हो ब्रह्म हो एही सत्यता है स्वर्ग हो आकाश हो सूर्य सदिता हो एत दिक दिशा हो मु
 नेक भूमिका हो ६१ अहं ब्रह्म पराकाशो ब्रह्माहमिति सत्यता अहं त एमहं वो वीशुत्माहं कानना यत् ६२ हो वाट पराकाश हो ब्रह्म हो एही सत्यता है हो
 त एमहं हो एधि वी हो हो जाड हो हो वन आदिक हो ६२ शैल सागर सार्थो हेतु ब्रह्म कलिकिल स्थितम् आदा नदान संकोच एवैका भूतशक्तयः ६३
 पर्वत सागर प्राणिसमूह हो हो ब्रह्म की एकता निश्चय करके स्थित है लेणा देणा संकोच न देणे की इच्छा इत्यादिक प्राणि आ कि आशक्ति आ हो ६३
 सर्वमेव चिदात्मा मि ब्रह्म एपात तत्र पृथक् लता गुल्मादुःरादीनामहं संभवेने प्रियम् ६४ चिदात्मानं गते प्राण परब्रह्म रसात्मकम् । सर्व रूप चिदात्मा वा पु
 कर पधारी ब्रह्म विते अमर करके स्थित हो हो लता जाड अंजुरादिक वृद्धे को चाहे तेने इन के अंतर स्थित चिदात्मा प्राण परब्रह्म रसात्मक है ६४ यस्मिन् सर्व
 यतः सर्वं यत् सर्वं सत्प्रपन्न ६५ यो मत्तः सर्व एकात्मा परब्रह्म तिनियमः । जिस विते सब दे जिस तेने सर्व प्रकार दृष्टा जो सर्व रूप है जो सर्व व्यापक है जो सर्व रूप ए
 क आत्मा है सो परब्रह्म है एत ज्ञानिओं का नियम है ६५ चिदात्मा ब्रह्म सत्तामत्त तस्मिन्नामभिः प्रोच्यते सर्वगतं चिन्मात्रं चैव निर्जितम् ६६ चित आत्मा ब्र
 ह्म सत्ते सत्य अत प्रिय धर्म वचन ज सर्वज्ञ इत्यादिनामो करके सर्व व्यापक तत्ते दृश्यरहित वेदपुराणादिको ने कही तो हे ६६ आभास मात्र मले सर्व भूत
 ता बोधक ६७ सर्व ज्ञावस्थिते शांते चिदहं तनु भूयते । प्रकाशमात्र निर्मल सर्व प्राणिओं का जो हे आत्मजीव तिस का बोधक तो है सर्व स्थित शांते चित ब्रह्म पे
 सा अनुभव करी तो है ज्ञानवानेने ६७ मद्रोच ही द्विद्य ज्ञात समस्त कलना नितम् ६८ भेद एता स्वभास चिदुत्पादमनामयम् । मन बुद्धि इदिय ससृद इन कि
 आ जो सर्व वृत्तिओं तिनो विते अजगत्तं भेदको त्याग कर आत्मचेतन प्रकाश चित ब्रह्म निर्दुःख हो हो शांती ही नाम शेषाणां कारणतां जगत्स्थिते ६९ तत्त्वा व
 काशक स्वच्छ चिदहं मि न मेतयः । शब्द रसादिक इनके कारण आकाशादिक इनकी किं जगत्की स्थिति है इना सब नाका सजा प्रकाश स्वरूप निर्मल है

अतः

सज्ञा-

नी

निकल
भाषा
२२

मा

ग्रानंद-

काहेतेसुखाविधि

चैतन्यब्रह्महोहा हैग विनाशानही ६५॥ अनारतगलत्वह विद्यागहनानामकम् ७॥ आलोकः समनेपोनचिद्व ह्या स्पर्शम तपरम् १॥ अग्निकलाध
राजैसेनिरंतरनिकलतिआजोअंतःकरणद्विचपउपाधिधाराविवेअदचितधारां निनाकीवाएरूपमुहातस्वरूपप्रकाश अदचितयोगिआ
कामोनहै अनुभवकरतेभीहै कहनेकोनही समर्थहोतेहै ऐसाचेतनब्रह्म परमअमृतहोहा ७०॥ अनारतगलदपनिसचाबुभवाभूतम् ७१॥ अहनिःश
षचक्राणिचिद्व ह्याहमलेपकम् ७२॥ अहकाररूपजोहैसबभोक्तचक्रसमूहहै तिनाकिआजोहैअनेकभोगद्विधासुत्रपउपाधिआकरकेनिरंतरप्रकरूपक
दृष्टानित्यअनुभवानेदेकरसचितब्रह्महोहा ७३॥ सुषुप्तसदृशानामालोकविमलामकम् ७४॥ सभोगानममाभासचिद्व ह्यासुपवासनम् ७५॥ सुषुप्तग्रानंदके
तल्प शांत प्रकाश अज्ञानमलरहितस्वरूप मानुषग्रानंदया दिलेकरशांतगुण अधिक अधिकजोहैहिरण्यगर्भकेविषयसुखपर्यंतजोहैग्रानंद तिनासेभी
उत्तम सर्वतः प्रकाशमान निर्वसन चित ब्रह्मानेहोहा ७६॥ खण्डादिसाडुसंवित्रिरीषमात्रातगिषति चित्रादिष्ववबुद्धेसुतद्विब्रह्माहमचुतः ७७॥ रसनाक
रके खंडमिसरी पाकर गुडदा स्वादका स्फुरण रसनातेकेंउपर्यंतअल्पदेश लणमात्ररहाहै ग्रानंदस्फुरणकेभेदकारणजोहै चित्र चितनयोग्य चितनक
नो परग्रानंदपरकरसहपरकरकेजाएहोए भेदापाधिहोएभी अविनाशीपरमानंदसोब्रह्महोहा ७८॥ कातासंस्कृतिगम्यचन्देसमुदितेसति ७९॥ चन्द्रप्र
त्ययसत्तामचिद्व ह्याहमनामयम् ८०॥ कातास्वीविवेआसक्तहैचित्तजिसका पेसाजोप्ररूपहैचंद्रकेउदयहोए चंद्राकारप्रतीतिपर्यंत काताचंद्रकेमध्यआका
शदेशविवेअखंडसत्तारूप काताचंद्रस्वरूपविषयरहितचेतनब्रह्मनिर्दुःखसुखस्वरूपहोहा ८१॥ भूमिपुनरदृष्टीनोलनाखनिपाकरे यावस्थाननु
चिद्व ह्याहमनिर्मलम् ८२॥ पृथिवीविवेस्थितजोहै नर तिनीकआदृष्टिआ आकाशस्थितचंद्रविवेलेगतिआहै भूमिचंद्रकेमध्यआकाशविवेस्थि
तजोहै चित्राक्षि सोचित ब्रह्म विषयमलरहितहोहा ८३॥ सुखदुःखादिकलनाविकलो निर्मलस्तथा ८४॥ सामानुभवशानविद्व ह्यामासिशास्त्रः ८५॥ उदासी
नावस्थाविवे सुखदुःखादिरहित निर्मलसत्तमनुभवरूपचित्तब्रह्मात्मानितहोहा ८६॥ असस्तुताधगालाकेमनस्वरूपसंस्थिते याप्रतीतिरनागस्तान निरपराधा
चिद्व ह्याहमसर्वगः ८७॥ उजरदेशविवेस्थितजोहैपुरुषतिसकामनहैरदति एदेशविवेस्थितजोहैरामनाथतिसविवेस्थितहोए केसाहेमन मा
मिकेपदार्थीका चितनकरकेस्फुरणरूपप्रकाशानही किआपेसेमनहोए रामनाथपर्यंत जेमध्यविवेदेशहै तिनाविवे विषयसंगरूपअपराध
रहितजोप्रतीतिचिन्मात्ररूपहै सोचितब्रह्मसर्वव्यापकरूपमेंहो ८८॥ भवार्यऽनिलवीजानोसंवन्धदुःखकर्मसु शक्तिरुजमनीयानुचिद्व ह्याहमा
ततम् ८९॥ भूमिजल पवन वीज इनोकामेलहोए अजरलक्षणकार्यविवेजोहै चित्राक्षि जिसकरकेबाहरऊर्ध्वरुद्धिहोतीहै सोचितब्रह्मव्याप
कहोहा ९०॥ खजरविह्वनिस्त्वानास्वयमात्मनिष्ठताम् ९१॥ यास्वादसत्तालीनातसद्वत्तचिददेसमः ९२॥ खजरनिव विंव फल अपनेजदुसभावविवे
स्थितहै इनाफलकेजोहैनानारसतिनाके अतुलीनजोहैस्वादसत्तारसनं द्विपृथ्विकरकेप्रकरहोती स्फुरणरूप सोचित ब्रह्म समहोहा ९३॥ खेदानन्द
विमुक्तानःसंचित्तर्मनोदया ९४॥ लाभालाभविधौतल्पाचिद्व ह्याहमिगमयम् ९५॥ जोचेतनता इष्टताभहोएअद्वितीहोतीहै अनिष्टताभहोएखेदवतीहोती
है सोहीचेतनता वेदांतशास्त्रकेमननकेउदयकरकेशोधितकिईहोई खेदानन्दरहित सम चित निर्दुःखब्रह्महोहा ९६॥ यावद्व्यक्तमेतावह विस्वयदा
ततम् तन्मध्यसदृशानु निर्मलचिदहेततम् ९७॥ भूमिस्थपुरुषका भूमिमेंसर्वपर्यंतजोहैदृष्टिरूपस्वरूपविस्तीर्ण हृष्टिस्वरूपजोहैमध्यभाग नेत्रसर्वसाध
नहीलगाहै चैतन्य सोविषयप्रकाशनको समर्थभीहै विषयसंवंधरहितजोहै तैसासर्वप्रशांतविषयमलरहितचेतनहोहा ९८॥ जाग्रदपि सुषुप्तेपि
तत्त्वप्रतिपत्तिदितम् ९९॥ तर्पत्रपमनाधुनचिद्व ह्याहमनामयम् १००॥ जोजाग्रतस्वप्नसुषुप्तिविवेअसंगुदितहै जाग्रदादिक अवस्थारहित तर्पत्रपमाद्यंतरहि
तनिर्दुःखचित ब्रह्महोहा १०१॥ प्रसादेवप्रणामानामिस्त्वानास्वादुवस्थितम् सर्वलोककरुणतच्चिद्व ह्याहमिसमः स्थितः १०२॥ सउदेवसेउतनहोएजोगनेहै
तिनाविवेजैसेमधुररसस्थितहै तैसेसर्वनापुरुषादेअंतर एक रूपजोचेतनब्रह्महैसमः स्थितहोहा १०३॥ सर्वगाप्रकृतास्वहृत्प्राभावरिवप्रभा १०४॥
आलोककारिलीशानाचिद्व ह्याहमदततम् १०५॥ सर्वत्रयेष्ठ निर्मलरूपप्रभासु धकीजैसीप्रकाशकारिलीहै तैसीचित्तुभावाणकवृक्षपहप्रत्यक्षप्रकाशका
मिलीहोहा १०६॥ सभोगानन्दलववदस्तस्वादशक्तिवत् १०७॥ स्वावृक्षकेकमप्रियचिद्व ह्याहमिगदवायुम् १०८॥ सभोगानंदशजैसे अस्तुकी स्वादशक्तिजैसे अप
नेअनुभवमात्रकरकेजाएगीताहै तैसेचेतनब्रह्मअविनाशीअनुभवप्रमाणकरकेजानीताजोहैसोहोहा १०९॥ प्रानागमपिगुप्तासादेहेततविसेयथा ११०॥
केदभेदेस्फुररूपचिद्व ह्याहमनामयम् १११॥ भेदविवेसत्ततेतसवृण्णाविवेपरोपीभीप्रभेदेकेदभेदविवेस्फुररूपहैजैसे तैसेचित्रब्रह्मसवनाअंगवि
वैपरोयाभी प्रभेदेदेकेकेदभेदविवेस्फुररूपस्वरूपअकेद्यअभेद्यनिर्दुःखहोहा ११२॥ आकाशभ्रवनापभ्रमालेवस्यन्दशालिनी ११३॥ उल्लेखाणुमयाकारा

चिह्नकिरहमातता। जैसेमेवंपत्ति जलोंकोधारतीहै पवनकरचलतीहै दुर्लभसुखजलकलामयआकारधारिणीहै तैसीचित्रशक्तिहै जगत्की धारिणी अंतःकारणवृत्तिउपाधिकके कियाकरसुखहै दुर्लभसुखजीवमयहै कल्पितआकारजिसका ऐसीचित्रशक्तिआपिकोहोता ७५॥ अनुभूतिमयानाः स्थानोद्भासोपलब्धिता दीराहुतस्यसनेवचिदहंत्ववर्जिता ७६॥ अनुभवमात्रकरजाणीतीहै बुद्धिकेअंतरस्थितहै परमप्रमेकरकेललितहोती है जो चेननता अनुभवसोहोता जेसदुग्धके अंतरस्थित हुतसना स्त्रर चिकणार्ककरकेल लितहोतीहै ७७॥ कटकाङ्कदकेद्वारचनातदतन्मयी हैसौव संस्थिताहैचिदुद्भासिसर्वगतः ७८॥ सुवर्णविवेस्थितजोहैं कंकण अंगद केद्वारभुजाकेभूषण गिनकीरचना सुवर्णमयीभीहै सुवर्णसंभिन्नभीरचना तेभासतीहै अज्ञानियोंको तेसेदेहविवेस्थितचित्तबुद्धआत्मा सर्वव्यापकहोहा आत्मावित्ते आगे पितदेहादिक भिन्ननेसेभासतेहैं वासवभिन्ननहीं हंभी पदार्थवस्वभूलादेवहिरन्तुआसर्वदा ७९॥ सत्तासामान्यवेषणवचिसोहमलेपकः। पर्वतादिकजोहै पदार्थसमूह तिसकेअंतरवदरसदा सत्तामात्ररूपकरकेजो चेतनतास्थितहै निर्लेपसोहोता ८०॥ सर्वा सामग्रभूतीनामादर्थोद्योतकविमः ८१॥ अग्न्यामलालेधानांतद्विजलमहमदत। सर्वपदार्थोकेजो अनुभववदरिआ का स्वतः सिद्धदर्पणहै मनरेखारहितहै जो सर्वव्यापकचित्ततत्त्वसोहोता ८२॥ सर्वसंकल्पमलदसर्वतजः प्रकाशकम् ८३॥ सर्वापादेयसीमानचिदात्मा नमुपास्महे। सर्वसकल्लोकाफलदायकहै सर्वतजोकाप्रकाशकहै सर्वजोहै पाउनेयोग्यप्रोष्ठवस्तुहै तिनकीहदहै जिसोहो रश्मिप्रवस्तुपाउनेयोग्यन ही पेसाजो चित्रआत्माहै तिसकाअसी निरंतरध्यानकरतेहो ८४॥ सर्वव्यवविश्रान्तसमस्तावयवातिगम् ८५॥ अनारतकवद्रूपचिदात्मानमुपास्महे। सर्व अंगवित्ते विश्रामकरताहै सबनाअंगोंपेरहै निरंतरस्फुरतरूपजोहै चेतन्यआत्मातिसकाअसी निरंतरध्यानकरतेहो ८६॥ हरिपदेतदेकपेसात्मा सदातनो ८७॥ जाग्रतपिसुषुप्तिस्थ चिदात्मानमुपास्महे। हरिपदमीर रूपअनावित्ते सत्तारूपकरस्थितहै शरीरवित्ते चेष्टाकानिभित्तचेतन्यरूपहै जाग्रतअवस्थावित्तेभी सुषुप्तिप्रकेजेसिनिर्लिकाररूपकरकेस्थितहै जो चिदात्मातिसकोअसीउपासतेहो ८८॥ उस्मामोहिमेशी तेसुखमनैशित्तुरे ८९॥ हृस्वधानेसित्तचेष्टेचिदात्मानमुपास्महे। अग्निवित्ते उस्मता वरफवित्ते शीतलता अन्नवित्तेमधुरता पक्खनेवित्तेतीक्ष्णता अपुकारवित्ते शृणु मता चेद्रमावित्ते श्रोता इत्यादिक पदार्थोकेस्वभावसत्तारूपकरके जो स्फुरता चिदात्मातिसकोअसीउपासतेहो ९०॥ आलोकवहिरन्तःस्थस्थित चेष्टात्मवस्तुनि ९१॥ अहरमपिहरस्थ चिदात्मानमुपास्महे। सर्वकेअंतरवाहरस्थितचित्रप्रकाशअपनेरूपवित्तेस्थितहै आत्मस्वरूपकरकेनिकरभीहै अज्ञानकरकेहरस्थितहै ऐसेचिदात्माकीअसीउपासनाकरतेहो ९२॥ माधुर्यादिषुमाधुर्यतीक्ष्णदिषुचतीक्ष्णताम गतंपदार्थजोतेषुचिदात्मान मुपास्महे ९३॥ मधुरादिवस्त्ववित्तेमधुरतादिषुको तीक्ष्णादिपदार्थोवित्तेतीक्ष्णतादिषुको प्राप्नुहाजोचिदात्मातिसकोअसीधावतेहो ९४॥ जाग्रतानुसुषुप्तिप्रवृत्त्यातुर्यातिगेपदे ९५॥ समसदेवसद्युचिदात्मानमुपास्महे। जाग्रतस्वप्नसुषुप्तिप्रवृत्तिवित्ते अनावस्थाकासाक्षीतयापदवित्ते जिसपदवित्तेअवस्थाकाअज्ञाताभावहै सोसाक्षितारहिततुर्यातीतपदेहै तिसवित्ते सर्वत्रसदाही समजोचिदात्माहै तिसकोअसीधाउतेहो ९६॥ प्रशान्तसर्वसकलपतिगता पिलकोतकम् ९७॥ विगतप्रोषमरम्भचिदात्मानमुपास्महे। अमृतप्राप्तहोपसर्वसकलपतिगतासवित्ते अमृतनष्टहोअसर्वकामनाजिसवित्ते अमृतनष्टहोप सर्वप्रोषजिसवित्ते पेसाजोचिदात्माहै तिसकोअसीउपासतेहो ९८॥ निःकोतकनिराम्भनिरीहसर्वमेवच ९९॥ निरंशानिरंकारचिदात्मानमुपास्महे। भोगाकी उत्कवारदित्यत्तरहितचेष्टारहित सर्वरूप अशरहित अदेकाररहित चिदात्माकोउपासतेहो १००॥ सर्वस्यातःस्थितसर्वव्यापारैकरूपिणम् १०१॥ अपर्युत चिदारम्भचिदात्मानमुपागतः। सर्वनाकेअंतरस्थित सर्वरूपभीहै अपाररूपभीहै अनंतपतिविवेचैतन्योकेहोतेहै आरंभजिसने ऐसेचिदात्माको होप्रापतहोआहो १०२॥ त्रैलोक्यपदेहसुज्ञानातन्तुसन्नतमाततम् १०३॥ प्रचारसकोचकरचिदात्मानमुपागतः। त्रिलोकीवित्तेस्थितजोहै देहरूपकोतीतिनाचि त्वेऊचाविस्तीर्णतंतूपदे प्रचारसकोचजोहै जाग्रत्स्वप्नतिनकोकरताजोहै चिदात्मातिसकोप्रापतहोआहो १०४॥ लीनमनार्वाहिः स्वाप्नाङ्कोडीकपजग त्वगान् चित्रहृजालमिवचिदात्मानमुपागतः १०५॥ अंतरवाहरआपकरकेल्लापकिएजोहै जगत्स्वरूपपदीहै तिनकोअपनेअंतरकरके उपहै आश्चर्यरूपम हाजालजेसाजोहै चिदात्मातिसकोप्रापतहोआहो १०६॥ सर्वयुग्मेदमस्तेष्वनास्तेष्वचमनागपि १०७॥ सदसदुपमेकंतेचिदात्मानमुपागतः। जिसवित्तेसकजग तस्थितहै स्वल्पभीसंस्काररूपभीजगत्तजिसवित्तेनहीं सृष्टिसमयवित्तेसर्वकोसत्तादेनेकरके सत्तूपदे प्रलयवित्तेसर्वकोसत्तानहींदेताहै तिसीतअसत् रूपदे पेसाजोचिदात्माहै तिसकोहोप्राप्नुआ १०८॥ परमप्रत्ययर्णमासोदसर्वसंपदम् १०९॥ सर्वाकारविहारस्थचिदात्मानमुपागतः। चेतन्यपकरसहै अणवापरमविश्रामकोजोहै सर्वसंपदाकेसुखविहंकोस्थानसमुद्रहै सचनोआकारोविहारवित्तेस्थितजोहैचिदात्मातिसकोहोप्रापतहोआहो ११०॥

सुश्रुति

विधिप्रश्नानुसृतसमस्तारवसितसवश्चमदनातपकासुनदनाहानामसु ५
इदकावागोहचंदनसिक्तश्राभनिकावित्वेनिवासकरतेभण्केचिआनंदनभक्तिकहेसंर
हृकलपुलानिनीवित्वेसंदरहृदोकरवष्टिगहेअप्सरैकगीताकरस्यहृद ५८३

स्नेहाधारमयाः शक्रं जडवाताहतिभ्रमेः पुक्तं मुक्तं च चिदी पंचद्विरनरुपासहे १६॥ चैतन्य रूपदीपक कोदेहके अंतरादर असी उपासते हो ।
के सो है चैतन्य दीपक स्नेह जो परम प्रेमति स काया धार है जड देहादिका के प्राण पवन के अध्यास भ्रमा कर न ए न ही होत भ्रान्त दृष्टि कर प्राण भ्रमा कर
पुक्त है तत्त्व दृष्टि कर रहित है अन्वदीपक देह के बाहर हो ते हैं अंतर न ही जड वात जो है सजल वात तिन के चुग कर जो भ्रमण है तिनो कर युक्त है रहित
न ही १६॥ हृत्सरः पद्मिनी कन्द तनु मर्वा ऊ सुन्दर १७॥ जनुता जीव नो पाये विद्या तान मुपागतः । हृदय सर विविकु मलिनी कंद जे से युग्मे सव जो हस्त
पादादिक अंग हैं तिनो का हृदय धारण कर स्रुत तनु जे सो है सर्व जनों के जीवने का उपाय है ऐसी चिदात्मा को ही प्रापत भया १७॥ अतीत एव संभूत
मशाला दुःख स्थित १८॥ अहो यम मते सत्य विद्या तान मुपासहे ॥ हीरक सुद्रु से न ही उत पत रावा चंद्रमा से न ही प्रकट हो आ गरुडादिको से दहि मु न ही जा ता पेसा
जो सत्य अमृत विद्या तानि सको असी उपासते हो १८॥ शत्रु रूप रस स्पर्श गन्ध भासमागत १९॥ तेरे वर हित शान्ति चिदात्मा न मुपागतः । शत्रु रूप रस स्पर्श
गन्ध भाका दृष्टि अकार पुकट ता को प्रापत हो तो है आपराध स्पर्शादिका कर रहित है ऐसी चिदात्मा को ही प्रापत भया १९॥ आकाश को प्राविश सव लोक स्य अज्ञान
म १९॥ नक्षत्र न च काश विद्या तान मुपागतः । आकाश मध्य भाग जे मानि मल है अग्र नीचा प्रिकर सव लोक को प्रकट कर ता है वस्तुतः न रज न ह न सा काश है
ऐसे चिदात्मा को प्रापत भया २०॥ महा महिमा सहित रहित सव भूतिभिः कनार मण्य कर्तार चिदात्मा न मुपागतः २१॥ महा महिमा कर सहित है सव जो है अ
लिमादिके अर्थ कर रहित है सर्व कर्ता भी अकर्ता है ऐसी चिदात्मा को ही प्रापत भया २१॥ अखिल मिदम हृदये वस सर्व त्व ह मपि ना ह मये त रत्न ना ह म इति वि
दित वत जगत् त मे स्थिर मय वास्तुगत ज्वरे भवामि २२॥ इति मोक्षोपाये जीवन्मुक्त निश्चय योगोपदेशो नामैकादशः सर्गः १॥ तादात्म्य अध्यासे पदेष्टिक
र सव रूप होत संसर्ग आरोप दृष्टि कर मेरा ही सव है अग्र बाह दृष्टि कर ता अहं भाव के आरोप का निमित्त अहंकार भी न ही होत अहंकार से भिन्न जो है देहादि
क सो तो अतिशय कर न ही हो इस प्रकार आरोप अग्र बाह दृष्टि कर तत्त्व को जान ता भया जो है सक्त को जगत कृत्रिम माया मय हो अग्र वास्थि अग्रु विम
आत्मा ही हो दो प्रकार के भी हो ज्वर रहित हो २२॥ निर्वाण भाषाये जीवन्मुक्त निश्चय पक्षाः सर्गः २॥ श्रीवसिष्ठ उवाच इति निश्चय वन सोम
हा नो विगते न सः सत्पाः सत्ये पदेशा न्ने स मे सख मवस्थिताः १ श्रीवसिष्ठ उवाच हे राम ऐसे निश्चय धारी सौजन्य कादिक जीवन्मुक्त महात्मा पापरहि
त सत्य रूप है माया रहित समता सत्य पद विवेक रख कर स्थित है २ इति प्रणीधियो धीराः सम नीराग चेतसः न निन्दन्ति न निन्दन्ति जीवितं मरणं तथा
२ ऐसे पूर्ण बुद्धी धीर अंतर्वाह स मरागरहित चित्र जिन का सो जीवन को तथा मरण को न ही निन्दते न ही स्तुति करते हैं ३ इत्युक्त्वा तत्त्व मत्कार
नारायण भुजाश्व ऋजवः सखलित काराग्र राश्व मेखः ३ जे मे नारायण कि आभुजा अलक्ष्य अति सद्धम जो है निशाण तिस के लक्षण कर वेधने
के चमत्कार वास्ति आ हैं जैसे अति सद्धम लक्ष जो है आत्मा तिस का अखंडा कारवृत्ती का ज्ञान न रूप जो है वेधन चमत्कार तिस से सद्धम हैं । को धारते
सरलो है न म्रस्वभाव है हृदये सुमेरु पर्वत जे स्थिर है ३ रे मिरे वन खले छद्मी पेष्ठु न गरेष्ठु च देवोपवन माला सुस्वर्गेषु च सराश्व ४ जीवन्मुक्तो का
सम दृष्टि कर विहार एव निकर ते है वसिष्ठ मुनि जीवन्मुक्त वन खले छद्मी पेष्ठु न गरेष्ठु च देवोपवन माला सुस्वर्गेषु च सराश्व ४ जीवन्मुक्तो का
विवेक तथा स्वर्ग विवेक देवता जे से मते भय ५ भेषुः ऊ स म परा स दोला दोला चलासु विचित्र वन लेख स मेरु उः शिखारुच ५ प्रधा कर रण जो है विवि
त्र वन पंक्ति सापी देव उतने कर के चंचल जो है तिनो विवेक मते भय ५ ते से सुमेरु के अङ्ग कि आ जो शिखारुच भाग है तिनो विवेक मते भय ५ चक्र विजित श
रणि चामर लव वज्र च विचित्राणी निराज्या निचित्राचार मयानि च ६ ऐसे राज कर मते भय के से जीते है शत्रु जिनो विवेक चामर लव वज्र च विचित्र धर्म अर्थ
काम जिनो विवेक विचित्र है आचार प्रधान तिनो विवेक ६ अनुज मति मास्व वाना वा विवेकितान् अति सरस दितार भाषितिक रं वनामिति ७ पद पाशो
विविध सिद्ध जो है जाना आचार तिनो कर के साथ जो है वैदिक अष्ट पुरुषो नेध मतिना के अचुसार चलते भय ७ वेद धर्म शास्त्र नेक है निश्चय कर के प्रय
त्न जिस को ऐसी जो कर्तव्य ना है तिस को कर ते है साग कर्म कर ते है ८ इष्टी मणी धेनु लला हा मपहारिषु विहारा हार मेषु भाग भोगे सुभूषिताः ८
चितारोगा दिरहित शरीर धन पुत्रादि पुण्य संपदां कर सुंदर चतुर स्त्रियां के हसने कर मनोहर मंदिरं कर आहार कर सुंदर ऐसे जो है भोगों के समू
ह तिनो कर शो धित हो ते हैं ८ सचराचर भूतेषु विद्यानाः खिल जनुषु यत्न क्रिया कला पेषु गार्हस्थ्य ध्यया क्रमम् ९ चर अचर प्राणि आसदित जो
सव भवन है तिनो विवेक रखी हो ते है सव जीव जिनो कर ऐसे जो है अग्रि हो शदिक यत्न क्रिया के समूह तिनो विवेक हो ९ जो है गृहस्था के धर्म अति धि
ष्ट जा न पादिक नियम निमित्त कष्ट दण्ड धर्म तिनो विवेक यथा क्रम वत ते भय ९ तेरु हत गजेन्द्रास भान्न भूरि शिवा सच भेरी भोकार भी नास स आगाल वी

विषु ११ युद्धसमुद्रपंक्तिआं के पारतरे भए कैसी आंहे युद्धसमुद्रपंक्तिआं नष्ट हो पड़े गजराज जिनां विखें भ्रमते भइयां बज्रत गिदां जिनां वि
 खें भेरिआं दे भोकार शाला कर भयंकर होति आं भइयां ११ तस्युः पुरुष चित्रासुद विविगो दतासुच संरम्भ हो भरो दास सदा सद्धरीति ११ सखडुः
 खरग देषादिक जो हैं सव हं दरीति आं विपत आदिक तिनां विखें स्थित हो ते भए कैसी आंहे हं दरीति आं कुरकै शके सदन को समर्थ हो ते हो चित्रा जिनां
 विखें क्रोध वेग के तो भकर होति आं भइयां १२ मन से वात नीरागम नुपाधिगत भ्रम अ संज्ञा सुक्त माया न परसत्त पदगत १३ ये से अने का व्यवहार
 विखें वर्तते भए जो जीवन्मुक्त तिनका मन रागरहित उपाधिरहित भ्रमरहित अ संग मुक्त परम शांत रजतम के ले परहित परम सत्त्व पदको प्राप्ति होता भया
 १३ नममज्जुः कचिदपि संकटेषु महत्त्वपि मुददपु पुयाते पुष्पि मशोलाः सरस्विव १४ महा संकट प्राप्ता एभी कि से देषा काल विखें भी शोक समुद्र विखें न
 ही डूबते भए महा ऐश्वर्य को प्रापत हो एभी दष विखें न ही डूबते भए जे से ऊला पर्वत हिमाचलादिक सरा विखें न ही डूबते हैं १५ नालता सविला सिन्या प्रि
 या पेशम कानुया परिले नु लक्ष्म व जल राशी रह दह १५ हेरवु कुलो के उदार करणो हार जीवन्मुक्त पुरुष विला सिनी परम सुंदर स्त्री दर्शन कर के अरु
 लक्ष्मी कर के हर्ष को नही प्रापत होतो है जे से समुद्र परिरण चन्द्रा भा कर के उच्छल तो है ते से जीवन्मुक्त न ही उच्छल तो है १५ नमस्तोडुः खशोक न
 ग्रीष्मो वनस्थलम् जहर्षच न भोगो ह्येव शोये रितो धधी १६ जे से ग्रीष्म त कर वनस्थल मलिन होतो है ते से जीवन्मुक्त डख शोक कर न ही मलिन
 होता भया जे से रात्रि के जो सविहं कर जो धधित ही हर्ष को प्राप्ति होतो है ते से जीवन्मुक्त वज्र ते भोग समुद्रा क न ही हर्ष को प्राप्ति होतो है १६ ते हिके वलम
 व्यथाः कुर्वन्तः काममज्जरीः इष्टानिष्फलं रामनाभिलषन्त तपुजः १७ जे जीवन्मुक्त सावधान कर्त ताभिमान रहित केवल भोग रूप मंज दिआ का
 अत्र भव कर ते दोष इष्ट फल को न ही चाहते भए अनिष्ट फल को न ही मागते भए १७ नोदयः कार्य संपत्ता वाक्राज्ञाना समा ययुः जहर्षन सख प्राप्ति मसु
 ने वच सकटे १८ शत्रु जयादिकार्थ सिद्धि हो ते महिमा को न ही प्रापत होते भए शत्रु ने जि ते दोष ही नता को न ही प्रापत होत सुख प्राप्ति होत हर्ष को न ही प्रापत हो
 संकट विखें मलिन न ही हो ए जीवन्मुक्त १८ समुद्र ने विमोहेषु नमसज्जु विपत्तये न जहर्षः शुभेः शोके रुदुर्न भवानिव १९ मोद के कारण प्राप्ति होत जीवन्मु
 क्त मोहित न ही होते भए विपदा के प्रापत होत शोक विखें मगन न ही होते भए अ भो कर के हर्ष को प्रापत न ही होत शोका कर जे से तमरो ते भए ते से जीवन्मुक्त
 न ही सेते भए १९ प्राकृताचार संप्राप्ति जे नः कर्म केवलम् स्थिता विगत संरम्भ म परा इव मेरुः २० अपने अपने वर्ण योग्य जो आचार हेतु स कर प्राप्ति हो
 या कार्यति स विखें कुंवल निरभिमान हो ए कर्म कर तो स्थित की धादि वे गरहित निष्पल दुसरे समुद्र के ते से हैं २० तात्वे दृष्टि म वृष्टि म वृष्टि वाच विनाशि
 नीम अनहं क मरुकारो विद्वस्वथा क्रम २१ हेराव पाप के नाश करण वाली कही जो जीवन्मुक्त की ज्ञान दृष्टि ति सको तम दृष्टि धार कर अहं का
 रहित शुद्ध चिन्मा उ विखें आत्म बुद्धि कर शास्त्र क्रम कर संसार विखें विहार कर २१ यथा भूताभिमाने वप पर परा मेरु स्थितो विगम्यीः सममा
 स्वगत भ्रमः २२ जे सी स्थिते संसर्ग पर पर ते सी इस को साक्षी हो कर देवता हो या समुद्र जे सा स्थिर समुद्र जे सा गभीर भ्रमरहित समता शुद्ध हो २२ चिन्मा
 अ सर्व मे वेदमित्य माभासता गतम् नेह सत्यमसत्यं वा क्व विदलिन किंचन २३ सब ही एह जग तस्या वरं जं गम प्रका र कर जो भासता है सो सैतन्य मात्र ही है
 इस जग त विखें किसी देश काल विखें सत्य अथवा असत्य न ही है तिसने ना ग रूप कुछ भी वस्तु न ही २३ महता मल माल व्यसक्तैः समवेह लया असक्त व
 दिः सर्व भव भव भव तपी २४ एतना मृदु पद्मादर दृष्टि कर माग कर आत्मा की पूर्ण आधार कर दुःख मंगल स्तत्र पर राम सर्व अ संग बुद्धि हो जन्मादि
 को का तय का री हो २४ किं रोदिषि नोद्वेगं मूढ वच्चा नुशो वसि भ्रमस्य द्वात्रिंशत्सोम्यावर्तं तं यथा २५ हेराव तम वडे वेग कर किं उरें दे हो मू
 हो जे से किं उपा क कर ते हो देशी तल सभाव जे से अल के भ्रमण विखें ए भ्रम ता है ते से वज्र त भ्रात चित्रा किं उ भ्रम ते हो २५ श्री राम उवाच अहं व भ
 गवन् न स म्या ज्ञात मल तयः तस्य सा दा त्र बुद्धि सस्य सणा दिवा मु नम् २६ श्री राम उवाच हे भगवन् निश्चय कर के भली प्रकार अ विद्या मल का तय दु
 वा तम हारे प्रसाद मात्र कर यत्न विना ही प्रयोध मुक्त हो हो एह आशय हो या जे से सूर्य प्रकाश के सग से क मल प्रफुल्लित हो तो है २६ आनि रत्न गता नून मि
 दिका शर दी व मे संशान्ता रितल संदेहः करिष्ये वचनं तव २७ जे से आश्विन कार्तिक विखें मेवां का किया दिशा का अथवा रहर हो तो है ते से मेरी आंति निश्चय
 कर ल हो ई है सर्व संदेह शांत हो पड़े तमारा वचन करोगा २७ वापगत मंद मोहो मान मा सूर्य मुक्त स्थिर तर सुदिता माणा न शोक स्थिरा पुनरसुख मग
 छन्सु छये का त बुद्धा य दिह वद सि साधो तत् करिष्ये विशङ्कम् २८ मोहो यो ये निर्वीरा प्रकारो जीवन्मुक्त संशय निराकरण नाम दशः सर्गः २९ हे साधो गुरो के
 मध मोह से रहित ज्ञा मान मत्सर से छुटा अ निचिर सदा मेरा आत्मा प्रकर ज्ञा चिर संशोक शांत ज्ञा एक आत्मा विखें निश्चय जिस का पे सी निर्मल बुद्धि

निर्गण
भाषा
२५

करदेहान्मभ्रमकुण्डः खको **बड्ड** को नही प्रापत होओं ग जो तमज्ञान के दहताका साधन अथवा राज्य परिणल नादिक कार्यक होगे सोहमशं
 कारहितसवकर्ते २८ इति निर्वाणभाषायां दशः सर्गः २९ श्रीराम उवाच सम्पत्तान विलासेन वासना विलयोदये जीवनमुक्तपदे ब्रह्मज्ञाने वि
 आश्रयानरु १ प्राणस्य निरोधेन वासना विलयोदये जीवनमुक्तपदे ब्रह्मज्ञाने विविश्राम्यते कथम् २ श्रीराम उवाच हे ब्रह्मन् यथा यज्ञान विलासकरवा
 सना के विनाशका उदय होतें जीवनमुक्तपद विवे हो विश्रामको प्राप्त हुआ निश्चयकर १ प्राणने गति निरोधकर वासना के विनाशका उदय होतें जीव
 न्मुक्तपद विवे किस प्रकार विश्राम करी जाये २ एक कहो २ श्रीवसिष्ठ उवाच संसारोत्तरले पुनर्योगशब्देन कथ्यते तं विविदि प्रकाशं चित्तोपरमधमि
 लीम् आत्मज्ञान प्रकारो स एकः प्रकटितो भुवि द्वितीयः प्राणसरोधः पृथग्योग्यमोचते ४ श्रीवसिष्ठ उवाच हे राम संसारसमुद्रतरणी युक्ति योगशब्द क
 रक ही तीही सो तरणी की युक्ति दो प्रकार तम जाण चित्त की शांतिकरण दे स्वभाव जित युक्तिका ३ इस योगका एक प्रकार आत्मज्ञान है सो एष्टि वि वि
 खें प्रसिद्ध है दूसरा प्रकार प्राणायाम है जो पद प्राणका रो कण दे सो दूसरे कहो जाये तम सुतो ४ श्रीराम उवाच सुलभ त्वा ददुःख ताक तरः पोभनोन
 योः येनावगत साधन भूयः क्षोभो न वाधते ५ ज्ञान प्राण निरोध उनां दोनां विवे को न अष्ट है जो सुख साध्य होवे दुःख नही होवे जिसके प्राप्ति मो उ कर
 बड्ड विवे पडुःख नही देवे ५ श्रीवसिष्ठ उवाच प्रकारे द्वावपि प्राप्ते योगशब्देन यद्यपि तथापि त्रिहिमायातः प्राणयुक्ता वे सो भूषाम् ६ योगशब्द कर दो प्र
 कार यद्यपि कहें एक ज्ञान दूसरा प्राण निरोध तथापि प्राण निरोध विवे पद योगशब्द बड्ड प्रसिद्ध है जगत् विवे ६ एको योग स्यात्तान संसारोत्तर
 राक्रमे समावृणोतीति वेव शोका वेक फल प्रदो ७ संसारसमुद्र तें उतरणे के कम विवे उपाय दो ही सम हैं एक योग दूसरा प्राण निरोध निष्कामे का
 परमपद प्राप्ति रूप एक ही फल दे तो दो ही हैं ७ असाध्यः कस्मिन्निद्योगः कस्मिन्निज्ञान निश्चयः मम त्वभिमतः साधो स साधो ज्ञान निश्चयः ८ प्राण
 निरोध के दुःख को जो नही सहता है वे सा जो को मल चित्तें प्रसवे है जिसको दह घाग साध्य है कवोर चित्त जो है विचार करे के अस्मर्थ जिसके
 ज्ञान निश्चय साध्य है अद्विचि जो है विचार विवे चतर जिसको ज्ञान निश्चय सुख साध्य है पद मे राम तें देह ८ अज्ञान प्रवृत्ताने स्वप्ने स्थिति न
 देवेत ज्ञान सत्ता स्वस्थानि तन्मव प्रवर्तते ९ अज्ञान साक्षी चैतन्य सदा ही है जाग्रत्स्वप्न सुषुप्ति विवे अज्ञान को अनुभव करता है अज्ञान अ
 न ज्ञाना स्वप्न विवे भी नही होता है ज्ञान स्वरूप साक्षी आप ही प्रकट है नित्य ९ धारणा सने शांति साध्य होन समाध्य ताम नायाति योगे ह्यथ वा
 विकल्पो नैव शोभना १० योगे दुःख कर साध्य है चित्त के धारणा का देश बाहर पर्वत शिखर चंद्र तारादिक अंतर को देश हृदय के वताल मूल
 ध्रुवों का मध्य इत्यादिक आसन का देश सम पवित्र रोड रेत अग्नि रहित शहर रित जलाशय रदि मन नेत्र का प्रसन्न करणे वाला ऐस स्थान
 विवे योग सिद्ध होता है शुभ देश काल विनाशो ग विना योग नही सिद्ध होता है इसने कष्ट साध्य योग है अथवा सुख साध्य कष्ट साध्य पद विकल्प
 चित्तानुही शुभ दे थीर अधिकारीय होवा नुको सब सुख साध्य है १० दावे विकल्प साक्षी को ज्ञान योगे र हृद ह त्रोज्ञ भवते ज्ञान मनुः स्थिते य निर्म
 लम् ११ हे ब्रह्मन् राम दो ही साक्षी विवे युक्तिके साधन कहें ११ एक ज्ञान दूसरा योग तेरे तां ज्ञान कथन कि या है के साक्षी ज्ञान जिसके अंतर जाणने
 जोग आत्मा है जिसकर निर्मल है ११ प्राणापान न्याय होह देह देह ग्राहयः अननसिद्धिदः साधो योगो यवुद्धिदः पृथग् १२ प्राणापान यवुद्धि समता सि
 द्धि रूप कर प्रसिद्ध देह देह रूप गुफा विवे स्थित है सिद्धि कामों को अनंत सिद्धि दाता है ज्ञान काश को आत्म साक्षात्कार ज्ञान दाता है ये सा योग है सो तम सुतो
 १२ सुखानि लक्ष्मण निरोध संभव स्थिति गोत पस्त चेत साक्षी ये समाहित स्थिति रिदयाग युक्ति पर पद प्रगति तगी निवस्यसि १३ मोक्षोपायेना
 न योग विचार स्त्रियाः सर्गः १३ हे राज उवाच उद्यम युक्त चित्त कर प्रव विवे जो चलते हैं प्राण तिना की गतिके रोक ले कर सिद्ध हो गी स्थिर स्थिति
 को प्राप्त होय तम ईद आत्म स्वरूप अक्षय परम पद विवे चित्त हति निरोध रूप जो है योग तिसके अभ्यास युक्तिते निर्विकल्प समाधि विवे स्थित होया
 वाली से नही कहि जाय ऐसा परमानंद स्वरूप होकर परम पद विवे निवास करेगा १३ इति निर्वाणभाषायां ज्ञान योग विचार योगोपदेश स्त्रियोद
 शः सर्गः १३ श्रीवसिष्ठ उवाच अस्ति तावद नाना स्मृतस्य क्वचिदयं किल जगत्पुःपरिष्यन्दे स गतस्मा मरा विव १ श्रीवसिष्ठ उवाच हे राम अनंतर पद
 मात्मा जो है जिसके किसी अंश विवे परब्रह्मोदाकार विव है जै से मरुदेश विवे मगर सा है १ त्रकारण ताया तो ब्रह्मात्म साक्षी समतः स्थितः पितामह त्वेन स्थले
 के भ्रमः २ निस ब्रह्मा विवे मनु प्रजापती के कारण भाव को प्राप्त हुआ आप विस्म के नाभिक मल से प्रकट हुआ ब्रह्मा लोक समुद्र रूप धर्म उभय कि आ है लोक
 के पितामह भाव कर के स्थित है २ तस्याहं मानसः पुत्रो वसिष्ठः प्रेष्ट चेष्टितः ब्रह्मच के भुवधने निवसामि युग प्रति ३ निस ब्रह्मा के मन से उभय त्रह्मा हो वसिष्ठ एवे

शुविद्यावत
अश-

हाथारी ध्रुवने धारिआ जो ता राचरु तिस विवे वैवस्वत मन्त्र पर्यंत निवास कर तां हो मन्त्र पर्यमाण १५ चतुर्ग ३ सोहं कदाचिदास्थाने
स्वर्ग तिष्ठे शत क्रतोः श्रुतवात्रा रादिभ्यः कथा सुविशी विना ४ सोहं एक समय विवे स्वर्ग विवे इंद्री सभा विवे स्थित होता भया स
भा विवे नारदा दिक सुनिग्राते अष्टजी विआ की कथा को हो सता ता भया ५ कथा प्रसंग कसि अिदय तत्रा भुवा चद शाता तपो नाम मुनि
मो नीमा नीमहा मतिः ५ तिस सभा विवे नारदा दिक के वचन उपरंत कि सी कथा प्रसंग विवे शाता तपो नाम मुनि वचन के होता भया के सोहे मुनि
स्वल्प भावी प्रमाण विवे चतुर मान ने योग्य महा बुद्धिमान ५ मेरो शिषान को एसा पद राग मये दिवि अस्तिकल्प तरु श्री मा अइ हत रति मुनिः ६
एक कदा ता भया मुनि सु मेरु के ईशान को ए विवे पद राग माली मय शिखर है तिस विवे चतना मा कल्प द्वाद प्रसिद्धे आ काश विवे ऊचा शा भ
तो है ६ तसा कला गे मे धि दिति एा कल्प को दे कल धो नला ता शने विद्यते विहग लयः ७ तिस कल्प द्वाद के मस्तक उपर दिति एा पा से डा ला दे तिस
के हो उर विवे पति आ का खर है के सोहे हो उर सुवर्ण रुपे कि आ कल्प लता कर के पगे यो है ७ तसि विव सति श्री मान भु एा ना मया य सः वीतरागे
वह लो शत्रु विनिज पक जे ८ तिस पति आ के वर विवे शो भावानु भु अड नाम का क निवास करता है रागरहित जे से वृत्ता वडा हे मध्य भाग जि
स का ऐ स अ पने कमल विवे निवास करता है ८ सयथा जगत को शो जी वती दख गश्चि ९ चिरे जी वी तपा स्वर्गे न भू तो न भविष्यति ९ सो भु अड प
दी जगत के मध्य विवे चिर काल जीवता है जे से ते से स्वर्ग विवे चिरे जी वी व हो ता भयान हो वेग ५ मदी हायुः सती रागः सती मा न सम हा मतिः १
स विद्या नू मतिः शान्तः सकान्तः काल का विदः १ सो भु अड चिरे जी वी हो सो रागरहित हो सो शो भावानु हो सो मदी बुद्धि हो सो आ ता विवे विद्या त बुद्धि हो ३
सी शेशा त हो सो सुंदर हो सो काल गती का जाता हो १ सयथा जीवति एा लय दय दिनी यते तद्वे जीवति एा लय दी बुद्धि हो दय मेव च ॥ सो पदी जे से जी वता है ते से
जब जीव ए ते सा चिरे जीवना साधन एा विवे पुण्य हो वे फल दशा विवे परम पुण्य के उदय युक्त हो वे ॥ इति तेन भु अड सो भुयः एा न वरति तः यथा वद
वदेता नो सभा या सत मुक्त वान १५ फिरी भीरु मने स का शा ता त प मु नि तिस ने प्रथम जे से कथन किया है ते से ही ए व सभा विवे यथा व र कि सी
भु अड का वर्तान कि आ है स ता ही कदा ता भया स्त तिमा वन दी कि ई १२ कथा व स स शाना व य या त स रत्र जे भु अड विहग ड ए म दया तः जग ह ला त
१३ कथा प्रसंग के निहति उपरंत दे वा का समूह चले गया हो को त कते भु अड पदी के दे खने निमि न ग या हो १४ भु अडः सी स्या तो यत्र मेरो अइ न
हुन मम स प्रा प्रवान्ते तो ना दे य राग मय वदत १३ तिस समे रु के शिखर विवे स्थिते हे भु अड सो ३ तम ति स्ती एा पद राग माली मय शिखर है तिस के दो ल
ला मात्र कर श म ऊ आ १४ रत्न मेरि क का ने न ते ज सा व द्वि व र सा मधा स व र से ने व अ य ल क ज भोग म १५ रत्न करगे शिआ कर सं द र अ ग्निक ते ज के
तुल्य जा ते ज हे ति सक र दिश के समूह को लाल रंग करता है शिखर मदि रा आ सव के म द कर के जे से लाल रंग होता है १५ कल्पानो ज्वलनो ज्वाला पिपादि
मिव सचितम् इन्द्र नील शिखो धूम माला का रुणिता ग्वरम् १६ कल्पान के अग्नि ते उ पर निकुलि आ जो ज्वाला का पिंड सोही मा नो प वत ऊचा वडी शो भा का ला
इन्द्र नील माली आ की शिखो जे सी जो ऊर्ध्व प्रभा सो हे धूम जि स विवे प्रकाश कर लाल कि आ है अवर नि सने पे सा शिखर है १६ सर्वे वा मे व रागा एा रा शिम
जा विव स्थितम् सर्व संध्या भ्रजा ला नाचन मे क मिवा कम् १७ सव जो लाल रंगे हे अ य वा स वं प्रा णि आ कि आ जो द सी न की उ का है तिन का समू
ह जे सा शिखर से मेरु पर्वत विवे स्थित है सव जो संध्या समय के लाल मेव समूह है नि ना की वनी एा न जे सा शिखर है १७ उं का त्रि कुर्वतो मेरो वृत्त न
३८ जे व नि गतम् सु धन मा गत का ने बा डे व जा व रा न लम् १८ सु सु म्ना ना डी के थो ग कर के वृत्त अ को भेद कर निकलने को र का कर ता जो सु मेरु है ति
स के उदर ते निकुली जो है अग्नि शिखर विवे प्रा प्र हो ई व उ का त्रि के त ल्य च म क ती सो ही मा नो शिखर है १८ सु मेरु वन दे व वन का भल क क र्जु तम्
लीला या अटा त मि दु ले नी ते द स शिखो डु लिम् १९ सु मेरु वन दे वी ने ली ला कर च द मा के ले तो निमि न आ काश विवे प सारि आ हाय का शिखो जे से मि
लित अ य लि आ का समूह न वला दा र सक र गि दु वा मा नो प द शिखर है १९ ज्वाला निरिव माला भिरु एा मिः पद्यो यतम् एा गत मिव स स पद शो ले स्या
शिखर है के सो है अग्नि हो ज दि संधि आ डु रि ड य हे मु विवे जिन के अ ग क स व विवे भी डु ग्ध जे सा ज ल है २० ताराः सु सु मित का श म ऊ ली मि ते व
विभिः कच द मु न वि आ मिः परि वृ मु दि वो ज तम् २१ के सो है शिखर च म क ते जो हे रत्न के किरण सो ही हैं न र्वा के अ य भा ग जिन के ऐ सि आ जो वे अ ग
के अ य भा ग सो ही जो वे अ य लि आ ति नो कर तारा के स्पर्श कर तो निमि न आ काश को वा म ऊ आ जे सा ऊचा है २१ ग र्ज जी मूत मुर ज भू ता नां त म ए उ प म्

आरुभण-
अग्नि

निर्गमन=

मानो

26

हसकसमयुद्धाद्यधनसदुपेयकम् २२ गर्जनेहंमेवहीसृजनामेवजिसविते वनभूमिकानेप्रहकिआजोवक्तलदीआतिनकोन्य
तकामंडपदे हसनेजोप्रपायक्यहैनिनाकरयुक्तहै प्राचकरनेहंभमरसमूहजिसवितेपेसाशिवरहै २२ दन्तालदलावह्यापरिहासादेवसुतर दो
लालोलाफरोदन्दसुदारमदमनमय २३ हतपक्तिजैसीजोतालाप्रकीर्णहैविकसितनिसकरदासकीडातेमोनोपुरगोहै पीगावितेजूरतिआजो
अपराकाससूहसोजिसवितेहं वज्रतेहोतोहैमदग्रकामजिसविते २३ शिलाविश्रान्तविवुधमिथुनाशितकंदरु वराखराजिनंभुंगकायजोपवीतिव २४
तापसंपिङ्गलविवेपुदपुधरास्थितम् भ्रान्तिरनिर्झलातागुहगतामर २५ शिलावितेविश्रामेकाप्राप्रहोपजादेवस्त्रीपुरुषतिनोनेआश्रितकिआहैंकंदर
जिसविते सयकेपासरनाजोहैपिंगलनामातपसीतिसजैसाहै ओहजोहैआकाशसेमृगचर्मधारिआहैनिर्मल गंगाहीचोपवीतथाविआहै वेतुददुधारीस्थि
तहै गंगाप्रवाहकैधुनिडाहितलतामदितिवितेस्थितहैसेवताजिसवितेपेसाशिवरहै २५ गन्धर्वगीतसभगमाओदिमपुरानिलम् फलहैमाखुजोनेसे
मासरत्नविभूषितम् २६ योमः पारमिवप्रापिङ्गलमेरवशिरः गंधकाकेगीतकरसुदरहै सुगंधिमधुरहैपवनजिसविते फलजोहैसवर्णकमलसोहैशि
रकेभूषणजिसके ताएरत्नकरविशेषकरयोधितहै २६ आकाशकेपारमानोप्राप्रहोपदेवेसाऊचापीलासुमेरुकाशिवरहै सितरुतिपीतपादलोधुव
लेवनकुसुमराशिनवधैः दिविविदितामलचित्रलीलाचलममरसुवतिवर्गस्य २७ मोहोपायेभुण्डापात्वा नेमेरुशिवरवर्णननामचन्द्रैः सगः
२८ श्रीवसिष्ठउवाच ऊत्समापराकल्याभुजुनलेतस्यमूर्धनि कल्याणमदमद्रादोलावृज सफेद हरिआ पीला गोअवर्ण अतिसफेद जोहै
प्रघाससूहाकेसदानवेरंग त्रिभुक्तआकाशवितेलिवेहैनिर्मलचित्रजिसने पेसाजोहै देवताकेखिद्योकाकीडाधैवतपसुमेरुकाशिवरति
सकोंहोप्राप्रभयादेराम २९ इतिनिर्वाणभाषायाचतुदशः सगः २५ श्रीवसिष्ठउवाच ऊत्समापराकल्याभुजुनलेतस्यमूर्धनि कल्याणमदमद्रादो
प्राप्राचक्रमिवस्थितम् ३० उष्णकरचरिओरसर्पजोहैकल्यातकामेवसोहैलवायमानकेराजिसकेपेसाजोहैतिसशिवरकामस्तक तिसवितेहोंकल्या
वृत्तकोस्थितदेवताभया केसाहैकल्पवृत्त दहहैअंगजिसके चक्राकारसमहैप्राप्राजिसकिआ ३१ प्रघाससूहाकेसदानवेरंग त्रिभुक्तआकाशवितेलिवेहैनिर्मलचित्रजिसने पेसाजोहै देवताकेखिद्योकाकीडाधैवतपसुमेरुकाशिवरति
जिताकाशष्टके-ष्टके मिवारितम् ३२ कल्पवृत्तकेविशेषल वारसुमेरुकापयंतकदनेहैं केसाहैकल्पवृत्त प्रघासकीजोहैजसाहीमेवहैतिसव
रघाप्रदे रत्नोकेयुद्धहीऊचेदतहैजिसके ऊचिआईकधीतिआहैआकाशजिसने सुमेरुकेपुंगवितेपुंगजैसाविधातानेस्थापितकिआहै
३३ ताशदियणपुष्पोवमेवदियणयलवम् रश्मिदियणारणवभ्रतडिहियणमज्जरीम् ३४ आकाशकेतारेतेदूहोहैपुष्पाकेसमूहजिसविते मेवसांद
रोहैंपत्रजिसविते किरणसंहोहैं प्रघरेपुष्पीमेवजिसवितेविजलिआसेहणिआहैंमंजरीआजिसविते ३५ स्कन्धेप्रकिन्नरीगीतदियणभुमर
वनम् दालालोलाफरोलोकदियणीकृतपल्लवम् ३६ प्रात्वाकेसंधिआवितेस्थितजोहैंकिन्नरिआतिनाकेगीतसेदूणाहैभमराकाशद्वजिसविते
पीनोवितेजूरतिआजोअपरालोक्ततिनाकेजोहैजोहहाथपेहीपत्रतिनोतेदूहोकिपदेपत्रजिसविते ३७ सिद्धगन्धर्वसंघातदियणोस्यविहंगमम् रत्नका
न्यहनीहारतदियणजोरत्नाकीवतातिरुपत्वयासोहीमानोपुदरिआहैवत्तजिसने ३८ चन्द्रविम्बसमासूषदियणो ३९ वृक्षफलम् मूलसलीनक
न्याभुदियणीकृतपर्वकम् ४० ऊचयायी करचंद्रमंडलसाधजोहैसयोगतिसमेंमानोअमरसकरभरोपदियणोहैअंगजिनकेइसगेवडेहैफलजिसके
राख्याकेमूलवितेस्थितजोहैंकल्यातकेमेवतिनोनेदियणकिआहैंगंजिआजिसविते ४१ सारसवलितस्कन्धपत्रविश्रान्तकिन्नरम् निजुज्जुज्जुज्जु
कच्छसप्तशदिकम् ४२ देवताकरसयुक्तदेशाखसंधिआजिसकिआ पत्रवितेविश्रामकरतेहैकिन्नरजिसविते वडेकोरेकुंजवितेस्थितहैमेवजिसविते वृद्धतजलपुत्रस्थानवि
तेसनेहैदेवादिकजिसविते ४३ साकारविपुलभङ्गानुसार्यवलयस्वनेः अप्पाराभ्रमरीभिष्मदीतकुसमानाम् ४४ अपनेआकारकरकेवडाविलारवातोहै अप्पाराभ्रजोहैभ्रम
रिआनिनोनेकंकणकेणहाकरभ्रमरोकोडावकरलिआहैपुष्पाकारसजिसका ४५ सुरकिन्नरगन्धर्वविद्याधरवरान्तितम् जगज्जालमिचाननुदशाशाकाशपरकम् ४६ देव
किन्नरगन्धर्वविद्याधरवितेजोहैंओहतिनोकरयुक्तहै ब्रह्माडेनेसास्थितहै अनुरदिताजोहै द्वादिशाअरआकाशतिनाकेसरणकरणाहाराहै ४७ नीरन्यक्तलिकाजालेनी
रन्यमृदुपल्लवम् नीरन्यक्तलिकसमूहनीरन्यवेनमालितम् ४८ वनोहैकलिआदासमूहजिसविते वनेहैंकोमलपत्रजिसविते वनेफलेहैंपुष्पजिसविते वनीचनमालायुक्तहै ४९ नीर
न्यमज्जरीपुज्जनीरन्यमलिगुहकम् नीरन्यापुकरवाधुलताविलसनाकुलम् ५० वनमज्जरीपुक्तहै वनेमणिगुलोकरयुक्तहै वनेदिव्यवस्त्राकरयुक्तहै लतान्यकरयुक्तहै ५१
सर्वजसमापरेः सर्वत्रफलपञ्चवैः सर्वमार्जः पुञ्जः परवैविश्रामगतम् ५२ सर्वप्रुषसमूहाकर सर्वत्रफलनवदलाकर सर्वत्रसंगधिरजः समूहाकर परमविचित्रेणभक्तोप्राप्रह

वांसः

लाभां वि
क=

हे कल्पवृक्ष १२ तस्य कलेषु कुञ्जेषु न तापत्रेषु पूर्वसु प्रथमं बाल्यं संलीनान्ति ह्यगन्तुं न ह्य १३ निम्न कल्पवृक्ष के कुंजां विवेक्षां के पत्रां विवेक्षां गंढिमां विवेक्षां वि
वे किं हे आह लोडिनां विवेक्षां वे पक्षिमां को ही देवता भया १३ निशानाथ कला खण्ड मृणाला कलेधितान् अर्जुनाभोजिनी कन्दक वलान् मृगसासान् १४ ब्रह्मा के
वाहन हसा को ही देवता भया के से हे हस भेद के वड से जो हे वड कला के खडु तिने करुदिको प्राप्त भये हे मफेद जो हे कमलिनिमा के मल तिने को भी शसकर ने हे १५ विरिञ्चिरथ हे
साना पतिका सामगाधिनः डोंकार वेद स देसु अविद्या गुणा सना १५ उक्ता के रथ दस के बालक सामवेद गाउने हारे उक्ता के वेद के मित्र तिने के तस्य जागने हे सपुण निमुत्तुल
विद्या का अधुयन गुरुमुख से किमो हे जिने ने तिने को ही देवता भया १६ उक्तीर्य मनुनिचयान्वा हाकार निभस्तनान् अस्थिने क तडि सुज्जनील मेह समापसान् १६ अग्निके वारन जो तो
ने हे तिने को भी ही देवता भया भुवने प्रकर किमो हे मत्र समूह जिने ने स्वाहा के उच्चारण के धनि जे सी धुनि जिने की शास्त्र अने कवि जलिमा के समूह नील मेह जे से हे रंग जिने के १६
देव निर्गति तात्रितयन वेदिल तादमान् अकान्का शांत वाग्पागा मिश्र मिश्र सिद्धि लाशिलान् १७ के से हे शुक देव ने निम दिखी ने हे यत्न वेदिका विवेकिता अज्ञा हरिमां ऊ
शल तातिना के दलो जे से हे रंग हे जिने के १८ मयूर बाल का को भी देवता भया के से हे अमिकी शाखा जे सी चमक तीरे शाखा जिने की १९ गोरी रक्षित वे ही वल्लोपायान्तर
वर्हिण्य स्कन्दा पद्म कानिः शोषो व विज्ञान के चिह्न १८ गोरी ने रक्षित कि एहे परो के समूह जिने के ये से जा स्वामिका प्रिके वाहन थे मयूर तिने को ही देवता भया के से हे स्वा
मिका प्रिके ये ने के हे जे से मयूर शिवा सु जिने के जागने विवेचन हे १७ अमो वज्रा नृणां मदां तो मपक्षिणा म वन्धना वड निलया ज्यार हे भुस माहू तीव्र १६ आ
काश विवेदी उपपन्न हो ने हे आकाश विवेदी नष्ट हो ने हे मरण पथ पर धिची विवेचन ही उपपन्न हो ने हे ये से जे आकाश पत्नी हे तिने के वेध को देवता भया के से हे
वाध हे हर जिने ने कार्तिक से वड लय हे आकार से जिने के १५ विरिञ्चि देस जानुमान न्या न मिश्र को डवान को मार वहि जान न्या न्या न स्मरण जिने २० ब्रह्मा
के हे सोने उपपन्न हो ने हे होर अग्निके मुकाने उपपन्न हो पक्षान्तिके ये के मयूराने उपपन्न हो पक्षार होर आकाश पक्षिमा ने उपपन्न हो पक्षिमा को ही देवता भ
या १६ हित एडा अमर दाजान् स च दान् विदग्गमान् कलचिकु बको नृपान्ता किलान् क्रोन्वज्जु यान् २० हो चो जे चोले भर हा जप ही स्वर्ण शाखा वले हे मरुड
पत्नी चिडे वगुले १७ को किल को च ऊ ऊर इना पक्षिमा को ही देवता भया २१ भास चाध वला का ही न्वहन नां प्रगव २१ तो जे गती वा हे हवा सा उपक्षिणः २२
हेराचव निसकल्प वृक्ष विवे वासे पिपी हे बला का दिक पत्नी अरोर पक्षिमा को भी ही देवता भया जे से जगती विवेक्षाणि मांका समूह हे ते से निसकल्प वृक्ष विवे हे २२ दक्षि
तास्क न्यशाखा स्थिता या वेद ची यमि अया द ह वानुष पत्रा या मस्तूर स्थितः २३ काले को केल वलय मज्जरी जाल मालिन म लोको लोका चेल उपे कला श्री वमि वस्थित
मृ २४ हेरा मस के उपरंत दक्षिणा पास विवे स्थित जो हे स्कन्धा ला अति हर स्थित प्रपञ्च तानीति स विवे स्थित जे हे मेजरी समूह माला कार निसकर सयुक्त द्वाका का देम
डल को दक्षिणा ला दर्शन के उपरंत समुय विवे देवता भया ही के सो हे का के मंडल लोको लोका कपर्वन के वन विवे कलात के मव समूह जे सा स्थित हे २४ तत्र यथा यथा
दे को नै स्कन्ध को रे विचित्र कुसुमा सी र्ण विविधा मोद शालिनि २५ पुष्प कुयो धिता स्तरे प्रियुस्तव कुवासिताः अपरित्त भिता काराः सभायां वायसाः स्थिताः २६ विभेद्य मेवा वाते
न समेने वापसारिताः दक्षिण स्कन्ध के मध्य विवे जो हे सभा निस विवे निशुला कार का स्थित हे के से हे का क वातने मे हा सम भाग खंड खंड कर के मानो स्थापित किप हे
के सो हे स्कन्ध कामध भाग विचित्र पुष्पा का विच्छा उणा निस विवे नान प्रकार सगंधा करण भग हे पुष्प क का के स्त्रिया का स्वर्ग हे सख म्प ने हे के से हे का क प्रिय पुष्प
को कर सगंधि ने हे २५ २६ तेषां मध्ये स्थितः श्रीमान् भुशुण्डः प्रान्त ताकतिः २७ मध्ये च काच खण्डा ना सिद्ध नील उवेषितः परिपूर्ण मना मनीसमः सर्वाङ्ग सुन्दरः २८ प्राणस्य
न्या वधानेन नियमन युतः सखी चिंजी जीति विद्यात मिजी वितया तथा २९ तिना का का के मध्य विवे स्थित शोभावान् अति ऊचा आकार भुशुण्ड का के काच खण्ड के म
ध्य विवे ड नील मालि जे सा ऊचा भुशुण्डा हे परिपूर्ण हे मनुजिसका सर्व कामान्य हे सम हे सर्व अंग हे खेद रजिसके प्राण स्पंद के निशुलता कर नित्य युत भुशुण्डस
वी हे अति प्रसिद्ध चिरजीवने कर चिरजीवी ये सप्रसिद्ध हे २५

शुक =

शरव =

27